3.3.3.

QnM

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceedings per teacher during year

3.3.3.1. Total number of books and chapters in edited volumes/books published and papers in national/ international conference proceedings year wise during year

Year	2022-23
Number	23

Data Requirement during the year: (As per Data Template)

- · Name of the teacher: Title of the paper
- Title of the book published: Name of the author/s: Title of the proceedings of the conference
- · Name of the publisher: National/International
- National/international : ISBN/ISSN number of the proceedings
- Year of publication:

File Description: (Upload)

- Any additional information
- List books and chapters edited volumes/ books published (Data Template)

Number of books = 06

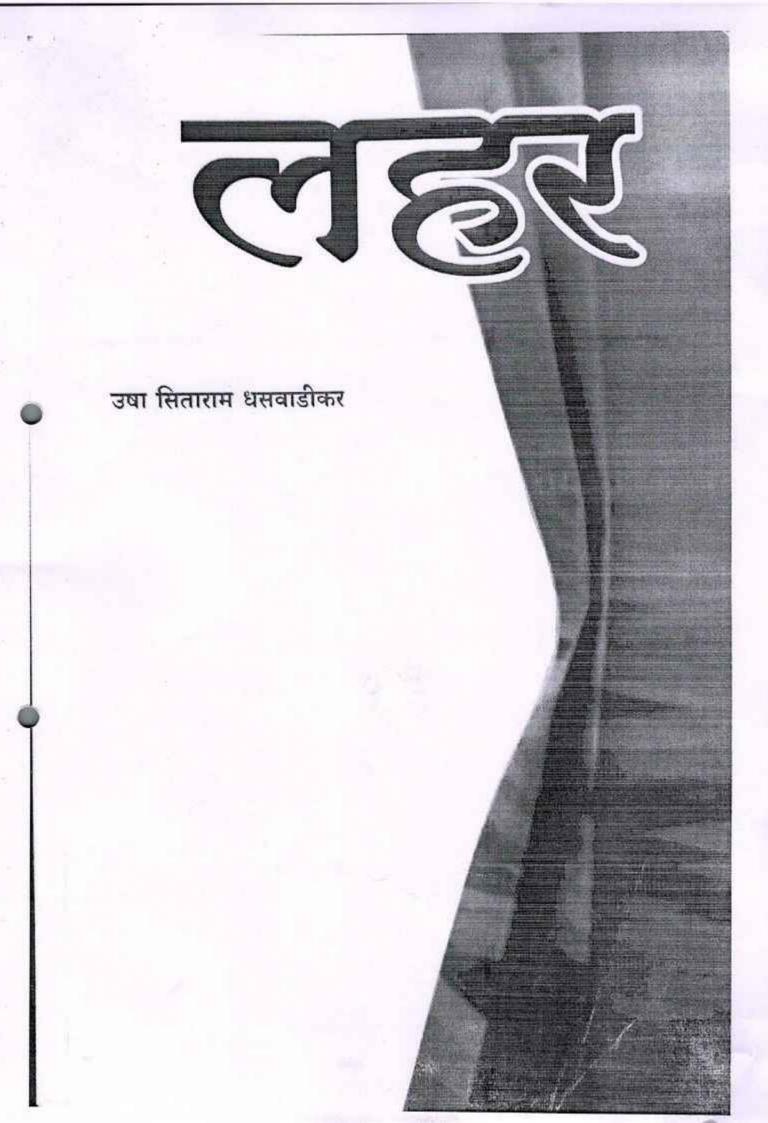
Number of Chapters = 17

Co - Ordinator, IQAC Shri Havagiswami Mahavidyalaya Udoir Dist.Latur Principal
Shri Havagiswami Mahavidyalaya
Udgir Dist.Latur

Sr. No.	Name of the teacher	Titl e of the pap er	Title of the book published	Nam e of the auth or/s	Title of the procee dings of the confere nce	Name of the publisher : National / Internati	ISBN/ ISSN numbe r of the procee dings	Year of publ icati on	Name of
1	Dr. U.S. Dhaswad ikar		Lahar			National	978-93- 92464- 07-2	2022	Prabhakar Publicatio n, Latur
2	Dr. M.E. Tangawar	-	आधुनिक मराठी वाडमयाचा वस्तुनिष्ठ इतिहास			National	978-93- 91712- 04-4	2023	अथर्व पहिलकेशन, धुळे
3	Dr. M.L. Bhandare		इक्कीसवीं सदी के विविध विमर्श वाणी प्रकाशन,दिल्ली	•	* .*	National	978-93- 00000- 00-0	2023	वाणी प्रकाशन,दि ल्ली
4	Dr. M.E. Tangawar		Tuzha Visar Na Vhava	•	*	National	NA	2023	Ad. Motipowle B.V., Latur
5	Dr. V.G. Gore	-	IPR and Research Ethics			Internatio nal	9798889 510222	2023	Notion Publisher s, Chennai
6.	Dr. Ulgade L.K.	-	राष्ट्रिय महापुरुष व विचारवन्तः कार्य अणि विचार	-	•	National	978-93- 92464- 27-0	2022	Prabhaka r Publicatio n, Latur

Co - Ordinator, IQAC Shri Havegiswami Mahavidyalaya Uogir Dist.Latur

Principal
Shri Havagiswami Mahavidyalaya
Udgir Dist.Latur



विनोदी वाङ्मय नाटक

े उत्तर मालिका

कादंबरी कविता

चरित्र

व्यक्तिचित्र आत्मचरित्र प्रवासवर्णन

निबंध लिलतगद्य कथा

आधुनिक मराठी वाङ्मयाचा वस्तुनिष्ठ इतिहास

इ.स. (१८१८ ते २०१८)

डॉ. म.ई. तंगावार

इक्कीसवीं सदी के विविध विमर्श

प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण अभिनन्दन ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ. मनोहर भंडारे

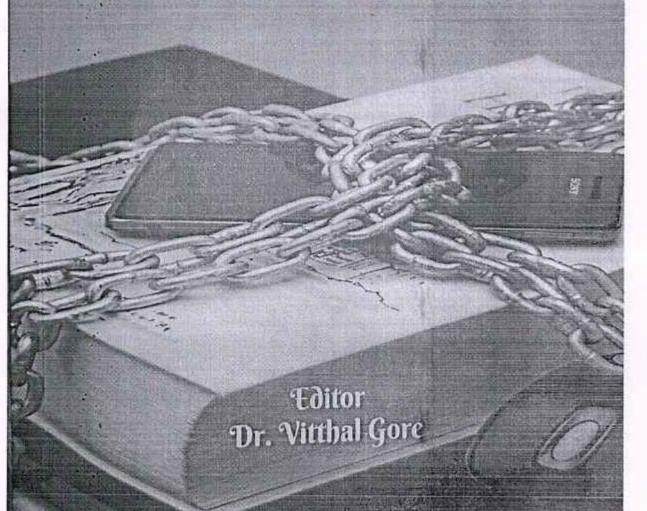


HE VIEW

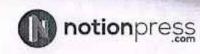
न द्वा

IPR and Research Ethics

A glimpse of law and ethics for academic and research writing







CERTIFICATE OF PUBLISHING

We're proud to present this certificate of publishing to

Dr. Vitthal Gore - Editor

for successfully publishing

IPR AND RESEARCH ETHICS

on. 16-01-2023

संपादित संदर्भ ग्रंथ : विशेषांक २२ डिसेंबर २०२२

राष्ट्रीय महापुरुष व विचारवंत : कार्य आणि विचार

(National Great Men and Thinkers : Work & thought)



: संपादक : प्रा. डॉ. उलगडे लक्ष्मण काशिनाथ

राष्ट्रीय महापुरुष व विचारवंत : कार्य आणि विचार संपादक (Editor): प्रा. डॉ. उलगडे लक्ष्मण काशिनाथ

ISBN 978-93-92464-27-0



प्रभाकर पांब्लकेशन ३०४, विग-सी, सिद्धीविनायक अपार्टमेंट, सुतमील रोड, लातूर मो. ८६००८८११२७, ८१४९१५३०१८

© सवं हक्क लेखकाधिन प्रथम आवृत्ती २२ डिसॅबर २०१२

मुद्रक आर्टी ऑफसेट, लातूर अक्षर जुळवणी रोहित टायपिंग सेंटर, लातूर मुखपृष्ट रेखाटन श्री विरभद्र गुळवे ₹ - ३००/-

भावना व पृथ्यकातील कोणत्यारी भागायं कुर्विभाग अवक वागर एकंड्युनिक अवक गामिको अध्यानो - कोटोकामिम, एक्योतिम किवा कोणाखाही प्रकार महिला सञ्च्यक्षेत्रमा तंत्रज्ञासातून लेखकाची लोखी परधाननीतिकाच करता वेगार मही सर्व हरू राखून ठेवले आहेत. या प्रधातील स्टब्ब्लच्या मध्यती इफारक, मृद्दक, हेवारक सहनत असरीलच असी नाही.

Sr. No	Name of the Teacher	Title of the paper	Title of the Book	Tit le of the pr oc ee di ng s of the co nfe re nc	Name the confer ence	National /Internatio nal	Mont h & Year of public ation	ISBN	Affiliat ing institut c of publica tion	Name of publish er
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	Dr. N.G. Yemekar	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में उपमा	हिंदी साहित्य में अलंकार योजना संपा. मुकेशचंद्र			National	2022	978- 93916 02-56- 7	SHM Udgir	साहित्य संचय.दि ल्ली page- 161- 165
2	Dr. R.A. Kamble	Patellaria F.Rspec. nov.newgen us os Ascomyceto us fungi.	Frontiers in Biologica 1 Sciences			National	2022	979- 88862 -96082	SHM Udgir	Xpress Publishi ng, An Imprint of Notion Press. page- 494-498-
3	Dr. U.S. Dhaswadi kar	Study of physic- chemical parameters of Banshelki Dam Udgir	Advances in Life sciences and Human Welfare			National	2022	978- 88900- 2090-1	SHM Udgir	Page- 146-153

8	Dr. M.E.	्संतचोखामे ळा यांच्या	मराठी साहित्य:	National	2023	978- 93-	SHM Udgir	अथर्वप्र काशन.धु
7	Dr. S.Y. Chimore	सर्व सामान्यांचा कैवारी: अण्णाभाऊ साठे	श्रमीकांचे कैवारी: अण्णाभा ऊसाठे	National	2022	978- 81- 95- 5514 46	SHM Udgir	कॉशल्य प्रकाशन, औरंगाबा द पृ.68-74
6	Dr. S.Y. Chimore	अण्णाभाऊसा ठेयांच्यासाहि त्यातीलम् ल्याविष्कार	अण्णाभा क साठेः एक परिवर्तन वादी विचार संपा. डाॅ.विड	National	2022	81- 8808 3+11- 6 - 2022	SHM Udgir	अक्षरया त्राप्रकाश न,पुणेपृ. 102- 113
5	Dr. S.Y. Chimore	रंजल्यागांज ल्यांचा वारसदारः अण्णाभाऊ साठे -	सत्यशोध क अण्णाभा ऊ साठे उपेक्षितां च्या अंतरंगा चा वेध संपा. डाॅ.लोंढे, अक्षिता पब्लिशर्स ॲन्ड डिस्ट्रीब्यु टर्स, दिल्ली-	National	2022	978- 93- 91120- 04-7	SHM Udgir	अक्षिताप बिलशर्स ॲन्डिड स्ट्रीब्युट सं,दिल्ली । ² age 152 -157

		तक्रांतिसूर्य महात्मा बसवेश्वरांचे योगदान	ज्योती महात्मा बसवेश्वर						,Nanded .page- 251-256
13	Dr. V.G. Gore	My Prayer To Lord Sharnbasav a: Saga of Life, Miracles, and Bliss	Musings on the Epic Sharnbas ava – The Scion of Mahadas oha	Three Day Interna tional Confer ence on Multid iscipli nary Resear ch, Sharnb asava Univer sity, Kalab urgi, Karnat aka. 22 to 24 Nov. 2022	Internation al	2022	978- 81- 95845 3-3-4	SHM Udgir	Prasaran ga. Sharnba sava Universi ty. Kalabur gi, 2022
14	Dr. V.G. Gore	The Flight of Women in India from Sita and Draupadi to the Modern Indian Women	Unravelli ng the Scope of Future Research in Humaniti es and Social Sciences	Unrav elling the Scope of Future Resear ch in Huma nities and Social Scienc es "ICUS FRHS	Internation al	2022	978- 81- 95827 2-4-4	SHM Udgir	Sandip Universi ty. Nasik. 2023

	Tangawar	अभंगातील	समाज			95710-		ळे
		विद्रोह	आणि संस्क्ृति संपा. प्राचार्य ,देगलुर महा. देगलुर			77-0		पृ.283- 287
9	Shri. V.G. Biradar	वैश्वीकरण और हिंदी भाषाका बदलता स्वरुप	वैश्वीकर ण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य संपा. डाॅ. नागराज	National	2022	978- 93- 91435- 43-1	SHM Udgir	संकल्पप्र काशन, कानपुर पृ.8891
10	Shri. V.G. Biradar	हिंदी कहानियों में वृद्ब विमर्श	21 वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य	National	2022	78-93- 91- 119- 77-5	SHM Udgir	वान्याप ब्लिकेश नकानपुर पृ.123- 126
11	Dr. M.B. Katkade	कोविड -19 महामारीचा भारतीय शिक्षणप्रणा ली वर परि णाम	Research Trends Multidisc iplinary Research	National	2022	78-93- 5570- 524-2	SHM Udgir	Akinik Pubblic ation ,New Delhi page- 83-92
12	Dr. L.K. Ulgade	जागतिक लोकप्रशासना	क्रांतीसूर्य जगद	National	2022	97881 95825 349	SHM Udgir	Siddhi Publihin g House

					S- 2022" Augus t 26, 2022					
15	Dr. V.G. Gore	Academic Research &Publicatio n Ethics	IPR & Research Ethics			Internation al	2023	97988 89510 222	SHM Udgir	Notion Publishe rs, Chennai, page-39-
16	J.D. Sampale	Basic Principles &Strategies to do a Plagiarism Free Research	IPR & Research			Internation al	2023	97988 89510 222	SHM Udgir	Notion Publishe rs, Chennai Page- 77-80
17	Dr. Ulgade L.K.	विश्वनायक महात्मा बश्वेश्वर यान्चे विविध विचार	राष्ट्रिय महापुरुष व विचारव न्तः कार्य अणि विचार	5	-	National	978- 93- 92464- 27-0	2022	SHM Udgir	Prabha kar Publica tion, Latur

Dr. N.G. Yempkal

हिंदी साहित्य में अलंकार-योजना

हॉ. मुकेश चंद <u></u>

हिंदी साहित्य में अलंकार-योजना Hindi Sahitya Me Alnkar-Yojana

By Dr. Mukesh chand © डॉ. मुकेश चंद

ISBN: 978-93-91602-56-7

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 फोन नं.: 09871418244, 09136175560 ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी

पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस राम निकुंज, पुतलीसड़क काठमांडी, नेपाल-44600 फोन नं.: 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2022 कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 300/- (भारत, नेपाल) मूल्य : \$ 7/- (अन्य देश)

मुद्रक : श्रीबालाजी ऑफसेट, ई-15, सेक्टर-ए 5/6ए ट्रोनिका सीटी, गाजियाबाद, उ.प्र.

प्राक्कथन/भूमिका

अलंकार काव्य के शोभाकारक धर्म है। इनके प्रयोग से काव्य के सौंदर्य में वृद्धि होती है। अलंकार के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्ष पर अतीत काल से विवेचन-विश्लेषण होता आया है। अलंकारों से संबंधित विवेचन तमाम काव्य-शास्त्र तथा साहित्य शास्त्र की पुस्तकों में प्रस्तुत हुआ है। विभिन्न कवियों के काव्य में तथा साहित्य शास्त्र की पुस्तकों में प्रस्तुत हुआ है। विभिन्न कवियों के काव्य में अलंकारों को खोजा जाता रहा है। काव्य में अलंकारगत प्रयोग का विवेचन अनेक अलंकारों को खोजा जाता रहा है। काव्य में अलंकारगत प्रयोग का विवेचन अनेक समीक्षा व आलोचना पुस्तकों में किया गया है। लेकिन अभी तक हिंदी साहित्य के समीक्षा व आलोचना पुस्तकों में किया गया है। लेकिन अभी तक हिंदी साहित्य के अंतर्गत किसी पुस्तक में केवल अलंकार को लेकर किसी पुस्तक में व्यावहारिक अंतर्गत किसी पुस्तक में केवल अलंकार को लेकर किसी पुस्तक का उद्देश्य इस वृद्धि से विवेचन-विश्लेषण देखने में नहीं आया है। इस पुस्तक का उद्देश्य इस वृद्धि से विवेचन-विश्लेषण देखने में नहीं आया है। इस पुस्तक वर्ग पर निर्भर अभाव की पूर्ति हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्भर अभाव की पूर्ति हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्भर अभाव की पूर्ति हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्भर अभाव की पूर्ति हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्भर अभाव की पूर्ति हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्भर अभाव की पूर्वि हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्मर अभाव की पूर्वि हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्मर अभाव की पूर्वि हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्मर अभाव की पूर्वि हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगिता पाठक वर्ग पर निर्मर अभाव की पूर्वि हेतु एक प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगित स्वर्व के स्वर्व के किस कि प्रयास है। बाकी इसकी उपयोगित स्वर्व के स्वर्

है।
प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न विद्वानों के शोध-पत्र व आलेखों को संगृहीत
प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न विद्वानों के शोध-पत्र व आलेखों को संगृहीत
किया गया है। ये आलेख संबंधित लेखकों के स्वयं के निजी शोध एवं विचारधारा
के आधार पर हो सकते हैं। इनसे संपादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक
की आधार पर हो सकते हैं। इनसे संपादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक
नहीं है। यदि इनके अंतर्गत किसी प्रकार की विवादास्पद विषय-वस्तु या विचार
होते हैं तो इसके लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। हमारा इस पुस्तक के संपादन
का उद्देश्य केवल हिंदी ज्ञान के क्षेत्र में सहयोग करना मात्र है।

ये आलेख संबंधित अनेक लेखकों के हैं, इसलिए इनकी भाषा-शैली में भिन्नता हो सकती है और उनमें कुछ वर्तनी की खामियाँ भी हो सकती हैं। वैसे भिन्नता हो सकती है और उनमें कुछ वर्तनी की खामियाँ भी हो सकती हैं। वैसे हमने इनकी वर्तनी की अशुद्धियों को ठीक करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है, वर्तनी की एकरूपता भी लाने की कोशिश की है और सबसे बड़ी बात, इन आलेखों को यथोचित संशोधित रूप में प्रस्तुत किया है। फिर भी यदि किसी प्रकार की कोई त्रुटि रह जाती है तो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

और अंत में हम पुस्तक के शोध-पत्र व आलेखों के लेखकों को धन्यवाद देते हैं, जिनके रचनात्मक सहयोग से यह पुस्तक निर्मित हो सकी है। इसके

12.	सूरदास के 'भ्रमरगीत' में अलंकार-योजना डॉ. सोहनलाल	102
13.		
	डॉ. कमल बाई	108
14.		
	. १९१४ में भाष्य ने जलकार-विधान	121
15.	डॉ. लव कुमार	
15.	भारत का कावता में अलकार-विधान	129
16.	कु. राखी	
10.	"न्याराज पूजा कर्त 'सिकत' को अलंकार गोन्य	136
17	ा. आजद्र प्रताप सिंह	150
17	राम दूरा कामायना में अलकार-योजना	144
10	डॉ. मुकेश चंद	199
18.	द्वारात । अवार्ग निर्धाली, के कार्य में जागा करं	161
10	ा गापप गा. एमकर	161
19.	भारत पूजा म अलकार-विधान	
90	जानल कुमार	166
20.	महादेवी वर्मा के काव्य में अलंकार-योजना	
91	ा. निमा उपाध्याय	174
21.	अज्ञेय काव्य में अलंकार-योजना	
00	डा. मनमीत कौर	180
22.	मुक्तिबोध की कविता में अलंकार-योजना	
00	गुपारी वह माजा	186
23.	राजेश जोशी की कविता में अपन	
	9. 411	192
24.	मानसिंह दहिया कर्न '	
	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट	199
25.	रमेश गौतम के दोहों में अन्योक्तियाँ	
	डॉ. विनोद कुमार रस्तोगी	206
To the second	पुनार रस्तोगी	

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में उपमा अलंकार

डॉ. नामदेव गो. एमेकर हिंदी विभाग, श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय, उदगीर (महाराष्ट्र)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख रचनाकार है। छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ है। उन्होंने छायावादी काव्य प्रवृत्तियों के साथ-साथ प्रगतिशीलता को अपने काव्य का विषय बनाया है। उनका साहित्य संसार बहुआयामी है—छायावादी भी है और प्रगतिवादी भी है। उनका साहित्य भावात्मक विविधता के साथ-साथ शिल्पगत विविधताओं से संपन्न है। उन्होंने मुक्तछंद के माध्यम से शिल्पगत स्वतंत्रता का सूत्रपात किया। उनका भाव पक्ष जितना विविधताओं से संपन्न है। उनका सास्त साहित्य उनकी शिल्पगत विविधताओं से और विशेषताओं से भरा है। अलंकार योजना निराला के साहित्य की एक मौलिक शिल्पगत विशेषता है।

निराला छायावादी किव होने के कारण उनके काव्य में कल्पना, प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति हुई है। इस अभिव्यक्ति के लिए और छायावादी विशेषताओं को अपनाते हुए उन्हें अनेक भव्य और छोटे चित्र अंकित करने पड़े हैं। कहीं वे अपने भाव विश्व के लिए लघु और विराट चित्रों को अंकित करते हैं। ऐसे समय अपने भाव विश्व के लिए लघु और विराट चित्रों को अंकित करते हैं। ऐसे समय में उन्हें अलंकारों का प्रयोग व्यापक स्तर पर करना पड़ा है। उन्होंने अनेक अलंकारों का प्रयोग अपने साहित्य को प्रभावी बनाने के लिए किया है। भावों को अलंकारों का प्रयोग अपने साहित्य को प्रभावी बनाने के लिए किया है। इसमें भी निराला प्रभावी बनाने में उनकी अलंकार योजना महत्त्वपूर्ण बन गई है। इसमें भी निराला

का अत्यधिक पड़ी है। उनकी अलंकार योजना में 'उपमा' अलंकार जारि अलंकार का अत्यान है। वस्तुतः निराला ने उपमा अलंकार का प्रयोग विविध्यता के विशिष्ट काविताओं में किया है। उपमा अलंकार का प्रयोग विविध्यता के लाय आसी मात्रा में देखने को मिलता है। उनके काव्य की उपमा अलंकार वोजना के निया में अलंकिक निम्मिलिखित रूप में देखा जा सकता है:

उपमा अलंकार निराला का ही नहीं अपितु सभी छायावादी कवियों का फ्रिय अलंकार रहा है। इस अलंकार के द्वारा भाव और रूपों की सजीव मूर्तियों आफ़ित करने में कवि सफल होता है। समान धर्म और रूप गुण की अभिव्यक्ति करने के जिए इस अलंकार का प्रयोग अत्यचिक होता है। कवि निराला ने भी इसीलिए उपमा अलंकार का अत्यचिक प्रयोग किया है। 'जूही की कली' कविता में भिताला के अलंकार योजना की ट्रस्टि से प्रमुख कविता है। इस कविता में कवि ने प्रत्के गब्द उपमाओं के चित्र लिए प्रस्तुत हुआ है। उनकी यह कविता हो उनकी अलंकार योजना की कारीगरी को समझने के लिए पर्यांप्त है। ऐसे अनेक चित्र उनकी अनेकों कविताओं में है।

ंजूही की कली' को नव युवती की उपमा देना केवल निराला और छायावादी कवियों के लिए ही संभव है। इस कविता के प्रत्येक पंक्ति, शब्द, भाव दित्र उपमानों से भरं है। पवन को प्रियतम की उपमा देना और उसके आगे की पूर्ण कियाओं को अलग-अलग भावों से प्रस्तुत करना और उसके लिए उपमाओं का उदाहरण देना अत्यंत प्रभावी वना है। पुष्प और पवन के एक दूसरे के स्पशं को इतनी सजीवता से सचित्र व्यक्त करना यह उनकी उपमा अलंकार योजना का ही सफल उदाहरण है। इसमे भाव, रंग, रूप, मानसिकता, आवेग, क्रियाएँ आदि सभी के लिए उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है-

"विजन- वन वल्लरी पर सोती थी सुहागमरी स्नेह-स्वप्न-मग्न- अमल-कोमल- तनु-तरुणी जूही की कली।"ः

उनकी यही एक कविता ही उनकी उपमा अलंकार योजना के एक शोध आलेख का विस्तृत विषय हो सकती है। इतनी यह कविता उपमानों से भरी पड़ी है। इसमें उपमा अलंकारों के अनेक दुश्य देख सकते हैं।

निराला जी की 'विद्यवा' नामक कविता भी इसी प्रकार से उपमा अलंकार का सुंदर उदाहरण है। एक विद्यवा स्त्री का दुरुखमरा, नियति, समाज द्वारा प्रताड़ित और असहाय स्त्री जीवन, मारतीय समाज व्यवस्था आदि-आदि के परिग्रेक्ष्य में वर्णन उनकी एक कविता में अनेक प्रकार से उपमा अलंकार को

"वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा-सी, वह दीप-शिखा-सी शांत भाव में लीन' वह कुरकाल-तांडव की स्मृति रेखा-सी वह दूटे तर की छुटी लता-सी दीन-दलित भारत की ही विघवा है।"

इस चार पंकियों में अनेक भाव-चित्रों को सचित्र चित्रित करने के लिए उपमा अलंकार की माला को प्रस्तुत किया गया है। यह अलंकार का सुंदर नियोजन सामान्य कवि के बस की वात नहीं है। माव के साय यहाँ शब्द और अर्थ दोनों के साथ अलंकारों का सुंदर नियोजन कवि निराला द्वारा हो मंभव है। इसी वात को द्वारिका प्रसाद सक्सेना कहते हैं—"विद्यवा कविता में से कवि की उन उपमाओं को ले सकते हैं, शिनके द्वारा कवि ने विद्यवा को पवित्रता, शुचिता, शांति, दुर्भाप्यशोलता, दीनता एवं दिलतावस्था का एक प्रभावशाली चित्रण किया है।" इससे स्पट्ट होता है कि उपमा अलंकार योजना में निराला ने अपना विशेष योगदान दिया है। यह अलंकार योजना उनके काव्य को प्रमावी बनाने में सफल इतना हो नहीं, निराला ने अपने समस्त साहित्य में उपमा अलंकार का अत्यिषिक प्रयोग किया है। उपमा अलंकार के सभी रूप उनके काव्य की शोभा षढ़ाते हैं। उन्होंने छायावादी काव्य, प्रगतिवादी काव्य के लिए उपमा अलंकार का समान प्रयोग किया है। निराला अपनी छायावादी कविता 'जूही की कली' में उपमा अलंकार का सशक्तता हे प्रयोग करते हैं, तो प्रगतिवादी 'विघवा' कविता में भी

हिंदी साहित्य में अलंकार-योजना : 163

उपमा अलंकार का अच्छा प्रभावी नियोजन करते हैं। दूसरी ओर प्राकृतिक कविताओं में भी वह उपमाओं को चित्रित करते हैं। 'संध्या सुंदरी' कविता में संध्या का वर्णन करते हुए उनकी उपमा अलंकार योजना का सुंदर चित्रण प्रस्तुत हुआ है। 'संध्या' को परी की उपमा देकर संध्या का प्रभावी चित्रण करना उनकी उपमा अलंकार योजना की ही सफलता कही जा सकती है। जैसे-

"दिवसावसान का समय मेघमय आसमान से उतर रही है वह संघ्या सुंदरी परी-सी घीरे घीरे घीरे। तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास, मधुर मधुर है दोनों उसके अधर, किंतु जरा गंभीर नहीं है उनमें हास-विलास। हँसता है तो केवल तारा एक गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से, हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।"

यहाँ 'संध्या' को 'सुंदरी' कहकर उसके एक-एक चित्र के लिए अलग-अलग उपमाएँ देना यह उपमा अलंकार का सशक्त उदाहरण है। इसमें भी भावों के साथ चित्रों की उपमा और उसके शब्दों का प्रभावी नियोजन निराला जी के शिल्प योजना की शक्ति को दर्शाता है। यह शक्ति किसी प्रतिभा संपन्न कवि के लिए ही संभव है। इन शब्द-चित्रों के सींदर्य को देखते हैं तो हम अंतर्मन से प्रभावित भी होते हैं और आश्चर्यचकित भी। यह निराला की अलंकार योजना अपने आप में श्रेष्ठ है।

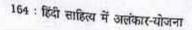
ऐसी एक नहीं अनेक प्रकृतिपरक कविताएँ हैं, जो उनके उपमा अलंकार के सुंदर चित्र अंकित करती हैं। निराला की उपमा योजना उनके काव्य की शक्ति है। 'तोड़ती पत्थर,' 'जागो फिर एक बार,' 'स्नेह निर्झर बह गया है', 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' आदि कविताओं में उपमा अलंकार के अनेक सुंदर चित्र अंकित किए हुए हैं। उनका समस्त काव्य इसी उपमा अलंकार योजना से भरा पड़ा हैं। इनके अंतर्गत उन्होंने भावों को प्रभावी चनाने के लिए शब्द, वर्ण का प्रभावी प्रयोग करते

हुए उपमा अलंकार के सुंदर चित्र अंकित किए हैं। वस्तुतः निराला ने अपने काव्य हुए में उपमा अलंकार ही नहीं, अपितु अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। संक्षेप में, अलंकार योजना की दृष्टि से निराला का काव्य प्रभावी और कलात्मकता का सशक्त प्रमाण है। उनकी अलंकार योजना उनके काव्य को प्रभावी बनाने में सहायक हुई है। उनका काव्य नियोजन जितना प्रभावी है, उससे कहीं अधिक प्रमावी उनका अलंकार नियोजन है। उपमा अलंकार के प्रयोग की दृष्टि से तो उनका काव्य महिमामंडित है।

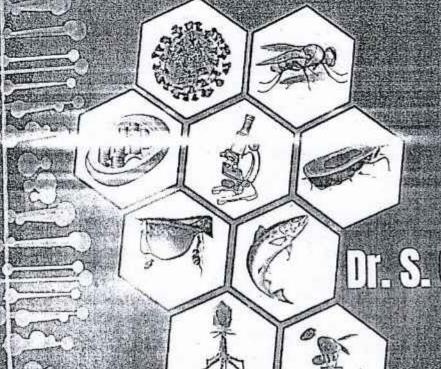
संदर्भ सूची

- 'परिमल'-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, पृ. 192
- 'हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि'-द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, पृ. 256 2. वही, पृ. 126
- 'परिमल', पृ. 135

हिंदी साहित्य में अलंकार-योजना : 165



FROMEIS IN BIOLOGICAL SCIENCES



Dr. S. G. Vaday

PATELLARIA FR.SPEC.NOV.,NEW GENUS OF ASCOMYCETOUS FUNGI

Kamble Rajabhau Anantrao

Department of Rotany Shri Hawagiswami College, Udgir, Dist.Latur (Maharashtra)

ABSTRACT - Ascomycetous Fungi is the largest group. These fungi are highly The diverse and versatile organisms adapted to all kinds of environment. Also they are heterogenous in nature and rich in their pattern. However, it was observed that since during last few years Mycology, a branch of Botany has been neglected in Marathwada region and no studies have been done on this particular branch. Therefore, it was felt to undertake the work on taxonomic studies of ascomycetous fungi. These fungi occurring saprophytically on dead and decaying fallen leaves and twigs of plants.

Key words: Ascomycetous fungi, Pezizales, Patellaria.

MATERIALS AND METHODS

のののののから

かっている

3,

3

3,

20

3)

3,

Э,

9

The work has been completed through following steps:

- Collection of infected plant material 2. Laboratory work. 3.
 Identification of Fungi.
- 1. The collection of infected plant material was done at every fortnight. The field observation was done carefully and the date of collection and identification of the host was carefully recorded. It may be mentioned that for the identification of the host, particularly for the vernacular names the help was taken from a common layman.

2. In the laboratory, the hand sections of these infected plant material were carefully taken. The slides were prepared by using Lactophenol as a mounting medium and cotton blue as a stain. Then the slides were sealed with nail paint and preserved in the laboratory.

3. The prepared slides were carefully observed under caliberated research microscope. The measurement of Ascocarp, Asci and Ascospores were carefully taken. The identification of different genera was done with the help a book "Genera of Fungi" by Clements and Shear (1973)

The genus is Patellaria is characterized by Apothecia superficial, cupulate, disciform to ovoid, opening by a longitudinal cleft, black, carbonous to some what hard, usually septate. Exipulum is typically formed by growing paraphyses intermixed at the apex. Asci hyaline, cylindrical, bitunicate, pedicillate, 8- spored. Ascospores hyaline, elliptic, fusoid, many celled, paraphyses hyaline, septate and branched at the tip.

MATRIX STUDIED:

666646666

Э,

0

3

9

9

3).

3

Э,

3

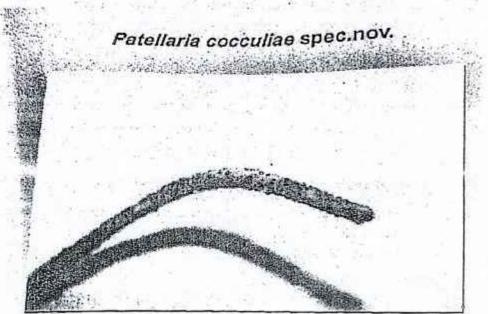
3

Patellaria cocculiae spec.nov.: Collected on dead stem of Cocculus villosus L.during the month of November 2003, at Ramling forest, Yedsi.Leg. R.A.Kamble.

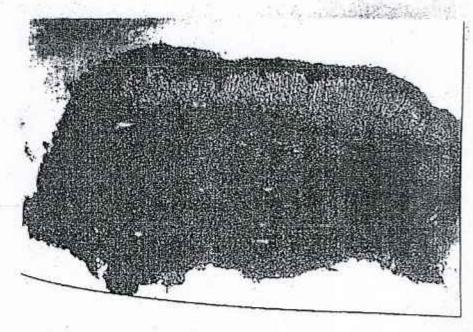
Apothecia subcuticular to superficial, disciform to ovoid, black in colour, measuring from 951-965 x 156-176μ. Paraphyses hyaline, septate, branched at the apex. Excipulum is formed by growing paraphyses at the apex. Asci numerous, hyaline, shortly pedicillate, bitunicate, 8-spored, measuring from 54-58μx24-μ. Ascospores hyaline, ellipsoidal to fusoid,

161

uniserriate to biserriate with mucilage sheath, measuring from $26\text{-}27\mu\,x\,7\text{-}8\mu.$



Dead stem of Cocculus villosus L.



3

3,

)

. •

3

v.s. of stroma

COMPARATIVE TABLE OF INDIAN SPECIES OF PATELLARIA Fr.

Sr. No	Species	Host	Apotheci a	Asci	Ascospore
ب	P. combreti	Combretum	395- 480µ	100- 120μ	30.5-76μ
1.	spec.nov.Leg .Srinivasulu	lu ovalifolium X Roxb.		Х	X
į			150-275	16- 20µ	3.5-7.6μ
	P.lasiophonis spec. nov.	Lesiophon	200- 300μ	83- 95μ	64.6- 79.4μ
2	Leg.	eriocephalu s Dene	X	Х	х
2.	Srinivasulu		200- 240μ	15.6- 17.1 μ	7-7.6µ
3.	P.argyriea spec. nov. Leg.	P.argyriea spec. nov. Leg.	533.1- 560.2 μ Χ	83.3- 100 µ	32.3-40.9 μ Χ
	Nagpurne	Nagparne	120-180 µ	12- 18 μ	5-6 μ
			951-965 μ	54- 58 μ	26-27 μ Χ
k.	P.cocculiae spec. nov.	Cocculus villosus L	X	Х	7-8 µ
	a = X		156-176 μ	23- 25 μ	

3



Conclusion: The genus Patellaria(Fr.) is included in the family Patellariaceae belongs to the order Pezizales (Clements and Shear1931). The p;resence of Apothecia superficial, cupulate, disciform to ovoid, opening by longitudinal cleft. Asci cylindrical, hyaline, hyaline, 8- spored and Ascospores hyaline, elliptic, fusoid provides best justification for placing it under the order Pezizales. Morphologically, the present collection differs from all the species described hitherto in having large apothecia, Asci and Ascospores. Therefore, it has been described as new species.

References:

Ainsworth, G.C. & Bisby, G.R. Dictionary of Fungi (1971)

Clements, F.E. & Shear, C.L. The genera of Fungi (1931)

.Dhaware,A.S. Taxonomic studies of Ascomycetous Fungi(1976)

Gaikwad, Y.B. Taxonomy of Pyrenomycetes (1974)

Ghadge, D.N. Studies in Discomycetes (1987)

Jagdale, S.V. Studies in Ascomycetes Fungi (1984)

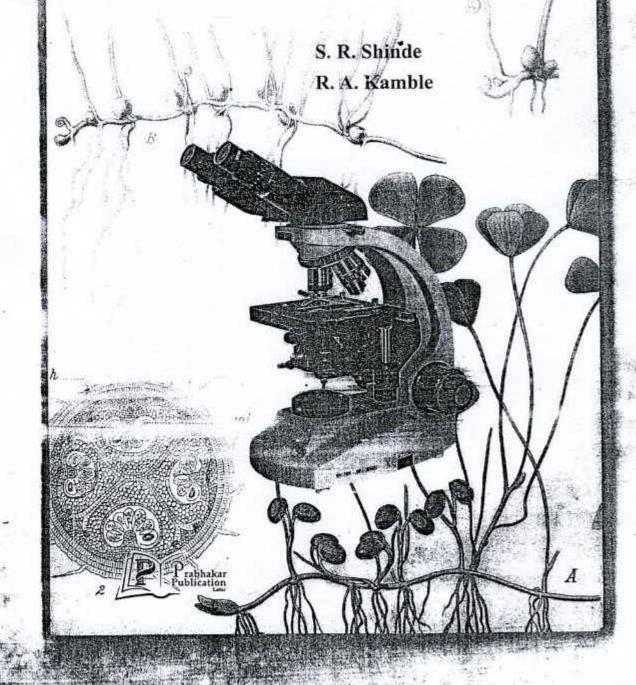
Nagpurne, V.S. Taxonomic studies in Ascomycetes

Srinivasulu, B. V. Studies of some genera of foliicolous and woody Ascomycetes from Marathwada. Ph.D. thesis, Marathwada University, Aurangabad. (1969)

Tilak, S.T. Contribution to our knowledge of Ascomycetes of India(1970)



Practical Botany for F.Y. B.Sc.



O

c



Property of the second second

Dr. Surendra Raghunath Shinde is presently working in the department of Botany as Associate Professor in Baliram Patil Arts, Commerce and Commerce and Science College, Kinwat. He has completed his UG and PG from Marathwada University, Aurangabad. He has twenty seven years teaching experience at UG level. He obtained Ph.D. in 2008 from SRTMU, Nanded (M.S). He has participated UGC sponsored 25 national and international

has participated UGC sponsored 23 hattoner and international academic meets. Dr.S.R.Shinde has published 30 research papers in national and international research journals. He published a book on MCQ in Botany. He has completed two UGC sanctioned Minor Research Projects successfully. He has 12 years research experience in the field of ethnomedico-botany antimicrobial activities of regional plants. He contributed a lot in extracurricular activities and awarded as best N.S.S. programme officer by Nehru Yuva Kendra, Nanded. Apart from curricular, extracurricular and research activity, he has actively participated in Social and National Programmes conducted for various backword and tribal communities of the area through social and academic organizations.



Dr. Rajabhau Anantrao Kamble is presently working in the Department of Botany as Associate Professor in Shri Hawagiswami College, Udgir, Dist.-Latur. He has completed his UG and PG from Marathwada University, Aurangabad. He has twenty seven years of teaching experience at UG level. He has completed Ph.D. in 2007 from SRTMU, Nanded. He has 13 years of research experience in the field Taxonomy of Ascomyceteous Fungi. He has completed one

UGC sponsored Minor Research Project. He has participated in 15 national and international conferences and workshops. He has published 12 research papers in peer reviewed national and international journals. He is BOS member in Botany, Swami Ramanand Marathwada University, Nanded.





INDIAN INDIGENOUS SOCIETY FOR SCIENCES & SOCIAL SCIENCES (HSSS)

Organizes

Transdiciplinaty International Conference on Integrated Sustainability Approaches in Sciences, Technology, Commerce & Social Sciences: Current Research & Future Perspectives (ISASTCSS)

23"-24" November 2022



This is to certify that

Prof 10 r. / Mr. i Mrs. / Mr. Rajabhau Anantrao Kamble

Dept. of Bothing Shi Hawagis womi callege, Udgir

acutively participated in

Transdiciplinaly International Conference on

Integrated Sustainability Approaches in Sciences, Technology, Commerce & Social Sciences: Current Research & Future Perspectives (ISASTESS)

organised by

INDIAN INDIGENOUS SOCIETY FOR SCIENCES & SOCIAL SCIENCES (IISSS)

He / She pre ented Poster / Oral with Abstract No. AB-45

He / She was invited as Speaker / Chairperson / Judgs / Co-ordinator for Technical Session

held at Nagloka, Kampetee Road, Bhilgaon, Nagpur on 23th -24th November, 2022

Mayanony.

Dr. D. P. Gogle ident & Convener)

Dr. Laxman Patil Co-Convener, Social Sc

Dr. P. Khobragade (General Secretary

Dr. M. Rizwan (Secretary Publication)

Dr. S. R. Somkuwar

Advances in Life-Sciences & Human Welfare

Editors

Dr. Vasant D. Satpute

Principal

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce and Science college, Sonpeth, Dist. Parbhani (MS) INDIA.

Dr. Mukundraj B. Patil

Head, Department of Botany, Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce and Science college, Sonpeth, Dist. Parbhani (MS) INDIA.

Dr. Santosh V. Rankhamb

(Head, Department of Zoology, Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce and Science college, Sonpeth, Dist. Parbhani (MS) INDIA.

NOTION PRESS

India, Singapore, Malaysia,

Copyright (1 (2022) Dr. V.D. Sespine Dr. M.B. Panil, Dr. S. V. Rankhamb

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without we can permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, or isssions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

Made with . on the Notion Press Platform

www.notionpress.com

Contents

1. SURFACE STERILIZATION METHOD FOR REDUCING MICROBIAL CONTAMINATION OF SOLANUM MELONGENA ANTHER EXPLANTS FOR IN VITRO CULTURE
Vishal Rathod and Shashikant Bandewar (1-5)

2. SEED DISPERSAL: AN OVERVIEW Dr. R. S. Deshmukh (6-11)

 FUNGI ASSOCIATED IN LIBRARY ENVIRONMENT Dhondiram P. Gadgile, P.V. Pawar and S.V. Poul (12-14)

 DIAGNOSIS OF NEW PLANT FOSSILS AND THEIR ASSESSMENT IN THE INTERPRETATION OF PHYLOGENY AND EVOLUTION Dr. S.V. Chate (15-28)

5. ORGANIC FARMING: A REVIEW
Kiran. A. More (29-37)

6. AEROMYCOFLORA OVER A SUGARCANE FIELD AT UDGIR DIST.

LATUR: A SPECIAL APPROACH TO WHIP SMUT DISEASE

Biradar Rajkumar G. (38-44)

7. ANIMALS ROLE IN SUSTAINABILITY
Anil Khole & Rajesh Deshmukh (45-51)

 DIVERSITY OF AGARICALES FROM BULDANA DISTRICT OF WESTERN VIDARBHA, MAHARASHTRA Dr. Suryakant H. Kanherkar, Mr. Shailesh S. Borul, Dr. Rameshwar Y. Mane (52-67)

9. INVESTIGATION ON PIGEON PEA WILT INCITED BY FUSARIUM UDUM (BUTLER)
Bhandarge P. R., Patre M. M. (68-81)

10. EFFECT OF ELECTROCULTURE ON PLANTS - A REVIEW Bhagyawant R. U. and Patil M.B. (82-92)

11. MYCOFLORA ASSOCIATED WITH SOME SOILS OF MARATHWADA REGION
Kadam R.M. and Yadav S.G. (93-100)

12. STUDIES ON MEDICINAL PLANTS AND THEIR ROLE IN HEALTHY LIFE
Ram Bajg re: (101-106)

13.	ENHANCING EFFECTS OF THE EXTRACTS OF BLUE O OSCILLATORIA AMONEA IN SEED GERMINATION OF G (VIGNA RADIATA L.)	REEN ALGA REEN GRAM
	Yaday S.G.	[107-113]
	STATUS OF ORGANIC FARMING: A REVIEW	
1.4.	Shailaja B. Bhosale, Mukundraj B. Patil and Anand Gore	(114-120)
15.	AER IMYCOLOGICAL STUDIES OVER GROUNDNUT RENAPUR, DISTRICT LATUR OF MAHARASHTRA STATE	FIELDS AT
	R. M. Kadam, C.G.Sable, W. N. Jagirdar, R. N. Govande	(121-129)
16.	CONSERVATION	IODIVERSITY
	Figure R. Raut, Ganesh D. Suryawanshi and Anil R. Kurhe	(130-135)
	BIGGEST CATTLE TRADING AT MALEGAON FAIR	
17.	Dr. Mrs. M. K. Malviya	(136-142)
18.	MEDICINAL PLANTS UTILIZED FOR THE TREATMENT TROUBLE IN HINGOLI DISTRICT (MS), INDIA	OF URINARY
	Karthle T. D. & S. T. Bandewar	(143-145)
19.	STUDY OF PHYSICO-CHEMICAL PARAMETERS OF BAN	ISHELKI DAM
	UDGIR, DIST.LATUR	
	Dhaswadikar Usha Sitaram	(146-153)
20	EFFECT OF EM RADIATIONS ON BIOLOGICAL SYSTEM	WITH TOOLS OF
20.	M. A. Barote, A. V. Pathan	(154-163)
	ECOLOGICAL STUDIES ON AQUATIC FUNGI IN TERU	DAM, HALI-
21.	HANDERGULI	
	B. S. Kamble, P. S. Bele	(164-166)
22	REVIEW ON THE IMPORTANCE OF LEAFY VEGETABLE	ES IN HUMAN
	HEALTH	(167-178)
	- nan R. Shimple and Balwan W. Kamble	
23	AVIAN FAUNAL DIVERSITY OF COLLEGE CAMPUS, ADI	NATHNAGAR:
	A CHECKLIST Atur R. Chourpagar, Jyoti Tupe, Dhaneshwari Mhaske	
	and Rumana S. Shaikh	(179-186)
2	(EDA) IN THE REPRODUCTIVE STATES	OPERIODISM). LK ABLATION ELPHUSA
	SENEX SENEX 1r. V. Mathivanan and Dr. D, Leelavathi	(187-201)

25. TOPOGRAPHY AND METEOROLOGICAL INFORMATION OF MARATHWADA REGION D. R. Chamle (202-210) 26. FRESH WATER FISH DIVERSITY IN KANNAD TALUKA RESERVIOURS Jadhav T.J. And Jadhav V.D. (211-219) 27. ISOLATION OF SEED BORNE MYCOFLORA OF SOYABEAN (Glycine max L.) Yadav S.G. and Sabale C.G. (220 - 223)28. ECOLOGICAL EFFECT ON HELMINTH PARASITIC DISTRIBUTION IN COMMON TOADS Sujeet Jamdar & Jaywant Dhole (224 - 230)29. THE STUDY OF SOLID WASTE MANAGEMENT BY VERMICOMPOSTING Deepak T. Tangade (231-237) 30. STUDY OF BODY MASS INDEX AND HAEMOGLOBIN IN COLLEGE GIRLS FROM VAIJAPUR TEHSIL OF AURANGABAD DISTRICT OF MAHARASHTRA STATE Bhimrao N. Jadhav and Sheshrao K. Rathod (238-242)31. BIOPHYSICS: AN INTEGRAL APPROCH Vyankatesh Jadhav (243-249)32. STATISTICAL STUDY OF UNDERWATER BIVALVE FROM SOME ASPECTS OF INDIAN COAST Sunil N. Khade and P. B.Gaikwad [250-259] 33. VERMICOMPOSTING BY USE OF DIFFERENT GARDEN WASTE USING EISENIA FETIDA Sunil N.Khade and Devyani N. Rathod (260-268)34. RELEVANCE OF ERGONOMICS IN DAILY LIFE Maman Paul and Deepak M Gaikwad (269-273)35. MORPHOLOGICAL AND ANATOMICAL CHANGES ON TESTES OF ALBINO RAT ON INDUCTION OF CYPROTERONE ACETATE S. S. Khiratkar, A.M. Gawande, Aayesha Shaikh, G.P. Jadhav A.U. Nirwal and V. F. Dabhade (274-279)36. A STUDY ON DETOXIFICATION MECHANISM IN FRESHWATER FISH ON EXPOSURE TO ORGANIC POLLUTION Prakash R. Ingle and Sunil N. Khade (280-282)37. PHYSIOTHEPAPY AND ANIMAL CARE Maman Paul (283 - 288)

STUDY OF PHYSICO-CHEMICAL PARAMETERS OF BANSHELKI DAM UDGIR, DIST.LATUR

Dhaswadikar Usha Sitaram

Dept. of Zoology

Shri. Hawagiswami College, Udgir Dist.Latur

ABSTRACT: Present research deals with the study of physicochemical parameter of Banshelki Dam of Udgir, Dist.Latur Maharashtra. Monthly variations of some physical and chemical parameters such as temperature, PH, dissolved oxygen; total hardness, chlorides, phosphate, nitrate etc. were investigated. All the parameters are within permissible limits.

Keyboard: water sample, physic-chemical parameters, Banshelki Dam

INTRODUCTION - The quality of any water body is a function of either both natural influences and human influences. Without human influences water quality would be determined by the weathering of rock minerals, atmospheric processes of evapo-transpiration and the deposition of dust and salt by wind, by natural leaching of organic matter and nutrients from soil, by hydrological factors that lead to runoff and by biological processes within the aquatic environment that can alter the physical and chemical composition of water.

Polluted water is measured by assessing the physico-chemical parameters of water (Ramchandra Mohan et.al. 2014). Physico-chemical parameters is the prime consideration to assess the quality of water for its best utilization like drinking, fisheries, irrigation and industrial purpose and helpful in understanding the complex process is, interaction between the climatic and biological process in the water (Salve and Hiware 2006)

The objective of the present study was to assess the ecosystem of Banshelki Dam, by estimating the some physico-chemical parameters such as temperature, PH, total dissolved solids, total hardness, phosphate, nitrate, turbidity, chloride, dissolved oxygen etc.

Material and Methods - The study area is Banshelki Dam, which is located village Banshelki, near Udgir Study was conducted from December 2018 to Dec. 2019. Water sample from the Dam was collected every month. The samples were brought to the laboratory for the estimation of physico-chemical parameters. The physico-chemical parameters such as temperature of air and water and PH were recorded by using thermometer. The physic-chemical parameters and digital PH meter respectively. The transparency of water was measured by using Sacchi disc. The chemical parameters of water such as dissolved oxygen, total hardness, total dissolved solids, chlorides, sulphates etc. were determined by standard methods in the laboratory as per the APHA (2005).

Results and Discussion - The data on physico-chemical parameters analysis of Banshelki Dam water has been given in Table 1.

Physical Parameters

- 1) Temp: During the study period water temperature varied from 22° C \pm 0.20° C to 30° C \pm 2° C. The maximum temp (30° C) was observed during the month of April 2019 and minimum temperature (22° C) was observed during the month of December 2019. Jayabhaye et. al. 2005 and Salve and Hiware 2006 observed that during summer, water temperature was high due to low water level and clear atmosphere.
- **2)** Turbidity: 18.0 NT units ranged from 0.2-18.0 NT units. The maximum value (18.0 NT units) observed during the month of October 2019 and minimum value (0.2 NT units) was observed during the month of Dec. 2019. Similar result was observed by Manjare et.al. 2010. Turbidity of water fluctuated from 0.41 \pm 0.02. NTU to 3.51 \pm 0.72 NTU.

Table 1 · Monthly variation in Physico-chemical Parameters of Banshelki Dam (Dec. 2018 to Dec. 2019)

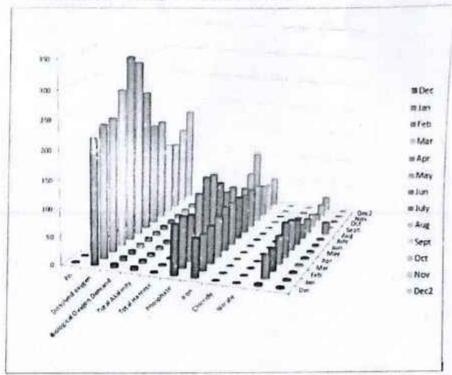
Months/ Parameters	Dec	Jan	Feb.	Mar.	Арс	Мау	June	July	Aug	Sept	Oct	Nov.	Dec.
Turbidity	17	1.4	1.0	2.2	3.0	3.5	4.2	5.7	13.0	16.2	18.0	0.4	0.2
Total disselved solids prog 32	220.0	235.0	238.0	280 0	130 0	315.0	255.0	222.0	185 0	132.0	125.0	145.0	175.0
The same	73	7.5	7.5	7.4	7.4	7.2	7.3	7.2	7.0	0.1	65	7.1	7.3
pi-	24.1	9/2	0.0	W.2	- 1	6.0	6.5	0.1	92	63	14	4.0	7.0
BUD	15	20	2.0	2.6	3.0	30	2.0	2.0	2.0	1.6	18	1.0	lo
Total Alicdinir	000	92.0	84.0	110.0	130.0	125.0	100.0	640	72.0	5.3	50.0	70.0	100.0
Total Hardness (mg/L)	70.0	65.0	68.0	72.0	800	76.0	76.0	75.0	70.0	63.0	58.0	50.0	52.0
Phosphate (mg/L)	0.0	00	0.0	0.0	0.02	0.0	0.0	0.0	0.01	0.0	0.0	0.0	0.04
fron (mg/L)	D 90	0.6	0.0	0.35	10	1.0	1.3	1.40	1,50	3.4	1.4	0.70	0.55
Chlacute (mg/L)	3 90	40.0	41.0	50.0	63.0	56.0	45.0	35.0	25.0	22.0	12.0	20.0	25.0
Nitrate (mg/L)	2.4	25	2.8	3.0	3.0	3.0	2.8	2.2	2.2	2.0	2.0	1.3	0.72

3) Total Dissolved Solids (TDS): During the study, the TDS varied from 125 mg/L to 330 mg/L. The higher value found in the month of April (330 mg/L) and lower value found during the month of October (125 mg/L). Alka, 2014 reported that the amount of TDS detected from water sample at Borgaon was 347.16 mg/L to 738.0 mg/L.

Chemical Parameters:

1) Pili During the study, the PH of the water sample ranged from 6.5 in the month of October 2019 to 7.5 in the month of February 2019. This range indicates that the water is alkaline in nature.

Similar value was observed by Joshi et al. 2009 of the Ganga rive of Haridwar. It ranged from 7.0 to 8.35.



- 2) Dissolved Oxygen: Dissolved oxygen value ranged between 6.0 to 7.0 mg/L. Lowest values were recorded during February 2019. Meme at al 2014 reported the range of Do was 6.2 to 7.1 mg/L at Oinyi River, Nigeria.
- Biological Oxygen Demand: The BOD value ranged between 1.0 to 3.0 mg/L. Lowest values were recorded during November 2019.
- Total Alkalinity: The TA value ranged between 53 to 130 mg/L. Lowest values were recorded during September 2019.
- Total Hardness: The TH value ranged between 50 to 80 mg/L.
 Lowest values were recorded during November 2019.
- 6) Phosphate: The Phosphate value ranged between 0 to 0.04 mg/L. Highest value recorded during December 2019.
- Iron: The iron value ranged between 0.35 to 1.50 mg/L. Lowest values were recorded during April 2019.

- Chloride: Chloride value ranged between 12 to 6.30 mg/L. Lowest values were recorded during October 2019.
- Nitrate: Nitrate value ranged between 0.72 to 3.0 mg/L. Lowest values were recorded during December 2019. Simplet al 2011 recorded the values of nitrate between 2.1 to 12.3 mg/L in Hasanalli Tank, Katnataka

Conclusion

A study of physic-chemical parameters of Banshelki Dam, Udgir shows that the water is clear and away from pollution. It is covered by dark vegetation with less anthropological influence. The work was carried out by taking important para leters like temperature, PH, dissolved O2, total alkalinity, total hardness, chloride, phosphate etc. for the period of December 2018 to December 2019. In the present investigation PH, total alkalinity, total hardness, chloride etc. were within the permissible limit. Hence the Banshelki Dam water is considered as non-polluted water. The physic-chemical parameters of Dam water suggests that, it is less harmful for pisciculture, irrigation and domestic purposes.

References

- Adefemi S.O. and E.E. Awokunmi (2010), Determination of physico-chemical parameters and heavy metals in water samples from Itaogbolu area of Ondo-State, Nigeria, African Journal of Environmental Science and Technology, 4 (3), pp.145-148.
- Adeyeye El, (1994), Determination of heavy metals in Illisha fricuna, associated Water, Soil Sediments from some fish ponds, International Journal of Environmental Study, 45, pp.231-240
- Adnan, Amin, Taufeeq, Ahmad, Malik, Ehsanullah, Irfanullah, Muhammad, Masror, Khatak and Muhammad, Ayaz, Khan (2010), Explanation of Industrial and city effluent quality using physicochemical and biological parameters, Electronic Journal of Environmental, Agricultural and Food Chemistry, 9 (5), pp.931-0.39.
 - 4. Frab, Begum, S.Y., Noorjahan, C.M., Sharif, S. (2005), Physicochemical and fungal analysis of a fertilizer factory effluent, Nature Environment & Pollution Technology, 4., 4), pp.529-531.

- Agarwal, Animesh and Manish, Sexana, (2011), Assessment of Pollution by Physicochemical Water Parameters Using Regression Analysis: A Case Study of Gagan River at Moradabad-India, Advances in Applied Science Research, 2 (2), pp.185-189
- PHA (1985), Standard Methods for Examination of Water and Wastewater, 20th Edition, American Public Health Association, Washington D.C.
- ASTM International, (2003), Annual Book of ASTM Standards, Water and Environmental Technology v. 11.01, West Conshohocken, Pennsylvania, pp.6-7
- Basavaraja, Simpi, S.M., Hiremath, K.N.S. Murthy, K.N. Chandrashekarappa. Anil N. Patel, E.T. Puttaih (2011), Analysis of Water Quality Using Physicio-Chemical Parameters Hosahalli Tank in Shimoga District, Karnataka, Global Journal of Science Frontier, 1 (3), pp.31-34
- 9. Chavan, R.P., Lokhande, R.S., Rajut, S.I., (2005), Monitoring of organic pollutants in Thane creek water, Nature Environment and Pollution Technology, 4 (4), pp.633-636
- DcGrandpre, M.D. 1993, Measurement of seawater pCo₂ using a renewable-reagent fiber optic sensor with colorimetric detection, Analytical Chemistry, 65, pp.331-337
- 11. Dey, Kallol, Mohapatra, S.C., Misra, Bidyabati, (2005), Assessment of water quality parameters of the river Brahmani at Rourkela, Journal of Industrial Pollution Control, 21 (2), 265-270.
- 12. Dickson, A. and Goyet, C., (1994), DOE Handbook of Methods for the Analysis of the Various Parameters of the Carbon Dioxide System in Sea water, Version 2.
- available 13. Drinking Water Inspectorate, at https/www.dwi.gov.uk, accessed during September 2012.
- 14. Ellis, K.V., (1989), Surface water pollution and its control, Macmillan Press Ltd. Hound Mill, Basingstoke, Hampshire RG 21 2xs and London, 3-18, pp.97, 100, 101 and 208.
- 15. Gnana Rani, D.F., Arunkumar, K., Shivakumar, S.R., (2005). Physico-chemical analysis of waste water from cement units, Journal of Industrial Pollution Control, 21 (2), 337-340.

- Gran, G., (1952). Determination of the equivalence point in potentiometric titrations. Part II. Analyst, 77, pp.661-671
- Gupta D.P., Sunita and J.P. Saharan, (2009), Physicochemical Analysis of Ground Water of Selected Area of Maithal City (Hary ina), India, Researcher, 1 (2), pp.1-5.
- Hari, O.S., Nepal, M.S. Arya N. Singh (1994), Combined effect of waste of distillery and sugar mill on seed germination, seedling gr as h and biomass of okra, Journal of Environmental Biology, 3 (177), pp.171-175
- Hemiles, O.J. Kemp, A., Var. B.L.W., (1980), Accumulation of heavy metals in the soil due to annual dressings of sewage sludge, New Zealand Journal of Agricultural Sciences, 28, 228-238.
- Hopkinson, C.S. (1985), Shallow-water and pelagic metabolism: Evidence of heterotrophy in the near-shore Georgia Bight, Marine Biology, 87, pp.19
- 21. Indian Standard Specification for Drinking Water: IS; 10500:1992 (Reaffirmed 1993)
- Jena, P.K., Mohanty, M. (2005), Processing of liquid effluents of mineral processing industries, Inti Symoposium Environ Manag Mining Metallurgical Industries, 11-14, Bhubaneshwar, pp.193-212
- Karanth, K.R. (1987), Groundwater Assessment Development and Management Tata McGraw Hill Publishing Company Ltd., New Delhi, pp. 725-726.
- Kataria, H.C., Qureshi, H.A., Iqbal, S.A. and Shandilya, A.K. (1996), Assessment of quality of reservoir in Bhopal (M.P.), Pollution Research. 15 (2), pp.191-193.
- Kodarkar, M.S., (1992), Methodology for water analysis, physicchemical, Biological and Microbiological Indian Association of Aquatic Biologists Hyderabad, Pub. 2: pp.50.
- Krishnamurthy, R., (1990), Hydro-biological studies of Wohar reservoir Aurangabad (Maharashtra State) Indsia, Journal of Environmental Biology, 11 (3), 335-343
- 27. 1 Marni, G.J., (1997), Vater supply and sanitary engineering,

- Manjare, S.A., S.A. Vhnalakar and D.V. Muley, (2010), Analysis of water Quality using Physico-chemical parameters Tamdalge Tank in Kolhapur District, Maharashtra, International Journal of Advanced Biotechnology and Research. 1 (2). Pp.115-119.
- Milacron Marketing Co., The Effects of water Impurities on Water-Based Metal working fluids, Technical Report No.J/N 96/47.
- Misra, S.G., Dinesh, D., (1991), Soil Pollution, Ashing Publishing House, New Delhi, India.
- Morrissette, D.G., and Mavinic, D.S., 1978. BOD Test Variables. Journal of Environment: Engg. Division, EP, 6, 1213-1222.
- Moss, B., (1972), Studies on Gull Lake, Michigan II, Eutrophiciation evidence and prognosis, Fresh Water Biology, 2, pp.309-320.
- National Primary Drinking water regulations, Drinking water contaminants US EPA.
- Navneet, Kumar, D.K. Sinha, (2010), Drinking water quality management through correlation studies among various physicochemical parameters: A case study, International Journal of Environmental Sciences, 1 (2), pp.253-259.
- Pawar, Anusha, C., Nair, Jithender, Kumar, Jadhav, Naresh, Vasundhara, Devi, V., Pawar, Smita, C., (2006), Physico-chemical study of ground work samples from Nacharam Industrial Area, Hyderabad, Andhra Pradesh, Journal of Aquatic Biology, 21(1), pp.118-120.
- Poonkothai, M., Parvatham, R., 2005. Bio-physico and chemical assessment of automobile wastewater, Journal of Industrial Pollution Control, 21 (2), pp.377-380.

सत्यशोधक अण्णा भाक साठे

डॉ. वनमाला सोपानराव लोंढे डॉ. संजय भीमराव तोंडारकर डॉ. सचिन शेषेराव घुगे



Akshita Publishers and Distributors Delhi-110053 (India)

Published by :

Akshita Publishers and Distributors

J-180/5-A, Ram Pratap Marg

Kartar Nagar, Delhi-110053

E-mail: abooks2019@gmail.com

Mobile: 9968053557

सत्यशोधक अण्णा भाऊ साते उपेक्षितांच्या अंतरंगाचा वेध

First Edition—December-2022

ISBN: 978-93-91120-04-7

Copyright: Author

All rights reserved no part of this work may be reproduced stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic mechanical, photocopying recording or otherwise, without the prior written permission of the antisor

This Book has been published in good faith then the material provided by endior is original. Every effort is outdo to ensure accuracy or menerical but the publisher and printer well and held responsible for any incolverient crows.

PRINTED (VINDIA

public of the Art Islan Publisher and Albiteria tree. The leaster request ming of Shah builting the group open. The end



रंजल्या गांजल्यांचा वारसदारः अण्णा भाऊ साठे

-सं सुर्गानप्रकाश _{विण्य}

अण्णा भाऊ साठे हे जनसामान्यांच्या यथा वेदन महणारे लेवन होत्र हुन उपेक्षित वंचित भटक्या विमुक्त सर्वहारातील माणसाच दुःश साहिता महन्त्र -महान लेखक आहेत.महाराष्ट्राची महती, शिवरायांचा किती आपना वायराज माध्यमातून रशियापर्यंत घेऊन जाणारे हे राष्ट्रभक्त शाहिर अहे. तंत्रह सहस्र चळवळीत जीवाचे रान करून आपल्या 'लालपावटा कलावपाटा या गढन ह महाराष्ट्रातील अनतेच्या डोळ्यात प्रबोधनाचे अंजन घालणारे हं लाज्यकालक होते.त्यांचे महाराष्ट्रावर आणि महाराष्ट्राच्या जनतेवर उदात्त असे वन उत्तर महाराष्ट्राचे ते सुपुत्र होते. मुंबई महाराष्ट्रातच सहिली पाहिले यालाही हा पोवाडे लोकनाटशाच्या मध्यमातून संयुक्त महाराष्ट्राची घळवळ जीवंत वेदल हर के पुंबई आणि संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीचा इतिहास आपत्या शाहिरीतृन त्यांनी मन्तर माझी मैंना गावावर राहिली' ही लावणी म्हणले मराठी शहिन सहमानि वावन्तकशी सोनं आहे. त्यांनी मुंबईवर आणि संयुक्त महाराष्ट्रावर असहेत है। व लावणीतृन व्यक्त केले. माझी मैना म्हणजे निपाणी कारवार वेल्पार बाही र कनार्टकाल असलेल्या पण मराठी भाषिक प्रदेशाला । होते । हेल्लन स्टब्स हा प्रदेश महाराष्ट्रात विलिन न आल्यामुळे अण्यासाठ या ना जा कान्य मध्य मा लाग्यकामुन ध्याक अम्बन आहेचा अध्यक्तम अस्या 🕳 🐠 📑

रंजल्या गांजल्यांचा वारसदार: अण्णा भारत सात

सांस्कृतिक, पीराणिक संदर्भ आहेल, अनेकसंदर्भाणा सुवन करणारी के जनाण जन ग्रह्मधीन मूल्यांनी देखणी आहे. तशीच ती जीनव्यक्तिकी है स्टार्क वर्ष कराना साराजिक, सांस्कृतिक,आधिक राजकीय दसाएवन सामज है। वाला की उन्हें न मुस्ती साहित्यात सामालिक थेहरा देण्याचे व्याग आणागासनी एक ज्याने अलगान द रितकांचा पाहाण्यांचा दृष्टीकोनच बयसून टाक श्र वा लावणीला आस्तरत स आतं त्तास्कृतिक आदी बाजूनी मूल्य आधि मोल शक्तानावली कर हा है, र स्रोतिक क्षेत्रात उपेक्षितांच्या जीवनाचे सत्यवसीन् असमामकाना असीतः मानाने पाता साहित्यातील इतिहासकार म्हरले जाते. वे बार्च आहे वा नहार विशासके का उप कादंबर्या, अनेक लोकनाट्य कथासंबह प्रवासभ्ययन्त्रमान्य रहेनात्र । किन्नई असी अनेक पोदाहे, लाक्या शेतकरी आहे हैं में लिहे हैं हहा है हमार कामगार चळवळ संयुक्त महाराष्ट्र अळवळीत ते लिप्पेरीय वस्त हसे का बस्तिवार अवस आलुतेवार भटययांचे दुख पहिल्यांचा गरा । साहित्यान मन्या गाव सा र वार्न मंडले,गरीकीत मुक्तमा प्रश्न स्थानमञ्जूषे तथा व्यवसा नरी। हा स्थनस्थ वावस असामान्य माणसाला सामावेस सभी भीती प्रतास कीवम त्यासा के अस्ताम प्राक्रम,लहा, संगर्ध जनण्यात्रस्य केन् स्थानस्यत्यं सेन्या स्वतंत्रं स्थान नव गर्याः स्थिता हिंदू शासत यूटा आणि गानगण्डेला आणित व्याणाहण प्रधानाण करता विक्रम स्मीताचा प्रकास साहित्याचा ना ता व्याप १९५ THE WHAT HE SHOW THE THE TANK THE THE परेल,मनासा आगरेल एडीलाला एड १००० छ। ४ ००० विस्तवरी अपने व्यक्तिक संचाती नोतिन्यान विनास प्रतिन वाल निवास साहित्यात चेहरा हिला चाना सन् प्रण्याम् नाम् स्थापात्र माना स्थापा जात होते. अस्य क्षांचाम स्थितिका ज्ञातील क्षांचाम स्थाप मार्थकरम् दिन्। स्टब्स् भावतः स्टब्स् नास्ताः स्टिस् हः स्थान STREET PROPERTY THE VIEW OF THE PROPERTY OF TH

THE TRAIN SAN GREETS - 12 SUIT I S

新洲 一

संस्थातिक अञ्चल भाग साथ साथ अविद्यालय अवस्थाल का THE RESIDENCE OF THE PERSON OF and regress that a series are property to be a ाच्या रेका ते च दोण सामील श्रीवटला

रहतः चत्राप्त सीर्धारः परोत आहोता माणसं अपणानासस्या साहितासह इत्तर भी अन्तर करते के विशेष त्याच्या साहित्याचे आहे. अण्यामालंबी संतर्भाहित नरा व में एक दिना न अच्या गालंच्या साहित्यात वेगवेगळ्या जातीचा चर्माच क्षण । इ.स.च्या वर्गाव राजन स्थापन आहेत.मुक्कुल मुलाणी,सुलतान मा कंधरून सम्भ उपमारिक्य आरोपरिल्म मुस्लिम समाजानी चित्रण केले आहे. वर्णवादाव्या आणि वर्गाच्या कर कर आरम्परिवास समाविधिकत नवसमानाची मिर्मिती श्रीह सकत नाती है है पहलूब जाणीहर स्थाना होती स्थामुळे से सुख्वातीच्या काळल सक्संबात केराकार्यक अपमार्थन आज हाते.मार्कसवादी चळवळील काम काताना व्यानः विकास के वार्य पुरु एक मोधाना वा धका देवारी होती.आपला गावरीवायमुळे साहरीच use वर्षेत्र वर्षा स्वयसंगत अस्तर्भास स्वामिमान देख शकत गही याची सर्वाधीन क्षाणीत होत्या हर त्यांनी अधिवतस्वादाकडे सकले आणि आपल्या चळवळाची प्रेरण में बहुत मार्थ आहे एकर पर हो।

N. A.

170

.0

1

25

31

+4F

1

233

10.5

28

3.921

111

1

10

100

विकास करें हैं। इस वह वह सहस्र कर करायां असेल एर खीवाना वहेंग असेलहराचा महत्त्व पर त्यामा एकमेव तपरय सदला ग्रुपून त्यांगी आपला प्रेरपाक आहीर केले सर्वे वृद्धार घालसा घाव

रामनी गत पता संगत्तव असे म्हटले.

the state of the s

को उनके शंकान्या मरतकावर तस्ती गसून दोन दक्षित आणि धामकाव्य वळहालाम संस्की आहे. असा विवेकवादी सत्यदर्शन चडविणारे तत्वज्ञान सामणारे व्याप्त महार सहा है भीतम हुन सल तुकाराम महात्मा फुले धाऱ्या विचारांचे वास्तवार होते हो प्राप्त साहर आदेहकर धांच्या विचारांचा प्रभाव त्यांच्यावर होता. तामुहं स्थानी ाणांक साम्बद्धाय कार्यवर्ग हो दाचासाहेन आंगेडकसंच्या झुणार

के जात हुआ उत्साकणामा इसी समाज सुधारणेसा । एकाउन की लेखा मध्यक्त विकास अवस्थातम् । व असास गुणांचे विकास मनाचे मनाव्य व्यवस्थात मानामार के के किस किसी की मीक्स को मी प्रकार के किसी है। THE RESERVE OF THE PARTY OF THE

रंजल्या माजल्याचा वारसदारः अण्णा माछ साठे रजिल्या महाराष्ट्रांनर महाराष्ट्राच्या भूगीवर जनलेवर अढळ ग्रेम होते.या महाराष्ट्र भूगीचे महाराष्ट्र । नंदनवन त्यांचे इधे सभ्यता आणि शांतता नांदावी अशी मंगल स्वाने पहात मी साहित्य नदनवर्ग प्राप्तिक निष्ठ लेखन करणारे अण्णागाळ साट हे एकमव लखक होते. लिख्या क्षीचे शील.पुरूषाचा पराक्रम आणि देशाचा स्वाभीमान ही विसूत्री त्यांच्या साहित्य लेखन ने मूलतत्व होते.

आण्णा भाऊंची कर्मभूमी मुंबई होती.मुंबई फिरून काम मिळालं नाही परंत् भढ़याची राख वाळून सोनं मिळालं अशी जगण्यासाठी मरणारी माणसं त्यांच्या साहित्याचा आरथाविषय होता त्या माणसाच्या भळभळणाऱ्या दुःखावर जिव्हाळाने आणि सहानुभूतीने भग लायून लिहिणारे ते लेखक होते राव्याला आकार देणे सोपे असते परंतु आत्मा लावून साहित्य लिहिणे कठीण असते ते कठीण काम अण्णामाऊंनी साहित्य क्षेत्रात केले हे मुणाला ही नाकारता येत नाही, उपेक्षित, वंचित, शेतकरी, शेतमजूर,भटजे विमुक्त तरीच रामग्र वहुजनाबद्दलचा कळवळा असणारा रंजल्या गांजलेल्या समाजाला आपला म्हणणारा संत तुकाराम आणि दुसरा तुकाराम म्हणजे वाटेगावाचा तुकाराम भाऊराव साठे होते. रंजल्या,गांजलेल्या,भुकेल्या,कंगाल ,अन्न,वस्त्र, निवार्यासाठी वणवण फिरणाऱ्या अनाथांचा एकनाथ म्हणजे अण्णाभाऊ साठे होते. अशा माणसाविषयीची करूणा त्यांच्या ठिकाणी होती. 'जा, उकिरडयाचा पांग फिटतो आणि तुम्ही तर माणस आहात असा लढायला वळ,जगायला हिंमत देणारा विष्णूपंत कुलकर्णी तितवयाच ताकदीने अण्णाभाक कथा कादंबरीत जीवंतपणे उभे करतात हेच अण्णाभाऊच्या लेखणीचे अनन्यसाधारणत्य होय. अण्णाभाऊ हे माणसाच्या माणुसकीवर प्रेम करणारे त्यांच्या जगण्यावर प्रेम करणारे माणूसनिष्ठ महापुरुष होते. मला माणसं आवडतात कारण ते जगतात आणि इतरांना जगवितात त्यांच्या श्रमावरच जग चालते" हे वास्तव समाजाला उणकावून सांगणारे ते वास्तववादी लेखक होते. 'खरा तो एकची धर्म जगाला प्रेम अर्पावे, जग ही प्रीती आहे मानणार्या खिस्त आणि सानेगुरुजीच्या वाटेच्या दिशेने वाटचाल करणारे माणूसकेंद्री लेखक म्हणजे अण्णा भाऊ साठे होते हे कुणाला ही मान्य करावे लागेल.

अण्णा भाऊ हे सत्यशोधक विचारवंत होते.परंपरावादी अविवेकी देवभोळ्या आणि अज्ञान अंघश्रद्धेचे स्तोम माजवणार्या नाठाळांच्या माथी काठी मारणारे विद्रोही संत तुकारामाचे वारसदार होते.अण्णाभाऊंनी वगनाटय, तमाशा हे शब्द नाकारून लोकनाट्य हा नवीन शब्द वापरला.गण,गौळणीला लोकनाटयातून नाकाराले.गणपती चे स्तयन न करता महापुरुषाचे स्तवन गायिले.पारंपारिक तमाशात गौळणीचे पात्र करणाऱ्या रिजयांची थड़ा मस्करी केली जायायची ती थड़ा मस्करी करणारी गीळणच लोकनाटयातून हद्दपार केली.अण्णाभाऊ हे देशाभिमानी महापुरुष होते. रशियामध्ये गेल्यानतर मराठी विषयाच्या जाणकार प्रा.कझगिना वाई अण्णाभाऊ

सहज्ञक्षीचक जन्मा नाक सात अविधासका जैस् इतेह्न होत्या महत्वते अहर इत्यावनाना तो ताई वाम्यामा हैना महलाहका, गास्त्रते ह शोधत प्राच्या वार्त है ऐकून अञ्चामान, खिला आव्यामान, प्राच्या पूर्व हम स्थापाला, प्राच्या ह and the design of the state of सारको आवस्त्र अन्यानामान्त्री सारकार्य आणि स्टब्स्यानामानामा व्यक्त हिन्द्र हाइटन कार्यकारी कार्याचा आवस्त्राच अस्तानार, व्योक्तितान साहित्य से स्तान हरू इ. तुनुहाराज्ञाती कार्याचा आवस्त्राच अस्तानार, व्योक्तितान साहित्य से स्तान हरू प्रत्यक्षित्र अस्थानारः होते महारामश्चेय, वार्ग, प्रत्यके विमुक्त शेलकश्च कामगार क्रम्हान्त्रात्त्व तन्त्रवाहित हिन्दा मनाव विवास आद्योज्या नक्षा कृतना समस्य आकृतका महत्रवार्य स्थातं साहित्य हो पत वकीली करणारे अण्या मातः सात हे सरमा अव्यान Harris Eld

मुंबईराह रायुक्त पहाराष्ट्र राहाता म्हणून चंद्रपूरपासून ते पुंबईपमेर जातावाद ; कुर्वाधार्थक्षात् वास्थासत्त लोकजाम्ती करणे, लोकप्रवीधन करण्याचे काम वास्त्र केले त्यामुळे उत्तरा अभरावतीचा सुरुविवास ही भोगावा लागला, तेलेच त्यांना सुलकान में त्या त्याचे भावविष्य आतिशय घटकवार शब्दात त्यांनी शब्दकद करें आहे. हरवाला क जारों या कथारांमहाच्या प्रस्तायनेत ते लिहितात,"मी जे जीवन जमती महारो अनुसन्त तेव मी जिहिलो मला कल्पनेथे पंखा लावून भरारी मारता येत नाही अध्यावसीत मी रवत जा वेड्क समजतो" यावरून हे लक्षात येते की.सुलतान हे वारत व पाल अले सुललान म्हणजे आकाशातून पडला होता आणि धरणीने त्याला सलकी होती.सलतान अनाथ होता.तो भावात गुरेढोरे राखतो परंतु पोटभर खायला विकास माही पोटगर भाकर मिळविण्यासाठी तो अमरावतीला येतो.एका पानपट्टीवर माम करतो। परंतु तिशंही त्याला पोटभर भाकर भिळत नाही त्यांमुळे मालकाकडे ानार प्राप्युन मिलावी म्हणून विनंती करतो,आपण मुस्लिम असल्यामुळे मालक पगार महत्व देव नाही असा त्याचा समज होतो.तो एका विर्याणीच्या हॉटेलमध्ये नोकर सहातो पुरतीम मालक सुलतान बिर्याणी जारत खातो म्हणून त्याला कामावरून कभी करती गांडवलदार जात माणुरापण पहात नाहीत तर नका पहात असतात है अण्णागाळना अवोरेखित करायचे आहे.हमालीचा घंदा मिळावा म्हणून प्रयत्न करतो मण ल्याली काम मिळत नाही.त्याला ताप येते६भूक लागते.रस्त्यावर पोलीसाची भेट विदेश जलमध्ये जाऊन आराम करण्याचा सल्ला देतो.तेव्हा सुलतान जेलमध्ये मण्यारा हो तयार होतो. जेलमध्ये जाण्यासाठी चोरी करावे लागते असा सल्ला कर्मा कर्म करा मरेन पण चोरी करणार नाही असे पोलिसांना सांगतो.सुलतान कारत जान देण्यासाठी पटरीवर जातो.त्याला लोक मरू देत नाहीत.पोलीस कार मान वकारो घेउन जातात तेव्हा तिथे जेलरला दोन भाकरीची मागणी कार में भारत होते भाकरीसाठी वर संघर्ष अण्णाभा**ऊंच्या साहित्यात पहावयास** का विकास है। वर्षायेकी कहरी जीवन जगणारा हा माणूस,महमंद आणि रंजल्या गांजल्यांचा वारसदारः अण्णा भाऊ साठे

अमीर ही त्याची दोन मुले यांची नोकरी जाते. हे तिघेही मटन विक्री करतात.तिथल्या स्पर्धत चिडलेल्या बापलेकात मारामारी होते.पोलीस अटक करतात.आर्थिक अडचणीमुळे मुकुलच्या कुटुंबाचा राखरांगोळी होते.हे मुस्लिम समाजाचे जीवनदर्शन ही अण्णाभाऊ ताकदीने मांडतात म्हणून ते उपेक्षित वंचितांचे साहित्यक्षेत्रातील कैवारी होते हे आवर्जून उल्लेख करावा लागेल.अशा महापुरुषांना कोणत्या ही जाती धर्माचा,प्रवाहाचा शिक्का न मारता कोणत्या तरी वादात न बसविता ते माणसांसाठी लिहिणारे वैश्विक मानवतावादी, माणसांच्या न्याय्य हक्कांसाठी लढणारे माणूसनिष्ठ महापुरुष होते. उपेक्षित, वंचित तमाम बहुजनांच्या जीवनातील तिमिर नाहीसा व्हावा त्यांचे आयुष्य उज्ज्वल प्रकाशमय व्हावे हीच त्यांची प्रामाणिक मनीषा होती हे ध्यानात घ्यायला हवे.

अण्णा भाक साते : ग्रीमाने () एक परिवर्तनवादी विचार

संपादक डॉ. विठ्ठल भंडारे

क्षिरयात्रा प्रकाशन, पुणे

आणा भारत साठे : एक परिवतनवादा किया

संपादक : डॉ. विडुल भंडारे

Sampadak : Anna Bhau Sathe : Eak Parivartanwadi v

Dr. Vitthal Bhandare

प्रकाशक व मुद्रक :-मिलिंद माने अक्षरयात्रा प्रकाशन ६८६, सदाशिव पेठ, गौरी गणेश सी. क्मठेकर मार्ग, पुणे -३०. मो. ९८२२४५२०१२ email-aksharyatraprakashan@gmail.com

© सौ. चंद्रकला विञ्चल भंडारे प्लॉट नं. १२३, सावली निवास, पाण्याच्या टाकीजवळ, पूर्णा रोड, छत्रपतीनगर, नांदेड ¥. ७४४७४२४४३२

ISBN: 81-88083-11-9

प्रथमावृत्ती : १४ नोव्हेंबर २०२२ (लहुजी साळवे जयंती दिन)

अक्षरजुळणी : संतोव मुद्रणालय, कोथरूड

मुखपृष्ठ : प्रशांत भारताल, पुणे

मुल्य : २५० /-

अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील मूल्याविष्कार
 प्रा. डॉ. सुशीलप्रकाश यादवराव चिमोरे

प्रस्तावना :

समाज हा विविध जात, धर्म समुहाने बनलेला असतो. प्रत्येक धर्म, जात ही इतरांपेक्षा चांगली आहे, श्रेष्ठ आहे हे दाखविण्याचा सतत अड्डाहास करीत असते. त्यातून समज गैरसमज निर्माण होतात त्यामुळे समाजात एकमेकांविषयी द्वेष, मत्सर, राग वाढत जातो. समाजात विषमता निर्माण करण्यात, संघर्ष निर्माण करण्यात लिंगभेद, वर्णभेद आणि वर्गभेद हे तीन घटक कारणीभूत असतात. हे भेद कायम ठेवणारा गट आणि हे भेद, नष्ट करणारा एक गट यांच्यात सतत संघर्ष चालू असतो. पर्यायाने हे भेद कायम राहिले तरच फायदा आहे असे मानणारा समूह संख्येने मोठा आहे, त्यांच्या पाठींशी प्रस्थापित व्यवस्था खंबीर उभी आहे. येथील धर्मग्रंथ, पोथी पुराण, खोट्या आख्यायिका यांचा आधार घेऊन विषमताधिष्ठ समाज कायम ठेवण्याचा प्रयत्न लिंगभेद, वर्णभेद, वर्गभेद मानणारा गट सातत्याने प्रयत्न करतो आहे. अशा विषमताधिष्ठ समाजात लिंग, वर्ग, वर्णभदेामुळे स्त्रीपुरुष, सुवर्ण, अवर्ण, भांडवलदार, कामगार, गरीव, श्रीमंत यात सतत द्वेष, मत्सर, अहंकार, वडेजावपणा, अरेरावी, दहशत, सांस्कृतिक वेगळेपण यामुळे संवर्ष होतो. आणि समाजाचे आरोग्य विघडते. समाज धोक्यात येण्याचा संभव असतो. अशावेळी समाजातील जाणकार विचारवंत, अभ्यासक, समाजसुधारक, साहित्यिक समाजाचे आरोग्य चांगले रहावे. सर्वांनी गुण्यागोविंदाने रहावे यासाठी साहित्यातून विचार रुजविण्याचा प्रयत्न करीत असतात. हे विचार समाज चांगल्या पद्धतीने जीवन जगण्यासाठी मार्गदर्शक म्हणून कार्य करतात. त्यालाच मूल्य विचार असे म्हटले जाते. या पुल्यविचारांचा अविष्कार अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात कसा झाला

आहे याचा शोध या लेखात घ्यायचा आहे.

मूल्य म्हणजे काय? 'मूल्य' या शब्दाचा मूळ अर्थ आर्थिक असला तरी जीवनाच्या इतर क्षेत्रात ही संकल्पना वापरली जाते. वस्तूंचा चांगले, वाईटपणा, इष्टानिष्टता म्हणजे मूल्य. मानवी जीवनाशी मूल्यांचा घनिष्ठ संबंध येत असते. मूल्य घेऊन जगतो यावर अवलंवून असते. एखाद्या वस्तूचे मूल्य त्या वस्तूच्या दर्जावर ठरत असते. उदा. टवटवीत मेथीच्या भाजीची पेंडी रुपये किंमतीने विकली जाते. तर दुसरी सुकलेली मेथीची पेंडी पाच रुपये किंमतने विकली जाते. दोन्ही मेथीच्या पेंड्या असून टवटवीत पेंडीला जास्त किंमत मिळते तर सुकलेल्या मेथीच्या पेंडीला कमी किंमत मिळते. म्हणजे वस्तूच्या दर्जावरून त्या वस्तूचे मूल्य ठरवले जाते. साहित्याच्या बाबतीतही हेच असते. ज्या साहित्यात मूल्य जास्त असते. त्या साहित्याचा दर्जाही जास्त मानला जातो. अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात कला मूल्यांचरेबर जीवन मूल्यांचा आविष्कार झालेला पहावयास मिळतो. त्यांच्या साहित्यात कला आणि जीवन मूल्यांचा सुंदर संगम साधलेले हे अक्षर साहित्य आहे. वक्रोक्ती, अनेकार्यता, सूचकत्व, औचित्य, अलंकार, रस, सेंद्रीयत्व या कलामूल्यांवरोवर, समता, स्वातंत्र्य, बंधूत्व, सामाजिक न्याय, मानवता, राष्ट्रप्रेम, सत्य, शील, औदार्थपणा, त्याग, उदारमतवाद इ. जीवन मूल्यांचा आविष्कर अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात झालेला पहावयास मिळतो ते खालीलप्रमाणे पाहता येईल. वक्रोक्ती हे साहित्याचे मूल्य आहे, कलावंत साहित्यात अनुभव कधीच सरळ सांगत नाही तर तो वक्रोक्तीपूर्ण पद्धतीने आपला अनुभव मांडत असतो. वक्रेकी विचार कुंचलाने मांडला. वक्रोक्ती हाच काव्याचा आत्मा असतो. वक्रोक्तीला काव्याच्या आत्मपदी बसविण्याचे सर्व श्रेय कुंचल्याकडे जाते. अण्णा भाऊची 'माझी मैना गावावर राहिली' ही लावणी वक्रोक्तीचे उत्तम उदाहरण आहे ते लिहितात 'माझी मैना गावावर राहिली, माझ्या जीवाची होतीया काहिली' ही लावणी कवी आणि त्यांची पत्नी यांची विरह कहाणी आहे. गरिबीमुळे पती पत्नीची ताटातूट होते. हा लावणीचा बाच्यार्थ आहे. हे कवीला या लावणीतून सांगावयाचे असले

अण्णा भाक साठे यांच्या साहित्यातील मूल्याविष्कार। १०३

.किंड सार किंद्र पाहित्याचा साहित्याचा दबी प्राप्त होतो. .क्षाहित्याचा दर्जा प्राप्त होतो म्हणूनच रस हे भूल्य महत्त्वाचे मानले जाते. शोकमव प्रसंगातून शोकस्माची निर्मिती झाली आहे. रसामुळेच साहित्याला वेडीपिशी झाली. तिन स्वतः चा देह जमिनीवर आदळून जीव दिला. अशा एडिकाम गगंर मुद्राम इर्रेतम् ि तामाभांग गिगरः मिगरः बेकालाम तद्य म्हेहला. गंगवार गायार करीत ती थावली. गंगवाचा मृतदेह पोराशी धरून झाडावरून पद्धन मेलेला पाहून लोकांना हादरा बसला. दुगीने पुन्हा हाहो इत्याम फ़िगंग' ,ड्रास्ट फ़िलक किरोजि निकान किरोग माह्य रसाची मिमिती वेथे झाली. (५४ १५) (भार होना माळ कादंवरीतील व्यान श्रेकून आला आणि आपलं कम कक लागला. अशा अकारे हास्व खुणा करीत आहेस?' हे ऐकून नाथा हसत बाहर पळाला नि तांडातल, मिमहाक्त्रम मुस्स मान हो के हैं हैह . छि छा साम में हैं में स्वायमाण वेईल, 'नाशा, बाहर जाकन तोंड रिकामं करून थे. नाहोतर ते तोंडातील क्तास्य स्थानी काशी आहे है प्राप्त कार्या कार्य माहित्यात एस निर्मित झालेली आहे. त्यांच्या 'कुरूप' कादंबरीत इति काम त्राणसा स्था है मूर आवश्यक असते. अण्या माक साहे वाचनीय होण्यासाठी रस आवश्यक असतोच. माहित्याला साहित्य म्हणून

जेलंका है साहित्याचे मूल्य असून त्यांता माहित्याचे बहाग माहित्याचा काहित्याचा साहित्याचा साहित्याचा असून त्यांता साहित्याचा असून त्यांता साहित्याचा असून त्यांता साहित्याचा असून त्यांता असून त्यांता असून त्यांता असून त्यांता साहित्याचा असून अस्वांता कामा साहित्याचा अस्यांता असून त्यांता त्यांत्या त्यांता त्या

हास्र लाइ मार मेर्गेम गिर्मकाक 'एकीक' क्युम्जर्क तिमीने एरवाताव लांचा सारा शोण दूर झाला. ती हसू लागली. अथा प्रकार औचित्यपूर्ण चमत्कारिक आवाज हे सर्व ती पोरं झाडाखाली बसून पाहू लागली. लांव हाताचे डगले, लालभडक रंग, वसकी नाक, गुबगुबीत गाल, पहारा देत होते. त्यांचा तो विचित्र पोशाख, खाली गुडध्यापवेतच घागर, योडशाच्या दावणी पहल्या होत्या. जागोजागी गोरे बहुकी घेकन छावण्या पडल्या होत्या. आंबराईत गीरे लोक लोकत होते. मोठमोठ्या बानूलाच तो सरकारी बंगला होता आणि त्या बंगल्याच्या सभोवती शुभ कादवरीत आश्रायाला अनुरूप अश्री वातावरण निर्मिती केली आहे. सडकेच्या मिमिती, सवाद, संघव भाषात्रीली होय. अण्णा भाक साठ यानी 'फोकेत' शिसते. औचित्व म्हणजे आयायायी अनुरूप असे घरना, प्रसंग, बातावरण मुर्गिष्ट मजीस म्कंसिक्याम मुस्ट म्यूप माधाक वर्ते मानीहर . निर्क मार्सिक केव काव्यक्तिक किममास् एकाव्यक्ति कार्य केविस स्मित्र आहे याची जाणीव लावणी बाचताना थेते. औचित्य म्हणजे योग्य अनुरूप, या लावणीला सेंदर्ध प्राप्त झाले आहे. या लावणीमध्ये वक्रीम्हि हे कलामूह्य अगर अपनम कमीन सक्क न संगता वक्कीन प्राप्त कार्या है। िक तम्ब , निवन हो है तिहान निमा निनि तार्गामहम कर्म नाए भिकाले परंतु मराठी भाषिक राज्यातील बेळगाव, कारबार, निगमी अशी तरी, या लावणीत अनेकार्थता असलेली पहाबयास मिळते. कवी आपला

यह हे साहित्याचे मूल्य आहे. भरतमुनीनी आपल्या नाट्यशाख था प्रथात रसाची चर्चा केली असली तरी काव्याच्या आस्पप्टी बस्चिण्याचे सर्व श्रेय विश्वनाथाकडे जाते. त्याने काव्याची व्याख्या करताना 'वाब्यं रसात्मकं काव्यम' अशी केली आहे. जेवणात रस निवन पमाने वारत जेवण करावेसे वारत नाही. जीवनात रस नसेल तर जीवन णमावे वारत नाही, काहत साहित्यात रस नसेल तर साहित्य

जिग्न आर्णेंड सार 1मीष्ट 1लाफजी।म भागशींफ्जूम 1म घनमीरिट मूण्ज्य

.कासाठी ओचित्य महत्त्वाचे मानले जाते.

प्रत्यय येतो, अशा वेगवेगळ्या रसा मुळे सहित्याला सौदर्य प्राप्त होते रस हे साहित्याचे मत्ये आहे. या मूल्यांमुळेच साहित्याला साहित्याचा दर्जा प्राप्त होतो. अण्णा भाऊंचे साहित्याचे मूल्ये आहे. अनेकार्थतेमुळेच साहित्याला साहित्याचा दर्जा प्राप्त हेत असतो. व्यक्ती, स्थल, काल, संदर्भ सापेक्ष अर्थ देण्याचे सामध्यं साहित्यात असते. अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्या अनेकार्थतापूर्ण असे आहे. ते लिहितात, 'जग बदल घालूनी घाव । सांगून गेले मला भीमराव । गुलामगिरीच्या या चिखलात । स्तून बसला का ऐरावत । अंग झाडूनी निघून बाहेरी । घे बिनीवरती घाव' अशा प्रकारे अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्याचे मूल्ये असून त्यामुळे साहित्याला साहित्याचा दर्जा प्राप्त होतो म्हणून अनेकार्थतेला विशेष महत्त्व असते. साहित्याचा अर्थ व्यक्ती, स्थलकालसापेक्ष, आणि संदर्भसापेक्ष बदलतो नवनवीन अर्थ देणे हे साहित्याचे जीवंतपणाचे लक्षण असते.

वैश्विकता हा लिलत साहित्याचा धर्म आहे. साहित्य हे स्थलकालसापेक्ष असते. साहित्यातील जीवनदर्शन, व्यक्तीरेखा मानवी जीवनाचे प्रतिनिधित्व करतात. अण्णा भाऊ साठे यांची 'फिकरा, माझा रिशयाचा प्रवास, स्टॅलिनग्राड आणि लेनिनग्राडचा पोवाडा' या कलाकृतीतून देशाबाहेर विदेशाचे दर्शन घडते. कलाकृती लेखकांनी लिहिली असली तरी ती एका व्यक्ती मनाची निर्मिती असली तरी ती संपूर्ण मानवी जीवनाचे प्रतिनिधित्व करते. त्या कलकृतीतील जीवन प्रत्येक व्यक्तीला माझे आहे असे वाटते. अण्णा भाऊंचे समग्र साहित्य चंदन, चित्र, वैजयंता, वारणेचा वाघ, माकडीचा माळ, बरवाद्या कंजारी, खुळंवाडी इ. कलाकृतीतील जीवन स्थलकालसापेक्ष असते. त्यामुळे वैश्विकता मूल्यांचा आविष्कार अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात झालेला पहावयास मिळते. अण्णा भाऊंच्या साहित्यातून जे जीवन आलेले आहे, ते सर्वव्यापी, समग्र मानवी जीवनाचे प्रतिनिधित्व करते. साहित्य हे प्रत्येक वाचकाला माझे असे वाटते तेव्हाच त्या साहित्यकृतीचे यश असते.

वैचारिकता हे साहित्याचे मूल्ये आहे. साहित्य समाजाला विचार देते. विचाराची वीजपेरणी करते. कोणतेही साहित्य विचार देण्यासाठीच जन्मलेले असते. म्हणून वैचारिकता हे साहित्यचे महत्त्वाचे मूल्य मानले जाते. अण्णा भाऊंनी 'जग वदल घालूनी घाव' या कवितेत विषमतावादी समाज नष्ट करून समताधिष्टित समाज निर्माण करण्यासाठी या देशातील वर्ग आणि वर्ण व्यवस्था समूळ नष्ट केली पाहिजे हा विचार दिला आहे. 'तारा' या कादंबरीत अनिल पाटील बंड्या वाघ या नावाने ताराच्या मदतीने दरोडे घालून श्रीमंतांना लुटतो. दरोड्यामध्ये दादासाहेव इनानदाराचा मृत्यु होतो. अशा दुष्ट वंड्या वाघालाही दुष्ट पद्धतीनेच मरावे लागते. जसे कर्म तसे फल मिळत असते हा विचार अण्णा भाऊंनी 'तारा' या कादंवरीत दिला आहे. 'खुळंबाडी' कथासंग्रहातील 'तीन भाकरी' या कथेत अदिकचा अहंकार, हेकेखोरपणा आणि हटवादी स्वभावामुळे कशी फसगत होते याचे वास्तव दर्शन या कथेत लेखकाने घडविले आहे. पोटात अन्न कमी नि डोक्यात अकल कमी असली की, असेच घडत असते हा विचार या कथेत दिला आहे. अशाप्रकारे विचार समाजाला देणे हा साहित्याचा हेतू असतो हा विचार अतिशय सूचकपणे कलावंत साहित्यातून रुजविण्याचा प्रयत्न करत असतो म्हणून वैचारिकता हे साहित्याचे मूल्य मानले जाते.

सेंद्रियत्व हे साहित्याचे आणखीन मूल्य आहे. साहित्यात सेंद्रीयत्व नसेल तर त्याला साहित्य म्हणता येत नाही. सेंद्रीयत्व म्हणजे अनेकातून एकत्वाची प्रचिती होय. अण्णा भाऊ साठे यांच्या 'फिकरा' कादंवरीत भावना, कल्पना, संघर्ष, भाषाशैली, अनेकार्थता, रस, अलंकार, कथानक, घटना प्रसंग, वातावरण निर्मिती, संवाद, व्यक्तीरेखा, विचार, निवेदन शैली, वर्णनकौशल्य अशा अनेक घटकातून फिकरा कादंवरीचे एकत्व साधले आहे यालाच सेंद्रीयत्व असे म्हणतात. सेंद्रीयत्व हे मूल्य अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात पहावयास मिळते.

सूचकत्व हे साहित्याचे मूल्य आहे. कलावंत साहित्यातून जे काही सांगतो ते सूचकपणे सांगतो. त्यातील कोऱ्या जागा सूज्ञ वाचकांनी भरावयाच्या असतात. साहित्यातील अर्थ ख्यंगार्थ स्वरूपाचा असतो. १) कृता जाणे प्रत्यय येतो, अशा वेगवेगळ्या रसा मुळे सहित्याला सौदर्य प्राप्त होते रस हे साहित्याचे मल्ये आहे. या मूल्यांमुळेच साहित्याला साहित्याचा दर्जा प्राप्त होतो. अण्णा भाऊंचे साहित्याचे मूल्ये आहे. अनेकार्थता हे साहित्याचे मूल्ये आहे. अनेकार्थतेमुळेच साहित्याला साहित्याचा दर्जा प्राप्त हेत असतो. व्यक्ती, स्थल, काल, संदर्भ सापेक्ष अर्थ देण्याचे सामध्यं साहित्यात असते. अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्या अनेकार्थतापूर्ण असे आहे. ते लिहितात, 'जग बदल घालूनी घाव । सांगून गेले मला भीमराव । गुलामिगरीच्या या चिखलात । रुतून बसला का ऐरावत । अंग झाडूनी निघून वाहेरी । घे विनीवरती धाव' अशा प्रकारे अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्या अर्थपूर्ण, भावपूर्ण, रसपूर्ण आहे. अनेकार्थता हे साहित्याचे मूल्ये असून त्यामुळे साहित्याला साहित्याचा दर्जा प्राप्त होतो म्हणून अनेकार्थतेला विशेष महत्त्व असते. साहित्याचा अर्थ व्यक्ती, स्थलकालसापेक्ष, आणि संदर्भसापेक्ष बदलतो नवनवीन अर्थ देणे हे साहित्याचे जीवंतपणाचे लक्षण असते.

वैश्वकता हा लिलत साहित्याचा धर्म आहे. साहित्य हे स्थलकालसापेस असते. साहित्यातील जीवनदर्शन, व्यक्तीरेखा मानवी जीवनाचे प्रतिनिधित्व करतात. अण्णा भाऊ साठे यांची 'फिकरा, माझा एशियाचा प्रवास, स्टॅलिनग्राड आणि लेनिनग्राडचा पोवाडा' या कलाकृतीतून देशाबाहेर विदेशाचे दर्शन घडते. कलाकृती लेखकांनी लिहिली असली तरी ती एका व्यक्ती मनाची निर्मिती असली तरी ती संपूर्ण मानवी जीवनाचे प्रतिनिधित्व करते. त्या कलकृतीतील जीवन प्रत्येक व्यक्तीला माझे आहे असे वाटते. अण्णा भाऊंचे समग्र साहित्य चंदन, चित्र, वैजयंता, वारणेचा वाघ, माकडीचा माळ, बरबाद्या कंजारी, खुळंवाडी इ. कलाकृतीतील जीवन स्थलकालसापेक्ष असते. त्यामुळे वैश्विकता मूल्यांचा आविष्कार अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात झालेला पहावयास मिळते. अण्णा भाऊंच्या साहित्यातून जे जीवन आलेले आहे, ते सर्वव्यापी, समग्र मानवी जीवनाचे प्रतिनिधित्व करते. साहित्य हे प्रत्येक बाचकाला माझे असे वाटते तेव्हाच त्या साहित्यकृतीचे यश असते.

वैचारिकता हे साहित्याचे मूल्ये आहे. साहित्य समाजाला विचार देते. विचाराची बीजपेरणी करते. कोणतेही साहित्य विचार देण्यासाठीच जन्मलेले असते. म्हणून वैचारिकता हे साहित्यचे महत्त्वाचे मूल्य मानले जाते. अण्णा भाऊंनी 'जग बदल घालूनी याव' या कवितेत विपमतावादी समाज नष्ट करून समताधिष्ठित समाज निर्माण करण्यासाठी या देशातील वर्ग आणि वर्ण व्यवस्था समूळ नष्ट केली पाहिजे हा विचार दिला आहे. 'तारा' या कादंबरीत अनिल पाटील वंड्या वाच या नावाने ताराच्या मदतीने दरोडे घालून श्रीमंतांना लुटतो. दरोड्यामध्ये दादासाहेव इनामदाराचा मृत्यु होतो. अशा दुष्ट बंड्या वाघालाही दुष्ट पद्धतीनेच मरावे लागते. जसे कर्म तसे फल मिळत असते हा विचार अण्णा भाऊंनी 'तारा' या कादंवरीत दिला आहे. 'खुळंवाडी' कथासंग्रहातील 'तीन भाकरी' या कथेत अदिकचा अहंकार, हेकेखोरपणा आणि हटवादी स्वभावामुळे कशी फसगत होते याचे वास्तव दर्शन या कथेत लेखकाने घडविले आहे. पोटात अन्न कमी नि डोक्यात अकल कमी असली की, असेच घडत असते हा विचार या कथेत दिला आहे. अशाप्रकारे विचार समाजाला देणे हा साहित्याचा हेतू असतो हा विचार अतिशय सूचकपणे कलावंत साहित्यातून रुजविण्याचा प्रयत्न करत असतो म्हणून वैचारिकता हे साहित्याचे मूल्य मानले जाते.

सेंद्रियत्व हे साहित्याचे आणखीन मूल्य आहे. साहित्यात सेंद्रीयत्व नसेल तर त्याला साहित्य म्हणता येत नाही. सेंद्रीयत्व म्हणजे अनेकातून एकत्वाची प्रचिती होय. अण्णा भाऊ साठे यांच्या 'फिकरा' कादंबरीत भावना, कल्पना, संघर्ष, भाषाशैली, अनेकार्थता, रस, अलंकार, कथानक, घटना प्रसंग, वातावरण निर्मिती, संवाद, व्यक्तीरेखा, विचार, निवेदन शैली, वर्णनकौशल्य अशा अनेक घटकातून फिकरा कादंबरीचे एकत्व साधले आहे यालाच सेंद्रीयत्व असे म्हणतात. सेंद्रीयत्व हे मूल्य अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यात पहावयास मिळते.

सूचकत्व हे साहित्याचे मूल्य आहे. कलावंत साहित्यातून जे काही सांगतो ते सूचकपणे सांगतो. त्यातील कोऱ्या जागा सूज वाचकांनी भरावयाच्या असतात. साहित्यातील अर्थ व्यंगार्थ स्वरूपाचा असतो. १) कुत्ता जाणे

१०६ । अण्णा भाउन साठे : एवा परिवंतनवादी विचार

अण्णा भाक साठे यांच्या साहित्यातील मूल्याविष्कार । १०७

आणि चमडा जाणे! (चंदन कादंबरी पृष्ठ १०५) २) हा जेल आहे, इथं दगडाचं मेण होतं (१०७), ३) 'बरं झालं, बिब्बा आपल्याच तेलानं जळतो (६८), ४) दुधाने तोंड पोळलं तर ताक फुंकून प्यावं. (४८), ५) जी अबू रानाच्या मोलाची असते तिच्याबरच दरोडा पडण्याची शक्यता असते. कवड्या कोण चोरत नसतं. ४७) कलावंत साहित्यातून जे काही सांगतो ते साहित्याचा विचार करता येत नाही. साहित्यात सूचकत्व या मूल्याला त्चकत्व वा मूल्यावरच साहित्याचे महत्त्व अवलंबून असते. सूचकत्वाशिवाय माध्यमातून सूचकपणे साहित्यातून कलावंत समाजाला काही तरी सांगत सूचकपणे सांगत असतो. अण्णा भाऊंनी 'चंदन' कादंबरीतून म्हणींच्या माध्यमातून सूचकपणे आपला विचार मांडलेला आहे. कमीत कमी शब्दाच्या अन्ययसाधारण महत्त्व असते. असतो. साहित्यात सूचकता नसेल तर त्याला साहित्य ही म्हणता येत नाही

सामजिक बांधिलकी ही मूल्बे अण्णा भाऊ साटे यांच्या साहित्यात कशी आली आहेत याचा शोध-र्या लेखात घ्यायचा आहे. 'खुळवाडी' कथासंग्रहातील आदरभाव, जिल्हाळा, नम्रता, संयमीतपणा, विद्रोह, नकार, स्वाभिमान, सामाजिक न्याय, उदारमतबाद, सहानुभूती, निर्भयता, सदाचार, सद्गुण, मूल्यांचा आविष्कार झाला की, साहित्य खऱ्या अथनि दर्जेदार ठरते. अण्णा जीवनबादी जीवन मूल्यांच्या आधारे करतात. साहित्यात कला आणि जीवन दत्तक घेऊन तिचे नाव मंजुळा ठेवतात. सखुबा खुलंबा लोकाना खुळा चाटतो खुळंबाडी कथा मार्नबताबादी मूल्ये जोपासणारी आहे. एका अनाथ मुलीला श्रेष्ट आहे याचा शोध पुढीलप्रमाणे घेता येईल समता, स्वातंत्र्य, वधुभाव. भाऊ साठे यांचे साहित्य जसे कलामूल्यानी श्रेष्ठ आहे तसेच जीवन मूल्यांनीही पण तो खुळा नसतो. मंजुळावर अतिप्रसंग करू पाहणाऱ्या कानेगावच्या पाटलाचा सखुद्याचा मुलुगा पिलाजी हात तोडतो. अशा प्रकारे स्त्रीचे रक्षण करणारी निर्मय, स्वाधिमानी व्यक्तीरेखा अण्णा भाऊ साठे यांनी साहित्यात उभी केती आहे. 'चरबाद्या कंजारी' या संग्रहातील 'बरबाद्या कंजारी' ही क्या बरबाटा समाजाचे भावविरव साकार करणारी आहे. बरबाट्याची साहित्याचे मूल्यमापन कलावादी कलामूल्याच्या आधारे करतात तर

मुलगी निल्ली आणि दिलारामचा मुलगा सैदबा यांचा विवाह होतो. श्रव रोगाने दिलारामचा मुलगा सैद्या मारतो. निश्ची हैद-याबरोबर एळून जाते. बरबाद्या कंजारी जमातीची जातपंचायत बसते. त्यात बरबाद्या की मुलगी पळून गेली असून त्याने घेतलेला हुडा पात देण्याचे ठाते. त्याला जातपंचायतीमध्ये पारंपरिक जातपंचायतीला नाकारणारी निर्भयता, बरवाद्या कंजाऱ्यामध्ये पाणी भरेन, पण जातपंचायतीने लावलेला दंड भएणार नाही. हा स्वाभिमान, शिक्षा देण्याचे ठरते. तेव्हा तो म्हणतो मी हॉटलानील पाणी पिईन, संडासातील पाहाबयस मिळते स्वाभिमान,निर्भवता या मृत्यांचा प्रत्यव या कथेत पहाबबास खूप सुंदर असतात. तिच्या दीराला तिचे डोळे आवडतात तेव्हा ती मी एका मिळतो. अण्णा भाऊचे 'डोळे' या कथेची नाविका गीता असून तिचे डोळे तेव्हा ती आपले सुंदर डोळं फोडून घेते अशी ही 'शील मूल्चे' जपणारी गीता नवऱ्याची बायको आहे याची जाणीव करून देते. पण तो तिला त्रास देतो. कथासंग्रहातील 'सुलतान' ही कथा लक्षणीय स्वरूपाची आहे. सुलतान अण्णा भाऊंनी 'डोट्टे' कथेत जीवंतपणे उभी केली आहे. 'खुळंबाडी' अनाथ आहे. गाबात काम आणि पोटभर खाबबत मिळत नाही म्हणून शहरात येतो. एका पानपट्टीच्या दुकानावर काम करतो. वोम्ब मोबदला म्हणून तो विर्याणीच्या हॉटेलात काम कातो., काही दिवनांनी तू विर्वाणी मिळत नाही आणि मुस्लीम आहे म्हणून मालक पगार वाढवून देत नाही म्हणून माल्काला थोडी ही सहानुभूती बाटत नाही; तो शेबटी तो कामाचा जास्त खातोस म्हणून मालक कामावरून काढतो. सुलतान मुस्लीम आहे शोध घेत फिरतो. सीनेमाचे पोस्टार पाहत असताना पोलीस भेटतो, त्याला तो भाकर मागतो पोलीस त्याला भाकर देत नाही. पोलीस सुलतानला मरेन पण चोरी करणार नाड़ी अशा प्रकारे स्वाभिमानो, चारित्र्य, हे मूल्ये भाकरीसाठी चोरी करण्यः। सांगतो तेव्हा सुलताना पोलिसाला म्हणतो, मी जपणारी व्यक्तीरेखा अण्ण भाऊंनी चित्रित केली आहे. 'फकिरा' कादंबरीत फिकर आणि त्याचे साथीदार बेडसगावचा मठ लुटतात तेव्हाच्या प्रसगातून मूल्यांचे दर्शन घडते, 'बाबा, हा बाडा धुऊन घेऊन जा परंतु.... या दोन मुर्लीची लग्न झालेली नाहीत. मी पदर पसरून भीक मागते. आमची अब्रु

अण्णा भाउङ साउँ यांच्या साहित्यातील मूल्याविष्कार । १०९

वाचावी म्हणून सर्व स्त्रीया आपआपल्या अंगावरचे दागिणे उतरून ठेवू लागल्या. तो प्रकार पाह्न फिकरा म्हणाला, ''आई, थांबा मी खिजना न्हेणार न्हाय, तुमास्नी ओरवडाय मी आलो न्हाय. कारण अब्रू खाऊन उपाशी मणसं जगत नसत्यांत जावा, आपल्या घरात बसा 'स्त्री सन्मान, औदार्यपणा, सहानुभूती, माणूसपण, त्याग, शील, संवेदनशीलपणा या मूल्यांचा प्रत्यय या कादंबरीत पाहावयास मिळतो. याच कादंबरीतील सत्तू भोसले मोडलेले संसार उभे करतो. स्त्रीयांवर अन्यय अत्याचार करणाऱ्या लोकांचे जीव घेतो. सई महारीण मराठा समाजाच्या चौगुल्याच्या शेतीच्या कुंपणाची लाकडे मोडते. गर्भार असलेल्या सई महाराणीला मराठा चौगुले मारतो. ती गरोदर असल्यामुळे पोटातल्य वाळाला मार लागू नये म्हणून ती जपते. तिला मारू नको ती गरोदर आहे हे सत्तू भोसले मथाजीला सांगतो परंतु मथाजी चौगुले ऐकत नाही तेव्हा सत्तू भोसले त्याला ठार मारतो. अशा प्रकारे स्त्रीयांवर अन्याय करणाऱ्या दुष्ट लोकांना ठार मारण्याची शिक्षा सत्तू भोसले देतो. सत्तू भोसले म्हणजे छत्रपती शिवाजी महाराज यांच्या विचारांचा वारसा चालवणारा 'फ़िकरा' कादंबरीतील ही व्यक्तीरेखा आहे. वर्तमानकाळात जातीसाठी माती खाणे चालू आहे. सत् भोसले आणि मथाजी चौघुले हे दोघे ही मराठी जातीचे आहेत. येथे जातीसाठी माती न खाता न्यायासाठीच जातीच्या माणसाला ठार मारणारा सत्तू भोसले सत्याचा कैवारी आहे. अण्णा भाऊंच्या साहित्यातील पात्रे जातीसाठी न लढता माती आणि माणसासाठी लढतात हे विशेष होय. स्त्रीसन्मान, निर्भयता, न्याय, सहानुभूती, संवेदनशीलपणा या मूल्यांचा प्रत्यय येथे येतो. तेव्हा सत्तू भोसले म्हणजे या परिसरातील स्त्रीयांना पाठचा भाऊ वाटतो. तेव्हा त्याला आयुष्य जास्त मिळावे म्हणून स्त्रीया जात्यावर ओव्या गात असतं 'नसले तरी माहेर, भाऊ असावा पाठीचा गरीवांचा वाली जसा, सत्यावा कुमुजचा सरलं माझे दलण, घास घालील शेवटचा आलविते देवराय, दे आऊक्ष सत्यावाला' अशाप्रकारे स्त्रीयांचा सन्मान आणि त्यांना संरक्षण देण्याचे काम सत्तू भोसले करतो. बंधूभाव, मानवतावाद या मूल्यांचा आविष्कार येथे झालेला पहावयास मिळतो. 'चंदन' या कादंबरीत विधवा चंदनाचा उपभोग घेण्याचा प्रयत्न द्याराम,

टायगर, गोपाळ करतात परंतु ती त्याच्या उपभोगाला वळी पडत नाही ती शीलरक्षण करते. पांडुबाबा तिला मुलीसारखा वागवतो, डॉक्टर तिला वहिणीसारखी मदत करतो. अशी मानवतावादाचा उद्घोष करणारी माणूस हे मूल्ये जपणारी पात्रे अण्णा भाऊंनी साहित्यात अधिक ताकदीने उभी केली आहेत. 'रत्ना' ही कादंबरी सैन्यदलातील यशवंतच्या पत्नीची करुण कहाणी आहे. यशवंतचा सैन्य दलातील मित्र विनायक त्याच्याच गावाचा असतो. तो गावाकडे गेल्यावर यशवंतची पत्नी रत्ना नवऱ्याची ख्यालीखुशाली विचारण्यासाठी विनायकच्या घरी जाते. यशवंतला पत्र पाठवण्यासाठी विनायककडून पत्र लिहून देते. विनायकच्या घरी कोणीही नसते. विनायक रत्नावर अतिप्रसंग करतो. ती गरोदर रहाते. तिचे दीर तिला मारून घराच्या बाहेर काढतात. आई ही तिला नातेवाईकांच्या घरी नेऊन ठेवते. तिला मुलगा होतो. आपण अतिप्रसंग केल्यामुळे रत्नाला वाईट दिवस आले. म्हणून विनायक यशवंतची माफी मागतो. काही दिवसांनी रत्नाचा मुलगा मरण पावतो. यशवंत नोकरीह्न गावाकडे आल्यानंतर तिला स्वीकारतो. तिला यशवंतच्या भावाने मारून घरातून हाकलून दिल्यामुळे तो गावाकडे ही जात नाही. स्त्रीसन्मान, उदारमतवाद, माणूसपण, सहानुभूती, प्रामाणिकपणा, संवेदनशीलपणा या मूल्यांचा प्रत्यय या कादंबरीत आलेला पहावयास मिळतो. 'आवडी' कादंबरीतील आवडीचे लग्न तिचा भाऊ फेफरं येणाऱ्या उत्तमशी करून देतो. तेव्हा ती धनाजी रामोशीशी आंतरजातीय विवाह करते. अण्णा भाऊंच्या साहित्यातील स्त्रीव्यक्तीरेखा व्यक्ती स्वातंत्र्याचा पुरस्कार करतात.त्या धाडसी, निर्भय, स्वाभिमानी, जातीपातीचा विचार न करता समता, मानवतावादाचा विचार करतात. अन्यायाच्या विरोधात बंड करतात. विषमतावादी व्यवस्थेला नाकारतात. माणूस हे मूल्य समजात रुजविण्याचा प्रयत्न करतात हे विशेष होय. 'चिखलातील कमळ' या कांदबरीतील 'तुळसा' ही मुरळी असून तिला सीता नावाची मुलगी होते. सावित्रीवाई मुरारी पाटलांची बायको तिच्या नवऱ्यानी मुरळीशी लग्न केले असून तिला मुलगी झालेली असते, तिचे नाव सीता असते. ती एका दिवशी सवित्रीवाईच्या वाड्यासमोर असलेल्या दुकानात येते. सावित्रीबाई ही कोणाची मुलगी आहे

अण्णा भाक साठे यांच्या साहित्यातील मूल्यायिकार । १९१

असे विचारते. तेव्हा तो दुकानदार सावित्रीबाईला मुरारी पाटलांचं नाव सांगतो, तेव्हा सावित्रीवाई सीताला माझी ही मुलगी आहे. म्हणून घरी घेऊन जाते. आपली मुलं सर्जेराव आणि जयसिंगराव यांना सीता तुमची बहीण आहे, अशी सांगते सर्जेराव आणि जयसिंगराव तिचे लग्न बळी रामोशाशी लावून देतात. अशाप्रकारे जातिधर्माच्या पुढे जाऊन समता, स्वातंत्र्य, बंधू भाव, सामाजिक न्याय, उदारमतवाद आणि माणूस या मुल्यांचा आविष्कार या कादंवरीत झालेला पहावयास मिळतो. 'वैजयंता'ही अण्णा भाऊंची गाजलेली कादंबरी आहे. वैजयंताच्या आत्मनिवेदनातून मूल्यांविष्कारांचा प्रयत्य येतो. 'मी एक सरळ तमाशा करीन नि, सरळ जाईन दुसरं मला मान्य नाही. तमाशा म्हणजे माझ्या देहाचं नम्र प्रदर्शन नव्हे. जनतेची मालकी माङ्या कलेवर आहे. शरीरावर नाही 'अशी, कला जीवनावर प्रेम करणारी पात्रे अतिशय जिवंत पणे अण्णा भाऊंनी चित्रित केली आहेत. शील, स्वाभिमान, निर्भयता अशा मूल्यांचा आविष्कार येथे आला आहे. असाच एक 'माझा रशियाचा प्रवास या प्रवासवर्णनातील प्रसंग आहे. अण्णा भाऊंना कझकीना म्हणाल्या, 'हे मास्को आमचं हृदय आहे. अण्णा भाऊंना आश्चर्य वाटलं ? मी ढेंगा टाकू लागलो. कझकीना म्हणाल्या तुम्हाला हे वातावरण कसं वाटतं अगदी माझ्या दिल्लीसारखं, याठिकाणी अण्णा भाऊंचे राष्ट्रप्रेम या मूल्यांचा प्रत्यय येतो. अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य मूल्यांधिष्ठीत स्वरूपाचे असृन मानवी जीवनाचे दर्शन घडविणारे आहे. त्यांच्या साहित्यातील मूल्य विचार समाजाचे आरोग्य निरोगी राहण्यासाठी उपकारक ठरतात. अण्णा भाऊ साठे हे सामान्य माणसाचे लेखक होते. सामान्य माणसाच्या दु:खाला त्यांनी सहानुभृतीने आणि तितक्याच आस्थेवाईकपणे वाचा फोडली सामान्य माणसाविषयी त्यांना कणव होती. सामान्य माणसाचे जीवनदर्शन त्यांच्याच भाषेत मांडल्यामुळे अण्णा भाऊंचे साहित्य वाचकाला अस्वस्थ करून सोडते हे विशेप होय. सामान्य माणसाची साहित्याच्या क्षेत्रात विकली करणारा समाजत लेखक म्हणून अण्णा भाऊ हे लोकप्रिय आहेत. म्हणूनच त्यांच्याविषयी माधवराव वागल म्हणतात, सामान्य माणसाला समजणारा समाजवादी लेखक मला दुसरा माहीत नाही. भटक्या विमुक्तांचं जीवन

चित्रित करणारा पहिला माणूस आहे. हे त्यांचे म्हणणे अधिक सार्थ वाटते. अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य समाजहितासाठी मार्गदर्शक आहे. त्यांचे साहित्य मूल्यवान असल्यामुळे त्याला वर्तमानकाळातही मोल असलेले पहावयास मिळते हे नकी खरे आहे.

222

7

असे विचारते. तेव्हा तो दुकानदार सावित्रीबाईला मुरारी पाटलांचं नाव सांगतो, तेव्हा सावित्रीबाई सीताला माझी ही मुलगी आहे. म्हणून घरी घेऊन जाते. आपली मुलं सर्जेराव आणि जयसिंगराव यांना सीता तुमची बहीण आहे, अशी सांगते सर्जेराव आणि जयसिंगराव तिचे लग्न बळी रामोशाशी लावून देतात. अशाप्रकारे जातिधर्मांच्या पुढे जाऊन समता, स्वातंत्र्य, बंधू भाव, सामाजिक न्याय, उदारमतवाद आणि माणूस या मुल्यांचा आविष्कार या कादंवरीत झालेला पहावयास मिळतो. 'वैजयंता'ही अण्णा भाऊंची गाजलेली कादंबरी आहे. वैजयंताच्या आत्मनिवेदनातून मूल्यांविष्कारांचा प्रवत्य येतो. 'मी एक सरळ तमाशा करीन नि, सरळ जाईन दुसरं मला मान्य नाही. तमाशा म्हणजे माझ्या देहाचं नप्र प्रदर्शन नंब्हे. जनतेची मालकी माझ्या कलेवर आहे. शरीरावर नाही 'अशी, कला जीवनावर प्रेम करणारी पात्रे आंतराय जिवंत पणे अण्णा भाऊंनी चित्रित केली आहेत. शील, स्वाभिमान, निर्भवता अशा मूल्यांचा आविष्कार येथे आला आहे. असाच एक 'माझा रशियाचा प्रवास या प्रवासवर्णनातील प्रसंग आहे. अण्णा भाऊंना कझकीना म्हणाल्या, 'हे मास्को आमचं हृदय आहे. अण्णा भाऊंना आश्चर्य वाटलं ? मी ढेंगा टाकू लागलो. कझकीना म्हणाल्या तुम्हाला हे वातावरण कसं वाटतं अगदी माझ्या दिल्लीसारखं, याठिकाणी अण्णा भाऊंचे राष्ट्रप्रेम या मूल्यांचा प्रत्यय येतो. अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य मूल्यांधिष्ठीत स्वरूपाचे असून मानवी जीवनाचे दर्शन घडविणारे आहे. त्यांच्या साहित्यातील मूल्य विचार समाजाचे आरोग्य निरोगी राहण्यासाठी उपकारक ठरतात. अण्णा भाऊ साठे हे सामान्य माणसाचे लेखक होते. सामान्य माणसाच्या दु:खाला त्यांनी सहानुभृतीने आणि तितक्याच आस्थेवाईकपणे वाचा फोडली सामान्य माणसाविषयी त्यांना कणव होती. सामान्य माणसाचे जीवनदर्शन त्यांच्याच भाषेत मांडल्यामुळे अण्णा भाऊंचे साहित्य वाचकाला अस्वस्थ करून सोडते हे विशेष होय. सामान्य माणसाची साहित्याच्या क्षेत्रात चिकली करणारा समाजत लेखक म्हणून अण्णा भाऊ हे लोकप्रिय आहेत. म्हणूनच त्यांच्याविषयी माधवराव वागल म्हणतात, सामान्य माणसाला समजणारा समाजवादी लेखक मला दुसरा माहीत नाही. भटक्या विमुक्तांचं जीवन

चित्रित करणारा पहिला माणूस आहे. हे त्यांचे म्हणणे अधिक सार्थ वाटते. अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य समाजहितासाठी मार्गदर्शक आहे. त्यांचे साहित्य मूल्यवान असल्यामुळे त्याला वर्तमानकाळातही मोल असलेले पहावयास मिळते हे नक्की खरे आहे.

श्रमिकांचे कैवारी : अण्णाधाऊ साठे संपादक : डॉ. पंजाब लक्ष्मणराव शेरे Shramikanche Kaivaree : Annabhau Sathe Edited by : Dr. Panjab Laxmanrao Shere

प्रकाशक कौशत्य प्रकाशन एन-११, सी-३ /२४/३, हडको, औरंगाबाद फोन : ९४२३७००७८९, ७०२०३७९८१० Email : gaikwad0ashok@gmail.com

> मुद्रक ओंकार प्रिंटर्स, औरंगाबाद

अक्षर जुळवणी, मांडणी व मुखपृष्ठ सत्यम प्रिंटस् ७० डी, सर्व्हिस इंडस्ट्रीज एरिया, सिडको, औरंगाबाद मो. ९५५२५३५९५२

© संपादक

प्रथम आवृत्ती : दि. १४ एप्रिल, २०२२ (डॉ. वाबासाहेब आंबेडकर जयंती दिन)



Ⅱला · ¥ २००/-

अर्पण पत्रिका



स्मृतिशेष : बळीराम पाटील



स्मृतिशेष : उत्तमराव राठोड

थोर समाजसुधारक स्मृतिशेष बळीराम पाटील व किनवट शिक्षण संस्थेचे संस्थापक अध्यक्ष, संसदपटू स्मृतिशेष उत्तमराव राठोड साहेब यांच्या श्रमिकांचे कैवारी : अण्णाभाऊ माठे संपादक : डॉ. पंजाब लक्ष्मणाव भी Shramikanche Karvarce : Annabhan Saha Edited by : Dr. Panjab Laxmanrao Shera

प्रकाशक कौशत्य प्रकाशन एन-११, सी-३ /२४/३, हडको, औरंगाबाद फोन : ९४२३७००७८९, ७०२०३७९८१० Email : gaikwad0ashok@gmail.com

> मुद्रक ओंकार प्रिंटर्स, औरंगाबाद

अक्षर जुळवणी, मांडणी व मुखपृष्ठ सत्यम प्रिंटस् ७० डो, सर्व्हिंस इंडस्ट्रीज एरिया, सिडको, औरंगावाद मो. ९५५२५३५९५२

© संपादक

प्रथम आवृत्ती : दि. १४ एप्रिल, २०२२ (टा. बाबासाहेब आंबेहकार जयंती दिन)



सर्वसामान्यांचा कैवारी : अण्णा भाऊ साठे

1

प्रा. डॉ.सुशील प्रकाश चिमोरे, उदगीर, मो. १९२२१६६५२६

कोणत्याही शाळेत न जाता स्वतःच्या कर्तृत्वावर प्रचंड आत्मविखास ठेवत साहित्याच्या शिखरावर यशाचे अस्तित्व कायम ठेवणारा लेखक, विचारवंत, महान प्रबोधनकार म्हणून अण्णा भाऊ साठे यांचे योगदान अनन्य साधारण आहे. अण्णाभाऊंचा जन्म १ ऑगस्ट १९२० रोजी वाटेगाव, ता. वाळवा, जि. सांगली येथे झाला. अण्णाभाऊंच्या व्यक्तिमत्त्वावर आईवडिलांचे संस्कार, वारणा खोऱ्याचा प्रभाव, तत्कालीन परिस्थिती, सभोवतालची माणसं, यातूनच त्यांचे व्यक्तिमत्त्व घडत गेले. मिक्झम गोर्की, कार्ल मार्क्स, टॉलस्टॉय, प्रिकन, रस्कीन, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, क्रांतीसिंह नाना पाटील, श्रीपाद डांगे या महापुरुषांच्या विचार कार्याचा प्रभाव त्यांच्यावर होता. संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, श्री.म.माटे, प्र.के.अत्रे, हरीभाऊ आपटे, ना.सी.फडके या साहित्यकांचे साहित्य त्यांनी वाचून काढले होते. अण्णाभाऊ निसर्गप्रेमी होते. पशु, पक्ष्यांना पाळणे, पोहणे, दांडपट्टा खेळणे, भालाफेक यात ते तरवेज होते. हा गुण त्यांच्या वारणा खोऱ्याच्या मातीनेच त्यांना दिला होता. अण्णाभाऊंना इथल्या व्यवस्थेने शिक्षण घेऊ दिले नाही म्हणून त्यांनी वाचन, लेखन यांची फारकत घेतली नाही तर शिक्षणावर आस्था ठेवून मिळेल ते पुस्तक वाचून काढले. वालुआई अण्णाभाऊंना 'तुका, शाळेत नाही गेलास तर तुला कुत्र्या मांजराच्या मौतेने मरावे लागेल !' अशी म्हणते तेव्हा अण्णाभाऊ आईला म्हणतात. 'संत तुकाराम, छत्रपती शिवाजी महाराज हे कोणत्या ही शाळेत न जाता मोठे झाले. तसेच मी सुद्धा कोणत्याही शाळेत न जाता मोठा होऊ शकतो!' हा आत्मविश्वास त्यांच्या ठिकाणी होता. अण्णाभाऊ हे स्वाभिमानी लेखक होते. ते कधीच रडत बसले नाहीत तर ते सतत लढत राहिले.

अण्णाभाऊंचे साहित्य हे रडणाऱ्या माणसांचे नसून लढायला बळ देणाऱ्या माणसांचे साहित्य आहे. दारिद्र्य गरीबी त्यांच्या पाचवीला पूजली होती. गरीबी आहे म्हणून त्यांनी परिस्थितीला दोप न देता तिच्याकडे सकारात्मक

अवस्था आहित वीतीयान आहेत. आपण्या स्ट्रिय बोक्टकामुळ आपण्याकते. अर वार्डट गुजरेचे पहाले स्थापन स्थापन क्षेत्र क्ष्यक्ष्य सार्थेट ज्ञानेचे पहाले स्थापून स्वतःच होत्ये प्राह्त चेणारी गीता क्ष्यक्ष्य सार्थेकरीतील विभावा शहर स्थापे क्ष्म प्रदेश कादेवरीतील विभावा जंदन आगण्यात बलालार क्रम प्रभावा अभीत फेव्या प्राचन वात प्रण वर्ताच्या कर्णाका करा क्षण करें की विश्वा अभी की , विश्वचंत्रा की को व्यक्तिका करता करिताल करता करिताल करता करिताल करता करिताल करता अपनात. अण्याभाकीच्या साहित्यातील पात्र समर्थन, त्याती अपून हरू संस्कृती संवर्धनासाती विविदान देखारी आहेत स्वेचे तील पुरुपाचा हर आपि देशाचा स्वाभिमान शीच अगणाचाउत्थ्या गर्वत्थ्याची विम्ही कर रोवित आणि सोवितांच्या जीवना ये महानुभूतीने दुःख मांडणारी त्यांच्या हाक्रमची, त्याग, बलिदान, शौर्य आणि संघर्याची कहाणी स्टांज हे अववापमा अने महित्य आहे. भटक्या विमुक्त, कुणबी, कामगार यांच्या जावनाचा मामाजिक, इंस्कृतिक आर्थिक दस्तऐवज म्हणजे अण्णाभाऊंचे माहित्य आहे. व्हणूनच क्रम्बाजना साहित्य-क्षेत्रातील इतिहासकार म्हटले जाते राज्य अण्णामा फ्रेन्या महित्यातील पात्रांना अन्न, वस, निवास या मूलभूत गोध्टी हो मिळत नाहीत. होंही ते निष्ठेने जीवन जगतात. अनाथ सुलतानला जगण्यामाठी भाकरोमाठी मंदर्व करावा लागतो. भाकर मिळत नाही, म्हणून तो चोगे करीत नाही, मरेन रण चोरी करणार नाही ही नैतिकता घेऊन, जीवन जगणारी माणमं म्वतःशी क्सी प्रामाणिक राहतात हे अण्णाभाऊंनी दाखवून दिले आहे.अण्णाभाऊंच्या 'भोमक्या' कथेतील भोमक्याला अंगभर वस्त्र मिळत नाही, भोमक्या, मुलतान वांना राहाण्यासाठी घर नाही, अशा नाही रे वर्गाची विकली माहित्यक्षेत्रात करणारे अण्णाभाक उपेक्षितांचे कैवारी होते. एवढेच नव्हे तर भटक्या विमुक्तांच्या दुःखाना 'माकडीचा माळ' कादंबरीतून वाचा फोडण्याचे काम पहिल्यांदा अण्णाभाऊनीच गेले. त्यांच्यातील जातपंचायत रीतीरिवाज, रूढी, परंपरा, लेकहरी, लोकविश्वास यांचा बारकाईने तपशील या कादंबरीत त्यांनी मांडला आहे. मरीआईचा गाडा, सापळा, थडायातील हाडं, तळण या कथा मराठी कथासाहित्यातील मैलाचा दगड असून त्या आंबेडकरी विचार प्रेरणेतून लिहिल्या आहेत. वेदना, विद्रोह आणि नकार या सूत्रीचा प्रत्यय या कथेतून पहावयास मिळतो. समाज परिवर्तनासाठी प्रबोधन करणाऱ्या या कथेतून अण्णाभाऊच्या प्रजा आणि प्रतिभेचा साक्षात्कार घडतो. या कथेत्न समाजाच्या डोळ्यात ने केले आहे. अण्णाभाऊ साठे यांर

अमिकांचे कैवारी : अण्णाभाऊ साठे 🙉

ď

1

मिळाली पाहिजे वासाठी आरोगन प्रयत्न करून मुंबई महाराष्ट्राला फिल्क् रेण्यात अण्णाभाऊ साठे आणि त्यांच्या लालबावटा कलापथकाचे गोन्द्रा अतिक्षय महत्त्वाचे होते. भारताला म्वातंत्र्य मिळाले पण भारतातील जनेक भाकरीचा परन सुटला नकता म्हणून 'यह आझादी हुठा है, हेन्न कि सक भाकरीचा परन सुटला नकता म्हणून 'यह आझादी हुठा है, हेन्न कि सक भूखो है' हा नारा अण्णाभाऊंनी कामगारांच्या मार्चात दिला. त्यांच्या महिक् कादंबरोवर 'फिकरा' नावाचा चित्रपट निघाला त्यांत अण्णाभाऊंनी मातळ्यक कादंबरोवर 'फिकरा' नावाचा चित्रपट निघाला त्यांत ओणा अमताना 'में एक भूमिका केली. पहिल्या दिलत माहित्य संमेलनात बोलत अमताना 'में एक भूमिका केली. पहिल्या दिलत माहित्य संमेलनात बोलत अमताना 'में एक रोपाच्या मस्तकावर तरली नसून दीन-दिलत आणा अभिमकांच्या तळळाटक रोपाच्या मस्तकावर तरली नसून दीन-दिलत आणा दीन-दिलतांचे मोटेन तरली आहे' असा वास्तववादी सिद्धांत मोडला. आणा दीन-दिलतांचे मोटेन तरली आहे' असा वास्तववादी सिद्धांत मोडला. आणा दीन-दिलतांचे मोटेन तरली आहे. उपल्यामाऊंचे साहित्य नीती, माली, व्यक्ती, राष्ट्रपक्तीचं त्यांनी सांगितले. अण्णाभाऊंचे साहित्य नीती, माली, व्यक्ती, राष्ट्रपक्तीचं महाराष्ट्रातून मो आलो आहे, असे सांगणा, असा महाराष्ट्र आणा फिवरायांवियां महाराष्ट्रातून मो आलो आहे, असे सांगणा, असा महाराष्ट्र आणा फिवरायांवियां अभिमान बाळगणारा महान लेखक, लोकप्रवोधनकार, राष्ट्रभक्त अण्णाभाइ होते.

रशियात अण्णाभाऊ 'दिलराम' नावाचे नाटक पहात होते. नाटक रशियन भाषेत सुरू होते. अण्णाभाऊ नाटक लक्षपूर्वक पाहत होते आणि मधून-मय्न काही वेळेला मोठमोठ्याने हसत होते. हे पाहून त्यांच्या रांगेतील एका प्रेसकान त्यांना विचारले, 'तुम्हाला रशियन कळतं 'छे, मुळीच नाही? अण्णाभाऊ.

'मग हसलात कसे?' त्यांनी पुन्हा विचारलं आणि मी उत्तर दिलं, 'खां कला ही सदैव काळवाशी मिड्न बोलत असते. तिला कानांची गरज भारत नाही' असा अण्णाभाऊंचा कलाविषयक दृष्टीकोन होता. ते कलाप्रेमी होते कलेवर जिवापाड प्रेम करणारे कलावीर होते.

वरवाद्या कंजारी कथा-संग्रहाच्या प्रस्तावनेत अण्णाभाऊ लिहितात. मरं जीवनावर फार निष्टा असून मला माणसं फार आवडतात. त्यांची श्रमणको महान आहे. ती जगतात, जगाला जगवतात, त्यांच्या बळावरच हे जग चाला त्यांची शुंज आणि त्यांचे यश यावर माझा विश्वास आहे. त्यांना विदूष कर्ण मात्र मला आवडत नाही. नव्हे मला भीतो वाटते... माणसांना वैफल्याच्या नावाखाली विद्रूप करू नये, असं माझं मत आहे. ते तलवारीवरच्या धुळीसाखं असतं. ती धृळ झटकृन तलवार लखलखीत करता येते. मी जे जीवन जाती पाहतो, अनुभवतो तेच मी लिहित्ये

श्रमिकांचे कैवारी : अण्णागाक साठे ७०

साहित्य माण्सकेंद्री आहे. माण्स हेच मूल्य साहित्यात्न त्यांनी पेरते आहि जपले आहे.

अण्णाभाऊ हे उपेक्षित, वंचित, बहुजन समाजाने नैजारी होते. त्यांच्यानान असलेली सहानुभूती, प्रेम आणि करणेत्नच त्यांची साहित्य लिहिले आहे अण्णाभाक हे बुद्धाची करुणा, महात्मा फुलेंची सहानुभूती आणि डॉ.बाबासाहेबांच कर्तव्य-तत्परता असलेले संवेदनशील लेखक होते. अण्णाभाऊंनी आपल्य भूमी आणि भूमिकेशी ठाम राहून साहित्य लिहिले हे वेगळेपण त्यांनी जपते आहे. माणसांच्या सुखदु:खाशी समरस होऊन आस्थेने साहित्य लिहून मानवतावादी विचार आचरणात आणण्यासाठी आपली लेखणी शिजविणारे, उपेशित कामगारांबर प्रेम करणारे त्यांचे कल्याण चिंतणारे आणि मानवतावादाची नवी वाट निर्माण करू पाहाणारे अण्णाभाऊ हे आघाडीचे लेखक होते. 'मला माणसं फार आवडतात, कारण ते जगतात आणि इतरांना जगवतात. त्यांच्या श्रमावरच जग चालते' हे सत्य सांगणारे अण्णाभाऊ महात्मा फुलेंच्या विचारांचे पाईक होते. अण्णाभाऊ हे समग्र मानवांचे चांगुलपण पाहणारे, हित जोपासणारे त्यांची कीर्ती अमर करणारे, माणसाचे गाणे गाणारे श्रेष्ठ माणूस आणि सत्यवादी लेखक होते. प्रस्थापित साहित्यिकांनी ज्या उपेक्षित वंचित, दुर्लक्षित, भरडल्या गेलेल्या समाजाला साहित्यात संधी दिली नाही त्या भटक्या-विमुक्तांना, शेतकरी, कुणबी, उपेक्षित समाजातील स्त्री पुरुषांना आपल्या साहित्याचे नायकत्व देऊन त्यांचा मोठेपणा साहित्यात मांडणारा आणि माणूस म्हणून सन्मान करणारा अण्णाभाऊ हा उपेक्षितांचा कैवारी अनाथांचा नाथ होता. दीनदुबळ्याचा पाठीराखा होता हे विशेष होय. अण्णाभाऊ हे गरीब होते. दारिज्ञांनी त्यांना हतबल केले होते. त्यामुळे त्यांना मार्क्सवाद जवळचा वाटत होता. अण्णाभाऊ कामगार होते. भाकरीसाठी त्यांना संघर्ष करावा लागत होता. त्यामुळे मार्क्सवादामुळे भाकरीचा प्रश्न सुटेल असे वाटणे त्यांना साहजिक होते. भांडवलदाराच्या शोषणात्न कामगारांना मुक्ती मिळावी, त्यांचे शोषण धांबावे अशी आशेची किरणे पहात साहित्य लिहिणारा आशावादी लेखक म्हणून अण्णाभाऊंचा आवर्जून उल्लेख

> बळ सुरू झाली. सांगली, सातारा ष्ट्रया चळवळीचे घडे देत होते. ब क्रिक्ळीत काम करू लागले.

क्ष नहीं. त्या बाबतीत मी स्वतःला बेड्क समजतो. माझी सारी पात्रे या ना क्षा नात्याने माझ्या आयुप्यात येऊन गेलेली आहेत. माझी माणसं ही वास्तव ह्या गार नाजा माणस हा वास्तव आहेत जिवंत आहेत... त्यांच्या गुणावगुणांची चर्चा मी करीत नाही. ते कार्य आहे। जनता आणि तिचे थोर विद्वान करतील अशी आशा आहे. अशा प्रकारे प्राणसावर त्यांच्या श्रमशवतीवर ग्रेम करणाऱ्या महान साहित्यिकाला कोणीही हामजून घेतले नाही. लालवावटा पथक बंद पडले. एकमेकांत मतभेद झाले. अण्णाभाऊंना कोणत्याही विचारांच्या व्यक्तीने, कुटुंबातील माणसांनी, समाजांनी, मित्रमंडळीने समजून घेतले नाही. पण अण्णाभाऊनी सर्वांना समजून घेतले. ंबल्या गांजल्या समाजाच्या या लेखकाने साहित्य क्षेत्रात तुकारामांचा वसा आणि वारसा जपला. स्वत: उद्ध्वस्त झाले पण समाजातील माणसांना प्रतिष्टा, सन्मान साहित्य क्षेत्रात मिळवून दिला. स्त्रीचे शील, पुरुपाचा पराक्रम आणि देशाचा स्वाभिमान जपण्याची शिकवण दिली. सर्वहारातील समाजावर लेखन करणाऱ्या या लेखकाची लोकप्रियता जगभर पसरली, पण त्यांचे मूल्यमापन हे जात निकषांच्या आधारे केले गेले, हे अण्णाभाऊंचे दुर्दवच म्हणावे लागेल! साहित्य, समाज, आणि समीक्षा या क्षेत्रात सगळीकडे त्यांची उपेक्षा झाळी. त्यांनी भोळ्या, भावङ्या, गरीव, उपेक्षित, वंचित जनतेची कदर केली. ह्याच लोकांनी अण्णाभाऊवर प्रेम केले. त्यांचे साहित्य माणुसकीचे नाते सांगणारे, माणूस, समाज, देश यांना जोडणारा दुवा आहे. त्यांचे साहित्य लोकभक्ती आणि राप्ट्रभक्तीची महती गाणारे आहे. या महाराप्ट्र भूमीचे नंदनवन व्हावे, इथे समता नांदावी, समाजात सलोखा राहावा अशी उदात्त स्वप्ने पहात भारताचे उज्जल स्वप्न पाहाणारा हा महामानव खरा देशभवत होता. अण्णाभाऊंचे साहित्य सत्तावीस भाषेत अनुवादित झाले, ही अभिमानाची बाब आहे.

H A

10

南南南南西西南

संयुक्त महाराष्ट्र राहिला पाहिजे यासाठी सर्वतोपरी प्रयत्न करणाऱ्या या गाहिराने लिहिलेली 'माझी मैना' ही लावणी मराठी साहित्य क्षेत्रातील बावन्नकशी सोनं आहे. अण्णाभाऊनी विश्वव्यापी स्टालिनग्राड, लेनिनग्राड पासून ते महानगरीय जीवन तसेच सामान्य माणसाचे जीवनदर्शन साहित्यात मांडले. भारतात वेगवेगळ्या उपाधी आणि विशेषणे देऊन गौरव करणारे एकमेव लेखक म्हणजे अण्णाभाऊ हे होत. अण्णाभाऊ हे जनतेची कदर करणारे लेखक होते, म्हणून जनता ही अण्णाभाऊंची वर्तमानकाळात कदर करते. हे भाग्य फक्त अण्णाभाऊनाच लोमले, ही विशेष वाव मानायला नी अण्णाभाऊ आणि स्मांचे माहित्य

श्रमिकांचे कैवारी : अण्णामाऊ साउं १६८

दृष्टीने पाहिले. गरिबी आणि दारिद्रशाच्या विरोधात ते ल्वन के भांडवलदारांच्या शोषणाविरुद्ध लढा उभा केला. मला गड़गाल क्व के मला आफ्रोश आणि लढा मान्य आहे असे म्हणणाऱ्या या प्रश्नपुरुषक समाज निर्मिती करण्यासाठी, अन्यायाविरुद्ध लढायला शिक्क के गरीबी अनुभवली, पाहिली. ते जगले. त्यातूनच त्यांच्या अनुभवला के रहेदत गेल्या. त्यांना वर्ण. वर्ग. लिंग. प्रदेश. या भेदांना नाहीस करण के अधारलेला मानवतावादी समाज निर्माण करायचा होता. त्यांनी ममावल सर्व माणसांना आपल्या साहित्यात स्थान दिले. या सर्वांचे जीवन अति आस्थेने साहित्यात मांडले. विधवांचा पुनर्विवाह, अज्ञान-अंधः श्रद्धा हुंडक्ट जातिभेद, जातपंचायत, वर्ग, वर्ण भेद नाहीसा करून समताधिष्ठित सम्बद्ध दृष्टी असलेला समाज त्यांना निर्माण करायचा होता. विज्ञानवादी, विवेशं प्रज्ञाशील समाजाचे स्वप्न पहात ते लेखन करत होते. त्यांना वादाभेदांशा माणूस प्यारा होता. व्यक्तीच्या श्रमावर, त्यांच्या जगण्याच्या निष्टेवर त्यांने प्रेम केले. ते विशाल हदयाचे महान लेखक होते.

अण्णाभाऊंनी सर्वहारातील स्त्री-पुरुषांना आपल्या साहित्यात मानसन्मान प्रतिष्ठा मिळवून दिली. व्यवस्थेने नाकारलेल्या माणसाचा स्वीकार करून त्यांनी. त्यांना आपल्या साहित्याचे नायक केले. प्रस्थापितांच्या साहित्याला माण्न मूल्यांची जाणीव करून दिली. सर्व सृष्टीचा निर्मिक माणूस असून तोच खऱ्य अर्थाने महान आहे म्हणून पुराण किंवा दगडाच्या देवाला नाकारून माणसांचे मोठेपण मान्य करून त्यांचीच महती साहित्यात गायिली. त्यांनी व्यक्तीच्या बाह्य सींदर्यापेक्षा आंतरिक सींदर्यला महत्व दिले. अण्णाभाऊंच्या साहित्यातील व्यक्ती परिस्थितीने हतबल झाला असला तरी चारित्र्यासंपन्न, विवेकी आणि राहाणा आहे, याचा प्रत्यय कोंबडी चोर रामू या पात्रामधून लक्षात येतो. अण्णाभाऊंच्या साहित्यातील माणसं वास्तवातील असून ती त्यांनी पाहिलेली आहेत, त्यांच्या सोबत राहिलेली आहेत. सुलतान, भोमक्या, मुकूल मुलाणी. ही माणसं अमरावतीच्या तुरुंगात होती. तीच माणसं त्यांनी आपल्या साहित्याचे हा माणस जनस्याः नायक केले. साहित्य लिहिण्यासाठी इतरत्र भटकंती करण्याची गरज नाही तर नायक कल. स्वार्क आजुबाजुर्ची माणसंच साहित्याचे विषय होऊ शकतात; हे त्यांनी सिद्ध करून साहित्यातील पात्र परिस्थितीने गरीब आहेत पण मनाने श्रीमंत ळ शिक्षण नाही पण ती कमालीची 💳

श्रमिकांचे कैवारी : अण्णाभाऊ साठे /७४

कोणत्या ही वाद्यांचे नाही तर माणसांचे आहे. माणसांसाठी आपली लेखणे झिजवणारा अण्णाभाऊ सर्वांचा आहे. त्यांच्या विचारांचा वसा आणि वारमा जपून ठेवणे, मानवतेचे गीत गात समाजात सलोखा निर्माण करणे, समता, स्वातंत्र्य, बंधुभाव, सामाजिक न्याय ही मूल्ये समाजात रुजविण्याचा प्रयत्न करणे म्हणजे आपण अण्णाभाऊंचे अनुयायी होणे किंवा अण्णाभाऊमय होणे असते. विचार, समाज, तत्त्व आणि आचारांची बेरीज करून विषमतेची, दुष्ट चालीरीतीची, आप-आपसातील वैराची वजाबाकी केल्याशिवाय अण्णामाऊंचा मानवतावादी समाज निर्माण होणार नाही. त्यासाठी सर्वतोपरी प्रयत्न करणे म्हणजे अण्णाभाऊच्या विचार वाटेने जाणे होय.

मरावी साहित्य समाज आणि संस्कृती

प्रा. डॉ. विठ्ठले जम्बाले डॉ. सर्जेराव रणखांब डॉ. राजेश्वर दुडूकनाळे



Scanned with CamScanner



मराठी साहित्य : समाज आणि संस्कृती Marathi Sahitya : Samaja Aani Sanskruti

© प्राचार्य, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

ISBN: 978-93-95710-77-0 पुस्तक प्रकाशन क्र. ११०९

> प्रकाशक व मुद्रक युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देविदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे- ४२४ ००१.

संपर्क : ९४०५२०६२३०

जळगाव : शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहूनगर हौसिंग सोसायटी,

तेली समाज मंगल कार्यालयासमोर, जळगाव- ४२५ ००१.

संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७ ई-मेल: atharvapublications@gmail.com वेवसाइट: www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २ मार्च २०२३ अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य: ६५०/-

E-Book available on amazon.in . GooglePlayBooks . atharvapublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक राखून ठेवले आहेत. या पुस्तकातील लेखातील अभ्यासकांनी मांडलेल्या मताशी प्रकाशक, मुद्रक, संपादक मंडळ, प्राचार्य सहमत असतीलच असे नाही.

२ । अथर्व पव्लिकेशन्स्

संत चोखामेळा यांच्या अभंगातील विद्रोह

- डॉ. म. ई. तंगावार श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय, उदगीर जि. लातूर.

विद्रोह म्हणजे आक्रस्ताळेपणा, अरेरावी, भांडखोरवृत्ती किंवा हिंसेसाठी प्रेक असलेल्या विचारांची केलेली मांडणी नव्हे. पशुपातळीवरचे जीवन न जगता माणसांनी माणसासारखे जीवन जगले पाहिजे. 'मी माणूस आहे' या तीन शब्दांचा विसर ज्यांना पडलेला आहे त्यांच्या विरोधात फुंकलेली तुतारी म्हणजे विद्रोह होय. मला माणूस म्हणून जगायचे आहे. बरं बोलण्यापेक्षा मला खरं बोलायचं आहे. माझे ते सत्य नसून सत्य तेच माझे आहे. यासाठी केलेला अट्टाहास म्हणजेच विद्रोह. विद्रोहाच्या आत्म्याचा हुंकार हा सनशीलतेच्या पलीकडे गेलेला असतो. प्रेम, करुणा, स्वातंत्र्य, समता, वात्सल्य, आपुलकी, जिव्हाळा, मानवता व नैतिकता ही विद्रोहाची भावंडे आहेत.

विद्रोह म्हणजे 'शतुत्व'', 'वैर'', 'बंड पुकारणे'' असा अर्थ शब्दकोशामध्ये सांगितला गेला आहे. डाॅ. आ. ह. साळुंखे 'विद्रोही तुकाराम' या पुस्तकाच्या मुखातीच्याच स्वतंत्र पृष्ठावर खुलासा करताना लिहितात की, ''विद्रोही या शब्दाचा अर्थ 'अन्यायाविरुद्ध लढा उभारणारे असा आहे. 'द्रोही' या शब्दाच्या अर्थाशी त्याचा काहीच संबंध नाही'' विद्रोह जगण्याशी, मानवी जीवनाच्या साकल्याशी निगडित आहे. माणसाच्या माणुसकीवरील अपार प्रेमाचे नाते विद्रोहाशी आहे. 'दलित साहित्यातील विद्रोह संकल्पनेचे स्वरूप' या लेखात डाॅ. अनंत राऊत म्हणतात की, ''विद्रोही मन जी मोडतोड करू पाहते ती केवळ विध्वंस करण्यासाठी नाही, तर समतेवर आधारलेला मानवतावादी असा सुखी समाज त्याला निर्माण करावयाचा असतो. हे मन क्रूर स्वरूपचे आणि विध्वंसक नसते तर माणसाबद्दलचे खूप मोठे कारुण्य या मनामध्ये दडलेले असते.' 'पाकरी हेच माणसाचे अंतिम ध्येय नाही, नसावे. भाकरीसाठी संघर्ष करणाऱ्या भाजसी हेच माणसाचे अंतिम ध्येय नाही, नसावे. भाकरीसाठी संघर्ष करणाऱ्या भाणसाचेही एक मन असते. त्यां मनाचा, त्याच्या व्यथा, वेदनांचा वेध विद्रोही साहित्यकांनी आपल्या साहित्यातून घेतलेला आहे.

विद्रोहाच्या संदर्भात डॉ. यशवंत मनोहरांनी मांडलेले विचार मला अधिक ^{महत्त्वाचे} व समर्पक वाटतात. अतिशय सोप्या भाषेत त्यांनी विद्रोहाची संकल्पना

मराठी साहित्य : समाज आणि संस्कृती । २८३

स्पष्ट केली आहे, ती अशी की, "नकार जीवनाच्या विकासाचेच उगमसूत्र आहे ही सर्व प्रक्रिया विद्रोहाचीच आहे. या विद्रोहाचे प्रतीत्यसमुत्पादाशी नाते आहे. कारणाच्या पोटी कार्य जन्माला येते. आणि 'खाण तशी माती' वा 'माय तशी लेक' असेच म्हणावे लागते. वाईटपणा पेरला तर वाईटपणा उगवेल, दुष्टता पेरली तर दुष्टता उगवेल. विषमता पेरा विषमता उगवेल. पण समता, माणुसकी आणि सज्जनत्व पेरले तर समता, माणुसकी आणि सज्जनत्व या गोष्टी उगवतील. दृष्टता, विषमता नाकारणे आणि समता, सज्जनत्व यासाठी संघर्ष करणे या प्रवृत्तीचेच नाव 'विद्रोह' असे आहे. इष्टांची निर्मिती हेच विद्रोहाचे प्रयोजन आहे." विद्रोह हा दलित साहित्याचा मुख्य गाभा आहे. दलित साहित्याचे विशेषतः कवितेचे नाते विद्रोहाशी असलेले दिसून येते. मराठीतील पहिले दलित कवी म्हणून संत चोखामेळा यांचा उल्लेख करावा लागतो. जसे आधुनिक महाराष्ट्रातील पहिले विद्रोही लेखक म्हणून महात्मा जोतिबा फुले ओळखले जातात, तसे मध्ययुगीन काळातील महाराष्ट्रातील पहिले विद्रोही संतकवी म्हणून संत चोखामेळ यांचा विचार करावा लागतो. तेराव्या, चौदाव्या शतकात चंद्रभागेच्या तीरावर वाळवंटात संत ज्ञानेश्वर व संत नामदेवांनी आध्यात्मिक लोकशाहीची स्थापना केली. संत चोखामेळा यांच्या जडणघडणीत संत नामदेवांचा वाटा सिंहाचा आहे. संत नामदेव जन्माला आले नसते तर 'विठ्ठल' भारतमय झाला नसता. चोखामेळा यांच्यासारख्या दलित कवींच्या कविताही जन्माला आल्या असत्या काय?

संत साहित्य संथ आहे. त्यात वर्तमानकाळ नाही, असा काही अभ्यासकांचा गैरसमज झालेला आहे. अन्याय, अत्याचाराच्या विरोधात संतांनीही वाचा फोडली. त्यातूनच विठ्ठलाचा धावा त्यांनी केला. याचेच एक उदाहरण म्हणून संत चोखामेळा यांच्या अभंगाचा विचार करता येईल. जातिभेदाविरुद्ध चोखामेळांनी विठ्ठलाकडे अभंगाद्वारे तक्रार नोंदवून स्वाभिमानाने जगण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला. समकालीन परिस्थिती, विठ्ठलाविषयीची करुणा, तमभितीआड आक्रंदणारी मानवता व वेदनेचा हुंकार हे चोखामेळांच्या विद्रोहाचे वेगळेपण म्हणून नोंदवता येईल. विविध विषयांवर चोखामेळांनी अभंग लिहिले आहेत. ज्या काही अभंगात त्यांचा विद्रोह प्रकट झालेला आहे त्या निवडक अभंगांचा शोध या ठिकाणी घेण्याचा हा अल्पसा प्रयत्न.

संत चोखामेळांची कविता सामाजिक दुःखाची व वेदनेची करूण कहाणी आहे. वेदनेतून विद्रोहाचा जन्म होत असतो. 'संत चोखामेळा यांचे अनेक अभंग असेच दुःख, वेदना आणि अश्रू यांनी चिंब भिजलेले आहेत.'' असे डॉ. निर्मलकुमार फडकुले यांनी म्हटले आहे. चोखामेळा यांचा आर्त स्वर हा विद्रोहाचाच आहे. ढोंगी, सोंगी साधू-संतांच्या संदर्भातला विद्रोह त्यांच्या

२८४ । अथर्व पब्लिकेशन्स्

अभंगातून पहावयास मिळतो. विषमतेविषयीची खंत चोखामेळांनी आपल्या असंख्य अभंगातून व्यक्त केली आहे. गरीब आणि श्रीमंत यांच्यातील दरी दिवसेंदिवस वाढत होती. समतेचा, ममतेचा व मानवतेचा ध्वज कुठेच फडकताना दिसत नव्हता. यासंदर्भात चोखामेळा लिहितात,

''एकासी वैभव राज्याची पदवी। एका गावोगावी भीक मागे। हाचि न्याय तुमचे दिसतो की घरी।।''

संत चोखामेळांच्या काळात धार्मिकतेचा, साधुत्वाचा व पांडित्याचा आव आणणारी मंडळी पावलोपावली होती. पोथ्या, पुराणाच्या आधारे हीच मंडळी बहुजनांचे शोषण करीत होती. यांच्यामुळेच बहुजन समाज अंधश्रद्धा व अज्ञानाच्या दरीत लोटला गेला होता. 'दया क्षमा शांती। तेथे देवाचि वस्ती' उक्तीप्रमाणे या मूल्याचा अंगीकार जो कोणी करेल तोच श्रेष्ठ माणूस होय. ही नीतिमूल्ये तर गुदमरून गेली होती. पोथीनिष्ठ माणसाचे आचार व विचार हास्यास्पद आहेत. यावरही चोखोबांनी आपला विद्रोह प्रकट केला आहे.

''धिक् तो आचार धिक् तो विचार। धिक् तो संसार धिक् जन्म ।। धिक् तो आसन जटाभार माथा। वाचावि हे कथा धरिली जेणे।।'' या अभंगात जळजळीत शब्दांत विद्रोहाची ठिणगी पडलेली आहे. ढोंगी साधूंच्या दांभिक प्रवृत्तीवरही संत चोखामेळांनी हल्ला चढविला आहे.

''उदंड शहाणे होवोत तार्किक । परी न कळे अलौकिक महिमा ।। काही संतांचे उदंड घेताती सोंग । कामनेचा त्याग करिता न ये।।'''°

संत चोखोबा स्वतःला शब्दपंडित समजणाऱ्या, तार्किक चर्चा करणाऱ्या पाखंडी साधूंना प्रश्न करतात की, अरे! हे तुमचं तार्किक शहाणपण श्रद्धा व भावनेवाचून समाजघातक आहे. यातून तुम्ही अलौकिक ईश्वराचा मिहमा जाणू शकत नाहीत. त्याकरिता श्रद्धाशील हृदयाची आवश्यकता आहे. अर्थात संत चोखामेळा बुद्धीबरोबरच भावनेला, मनाला व श्रद्धेलाही श्रेष्ठ मानतात. त्यासोबत ते म्हणतात की, जे ढोंगी साधू स्वतःला संत समजण्याचे सोंग करतात, पण त्यांना अजून कामवासनेवरसुद्धा विजय प्राप्त करता आला नाही, अशा तार्किक शहाण्या आणि ढोंगी, सोंगी साधूंवर पराकोटीची टीका त्यांनी केली. माणसाची ओळख जन्म, जात व धर्मावरून नाही, तर त्याच्या कर्तृत्वावर व्हायला हवी, असे चोखामेळांना वाटते.

संत चोखामेळा यांनी म्हटल्याप्रमाणे, रंगावरून अंतरंगाची परीक्षा करणे चुकीचे आहे. ऊस वाकडा असला तरी रस गोडच असतो. ही साधी गोष्ट येथील पंडित व उच्चवर्णीयांना अजूनही कळलेली नाही. ''ऊस डोंगा परी रस नव्हे डोंगा।

मराठी साहित्य : समाज आणि संस्कृती । २८५

1000

काय भुललासी वरलीया रंगा।।''' या अभंगातून वेगवेगळी उदाहरणे देऊन त्यांनी मानवी अंतरंगाचा शोध घेतला आहे. या अभंगात समाजाची कीव व सूचकतेन सौम्य विद्रोह प्रकट केला आहे.

संत चोखामेळा यांचा विद्रोह अध्यात्माचा झेंडा घेऊन विषमता पेरणाऱ्या ढोंगी माणसांच्या विरोधात आहे. पोटासाठी, स्वार्थासाठी वाटेल त्या मार्गाचा अवलंब करणाऱ्यांना उपहासाने त्यांनी 'माकड' म्हटले आहे. या शब्दात एक प्रकारचा व्यंगात्मक विद्रोह दिसून येतो. त्यांच्याच शब्दात सांगायचे झाले तर,

''माकडाचे परि हालविती मान। दावी थोर पण जगामध्ये।। चीखा म्हणे जगामध्ये भोंदू। तया कोण साधु म्हणे देवा''॥ ११

कुठल्याही गोष्टीची चिकित्सा, कार्यकारणभाव न समजून घेता अनुकरण करणाऱ्या ढोंगी, मतलबी माणसांवर शब्दरूपी चाबुकाचे कोरडे या अभंगातून चोखोबांनी ओढलेले आहेत. यादवकाळात असा विचार मांडण्यासाठी परिस्थिती अनुकूल नसतानाही संत चोखामेळांनी जो विद्रोह प्रकट केला तो विद्रोहचा टप्पा मला कितीतरी पुढचा वाटतो. ''बहुतेक अभंगांतून दलितांवर झालेल्या सामाजिक अन्यायाची खंत चोखोबांनी व्यक्त केली आहे. पण ज्या वेळी चोखोबा आध्यात्मिक उंचीवर जातात तेव्हा 'कोण तो सोवळा कोण तो ओवळा। दोन्हीच्या वेगळा विठू माझा।।' असे सर्वातीत उद्गार काढतात.''

संतत्वाचा पेहराव संत चोखामेळांना नसून ममतेचा व समतेचा अथांग सागर त्यांच्या अंतःकरणात भरलेला होता. त्यामुळे त्यांचे वाङ्मय अक्षरवाङ्मय ठरले आहे.

संदर्भ

- जोशी प्र. न. : 'आदर्श मराठी शब्दकोश' विदर्भ मराठवाडा बुक कंपनी, पुणे, १९७०, प. ११५२.
- तत्रैव : पृ.११५२. ₹.
- अग्रिहोत्री द. ह. : 'अभिनव मराठी-मराठी शब्दकोश' (भाग चौथा), व्हीनस प्रकाशन, पुणे, पृ. ४७८.
- साळुंखे आ. ह. : 'विद्रोही तुकाराम', लोकायत यशवंतनगर, सातारा, आवृती पाचवी, २००५, पृ. ८.
- ५. राऊत अनंत : 'विद्रोहमूल्य', कीर्ती प्रकाशन, औरंगाबाद, आवृत्ती पहिली २००५, 9. 88.
- मनोहर यशंवत : 'बुद्धिवादी सौंदर्यशास्त्र', युगसाक्षी प्रकाशन, नागपूर, आवृत्ती पहिली २००७, पृ. ९२.
- फडकुले निर्मलकुमार : 'संत चोखामेळा : अश्रृंची कहाणी', सुविधा प्रकाशन, सोलापूर, आवृत्ती पहिली २००३, पृ. २.

२८६ । अथर्व पब्लिकेशन्स

८. तत्रैव : पृ. ४. विकास सम्बद्धाः स्थापना स्यापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्यापना स्थापना स्यापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापन स्थापना स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना

तत्रैव : पृ. ३३.

१०. तत्रैव : पृ. ५३.

११. हेरे रा. चिं. : 'सकतलसंतगाथा (गाथापंचक खंड पाचवा), वरदा प्रकाशन, पुणे, आवृत्ती नववी १९८३, पृ. १४८.

उ. नि. : 'संत चोखामेळा : अश्रूंची कहाणी', पृ. ६५. 82.

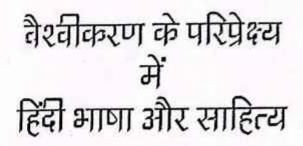
१३. निसराबादकर ल. रा. : 'प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास', फडके प्रकाशन, कोल्हापूर, आवृत्ती चौथी १९९१, पृ.८१.

the state of the party of the same in the same time.

BEACH DESIGNATIONS STREET, STREET, LOS CONTROLLES CONTR

THE PERSON NAMED AND POST OF THE PERSON OF T

· Differ produces a little section of the product of the little section of the little se



संपादक प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे सह-संपादक डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर



संकल्प प्रकाशन कानपुर (उ.प्र.) इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक, संगदक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रजाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानुनी अपराध है।

ISBN : 978-93-91435-43-1 प्रथम संस्करण, 2022 े संपादकाधीन

पुस्तक

: वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य

संपादक

: प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे

सह-संपादक

: डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर

प्रकाशक

: संकल्प प्रकाशन

1569/14 नई बस्तो बक्तीरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नीबस्ता,

कानपुर (उ.प्र.)-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email: sankalpprakashankanpur@gmail.com

website: www.sankalpprakashan.com

मूल्य

: ₹395/-

शब्द-सज्जा

ः रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नीवस्ता, कानपुर-21

आवरण

: गीरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रक

ः सार्थक प्रिंटर्स, नौचरता, कानपुर-21

समर्पण

सभी हिंदी प्रेमियों को

अनुक्रम

Lat not the second seco

4		1500		
ा का		4	हिंदी का वैश्वक स्वरूप – चीन के सन्दर्भ में	
म की	354		डॉ. बिबेक मणि त्रिपाठी	11
कोने	8,5	2.	हिंदी साहित्य में चित्रित वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण	
ाध्यम			डॉ. प्रतिमा तिवारी	17
1 का		280	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य वृध्दों की संवेदना	100
ज् माञ		3.	डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड	29
गीरव		1041	आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी- प्रवासी हिंदी स	
पाओं पहरा		4.		34
^ग मई			आशा राठीर	34
इसे		5.	नवनिर्माण-नवसृजन-नवचेतना का बहुआयामी स्वरूप- हिंदी	
थी।			डॉ. (श्रीमती) अर्चना दीवान	
ı. st.			डॉ, (श्रीमती) कविता ठक्कर	40
त्या (6.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता	
य पर			प्रा. इंदलकर सुभाष शंकराव	45
भिन्न		7.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य	
गया			सतपाल सिंघ भनमोहनसिंघ कामठेकर	48
हसाव		8.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	
। पूरा		0.	डॉ. संगीता वर्मा	51
वेचार			1 3 4 1 5 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	31
		9.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य	1380
			प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे	56
27277		10-	CONTRACTOR	
ादार ालय,			डॉ. मो. माजिद मियाँ	58
		11.	विश्व स्तर पर हिंदी का परचम	
आतूर			डॉ. बाळू भोणू राठोड	67
		12	वैश्वीकरण का यथार्थ 'दोंड़' उपन्यास	0,
		0.00	डॉ. तकाराम चाटे	71
			अ. तकाराम वाट	71

13.	वेश्वोकरण से प्रभावित जयश्री राय की कहानियाँ	*1
	अर. डा. साळके शिवहार भन्नागरन	100
14.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता	. 75
	ं डा. सताब विजय यरावार	.00
45.	वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप	82
	प्रा. विरादार व्ही. जी.	. 88
16.	हिंदी भाषा के वैश्वीकरण में विद्वानों का थोगदान	
	डॉ, पांडुरंग चिलगर	92
17.	वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य	
	डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील	98

S. Wen man

वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप

· ft

· fi

. 3

. .

. .

12

7

3

-प्रा. विरादार व्ही. जी.

"भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित, यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज-विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।" भाषा की यह सामान्य परिमाषा दुनिया की सभी भाषाओं की परिभाषा है। इस परिभाषा के परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा की रिशति को परखना ही मेरे आलेख का प्रमुख उद्देश्य है। मेरे आलेख का हेतु यह है कि किसी भावनिक कथन या किसी भाषा से प्रेम या घृणा की बजाए निपक्ष होकर विषय को प्रस्तृत किया जाए।

'वंश्वीकरण' यह विकसित देशोंद्वारा निर्मित वाजारवाद का दूसरा नाम है। वस्तुओं को खरिदने या वैचने के भौगोलिक और प्रादेशिक वंधनों को तोडकर व्यापार करने की एक खुली प्रक्रिया है। इसके मूल में 'अर्थ' और 'व्यापार' प्रमुख है। यह इघर के दिनों में सभी देशों के संदर्भ में निर्मित एक प्रक्रिया है। इससे कोई देश अछूता नहीं है। इस प्रक्रिया से दूर रहा तो भी वह अधिक दिन तक दूर रह नहीं सकेगा। इस प्रक्रिया ने हिन्दी भाषा में काफी परिवर्तन किए हैं।

वैश्वीकरण ने सारी दुनिया को एक जगह लाने का प्रयास किया है। सारी दुनिया एक हो रही हैं- उद्देश्य भले ही कुछ रहें। इस प्रक्रिया में दुनिया के एक कोने का व्यक्ति विश्व के दूसरे देश के व्यक्ति के संपर्क में आ रहा है। इस स्थिति में उनमें विचारों के आदान-प्रदान का साधन क्या है? कोई एक भागा है। अर्थात वैश्विक स्तर पर मुख्य साधन अंग्रेजी भाषा है। यही रिशति हमारे देश के अंतर्गत हिंदी की है। जब एक समाज, देश का व्यक्ति जब दूसरे समाज या देश के व्यक्ति के संपर्क में आएगा तो उनमें विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति, भाषा, आचार-विचार आदि का एक-दूरारे पर प्रभाव पड़ना स्वामाविक है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में हिंदी भाषी भारतीय समाज का अंग्रेजी भाषा वोलनेवाले लोगों के संपर्क में आने से भाषाई प्रभाव पडना स्वाभाविक था और हुआ वही। जब पहले अंग्रेजी केवल पढाई में प्रयुक्त होती थी वह आज वोलचाल में कम अधिक मात्रा में प्रयुक्त हो रही है। हिन्दी भाषा में अंग्रेजी के अनेक शब्द प्रयुवत होने लगे हैं। परिणाम स्वरूप दीनी भाषाओं के मिश्रण से एक तीसरी भाषा आज निर्माण हो चुकी है। वास्तविकता

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य / 89

यह है कि उसे सरकारी स्तर पर 'हिंग्लीश' के तौर पर मान्यता मिलने की भी तैयारीयाँ हो रही हैं।

भारत में हिन्दी के साथ जिस अंग्रेजी का मित्रण हुआ है ऐसे ही हिन्दी अय केयल भारत तक सीमित नहीं रही है अपित वह आज दुनिया के अनेक देशों में वहाँ की भाषाओं के साथ विकसित हो रही है। यह वैरवीकरण का ही परिणाम है। अन्तर केवल इतना है कि भारत में अंग्रेजी से मिश्रित भाषा अधिक तीवता से विकसित हो रही है तो विदेशों में हिन्दी से निश्रित भाषा की यह प्रक्रिया धिनी है। जहाँ अंग्रेजी हिन्दी में निलकर यहाँ स्वानाविक रूप से विकसित हो रही है वही हिन्दी विदेशों में पढ़ने-जानने के लिए अनेक विश्वविद्यालयों-कॉलेजों में अध्ययन-अध्यापन के माध्यम से विकसित हो रही है। दुनिया की दुष्टि से हिंदी अब केवल भारत की भाषा नहीं अपितु वह भारत में व्यापार करने का माध्यम बनी है। भारत में व्यापार करने के लिए दुनियाँ के अनेक लोग हिंदी सीख रहे हैं। वह हिंदी भारत की शुद्ध हिन्दी नहीं है अपित् वह वहाँ की भाषाओं के मिश्रण से निर्मित नई हिन्दी है। उसका स्वरूप बदलकर सामने आ रहा है।

वैश्वीकरण के कारण आज वर्तमान हिन्दी भाषा की स्थिति ऐसी है कि वह अपना मूल रूप गैंवा चूकी है। वर्तमान हिन्दी में अंग्रेजी भाषा के शब्दों की संख्या अधिक हो चुकी है। बोलने, लिखने, सुनने में किताबों में ढेर सारे अंग्रेजी भाषा के शब्द आ रहे हैं। वाक्यरचना भी 'कर्ता-कर्म-क्रियापद' की जगह अन्य प्रकार से लिखी जा रही है। वाक्यरचना में बहुत सारा बदलाव हो रहा है। व्याकरण के वंधन, नियम टूट रहे हैं। यह सारा वैश्वीकरण का ही परिणाम है। यह सब जान-बूझकर नहीं हो रहा है। दुनिया का कोई भी व्यक्ति अपनी भाषा को छोड़कर किसी दूसरी भाषा को नहीं अपनाएगा। वर्तमान स्थितियाँ ऐसी है कि उराके व्यवहार और जीवन में भाषाई बदलाव अपने आप में हो रहा है। हम हिंदी को घरवाली, अंग्रेजी को बाहरवाली आदि-आदि नामों से पारिभाषित कर शोर गचा रहे है। यह भाषायी परिवर्तन वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में निर्मित सहज प्रक्रिया है। अब भाषाएँ जनसामान्य के लिए उपयोगिता के आधार पर विकसित होने का सगय है। इस अवस्था में हिंदी की स्थिति परिवर्तन के कगार पर है।

भाषा विद्वानों ने भाषा का संबंध और विकास संस्कृति से माना है। भारतीय जनजीवन की एक विशिष्ट संस्कृति थी। अब वैश्वीकरण ने एक सांत्रिक और वाजारवादी संस्कृति को जन्म दिया है। सभी ओर, सभी देशों में इसी प्रकार की संस्कृति विकसित हो रही है। ऐसी अवस्था में इस नये परिवेश में इस नई संस्कृति के वहन के लिए नई भाषा का होना स्वामाविक है। नई रांक्रमनशील संस्कृति के उदय के साथ एक नई भाषा का उदय भी खानाविक है। हमने नई संकृति का सहर्ष स्वीकार किया है। तब हमें नई भाषा भी स्वीकार

90 / वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य

करनी होगी। "संस्कृति के साथ-साथ उसके एक अंग रूप में भाषा सिखी जाती है।" इस स्थिति में भाषा की संक्रमनशीलता स्वागाविक है। इस स्वागाविक, मानवजीवन की संक्रमणशीलता को समझें बगैर किसी भी भाषा के विरोध में कुछ कहना हमारी स्वागाविक परिवर्तन का विरोध करना है। यह अम्राकृतिक है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी समय में भाषा का परिवर्तन या नई भाषा का जन्म विद्वानों द्वारा नहीं हुआ है अपितु वह सामान्य जनता से हुआ है। सर्वसानान्य जनता से भाषाई बदलाव हुए है। यह हिन्दी का 'हिंग्लीश' रुप भी जनसामान्य की ही देन हैं। वर्तमान वैश्वीकरण के परिवेश में स्थिति ऐसी है कि भाषा का विकास भावनिक आंदोलनों से नहीं होगा। अपितु वह भाषा की उपयोगिता से होगा। जो भाषा सामान्य जनता के लिए, उसके जीवन के निर्वाह के लिए जितनी उपयोगी होगी, जितनी सहज होगी, उतनी ही वह विकसित होगी। अंग्रेजी की तुलना में हिंदी को सर्वसामान्य जनता के लिए जितना हम उपयोगी बनाएमें उतनी ही वह विकसित होगी। मुझे लगता है कि स्वाधीनता अंदोलन के पश्चात हमने हिन्दी को ज्ञान और व्यवहार के लिए अधिक उपयोगी नहीं बनाया इसलिए 'हिंग्लीश' रुप सामने आया है। हिंदी का यह बदला हुआ रूप यह उसका विकास है, उसकी सजीवता का लक्षण भी है— "भाषा गतिशील और प्रवाहमान हैं। वह परिवर्तनशील है। अतः इसका कोई अंतिम स्वरुप नहीं हो सकता। न संसार का कोई अंतिम स्वरुप है, न मानव शरीर का और न मानवीय भाषा का। मृत शरीर के तुल्य मृत भाषा का अवश्य अंतिम स्वरूप हो सकता है, जीवित भाषा का नहीं। इसलिए भाषा के अंतिम स्वरूप की न कल्पना की जा सकती है न उसके विषय में कोई भविष्यवाणी।"

निष्कर्षतः नापा यादृश्चिक, ध्विन संकेतों की व्यवस्था है जो परिवेश उपयोगिता, वातावरण के अनुसार बदली है, बदलती रहेगी। भाषा का उपयोग केवल विचारों के आदान-प्रदान के लिए होता है, इसलिए विचारों के आदान प्रदान में जो भाषा सहज, स्वामाविक होगी वही विकसित होगी। मेरे विचार से यहाँ अंग्रेजी हिन्दी से भारी पढ़ रही है। यहीं कारण है कि हमारे देश में हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी का विकास अधिक हो रहा है। इसलिए हम हिन्दीवालों को अंग्रेजी के विरोध में चिल्लाने के बजाए हिन्दी को जनसामान्य के उपयोगी, ज्ञान की भाषा बनाना आवश्यक है। यह वर्तमान वैश्वीकरण के संदर्भ में वक्त का तकाजा है— 'वैश्वीकरण के कारण कई नये क्षेत्रों में हिन्दी की अग्निपरीक्षा होगी वह उसे नये पारिभाषिक शब्द गढ़ने पड़ेगे।' हिंदी को ज्ञान की भाषा, जनता के आवश्यकताओं को पूरा करनेवाली भाषा बनने के लिए उसे अपना स्वरूप भी बदलना आवश्यक है। अगर ऐसा हुआ तो ही हिंदी बदलते वैश्विकरण के परिवेश में टिक पायेगी। अगर ऐसा नहीं हुआ तो हिन्दी भाषा का रूप और अधिक परिवेश में टिक पायेगी।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य / 91

संदर्भ

- । भाषा विद्यान- भोलानाश तिवारी, पृ०४
- भाग विज्ञान भोलानाथ तिवारी, पृ.13
- 3 भागा विज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिन्दी भागा— अवादात देशमुख, पृ. 45
- 4. भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम- रापा, देविटास इंगळे, पृ.130

सहायक प्राध्यापक, (हिंदी विमाग) श्री हावगीस्वानी महाविद्यालय, उदगीर (महाराष्ट्र)





21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य

संपादक डॉ. पांडुरंग ज्ञानोवा चिलगर सह-संपादक प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे

्र्याञ्च वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर कानपुर - 208021 (उ.प्र.) ISBN : 978-93-91119-77-5 मूल्य : चार सौ पंचानवे रुपये मात्र

पुस्तक : 21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य

संपादक : ंडॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर

सह-संपादक : प्रां. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे

: महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपुर

प्रकाशक : वाऱ्या पव्लिकेशंस

3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नीबस्ता,

कानपुर - 208 021

Email: vanyapublicatioaskanpur@gmail.com

info@vanyapublications.com

Website: www.vanyapublications.com

Mob.: 9450889601, 7309038401

संस्करण : प्रथम, 2022

मूल्य : 495,00

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : सार्थक प्रेस, कानपुर

7 495, 150N 978-53-51

अनुक्रम

	ं रुकोगो नहीं स्थिका' उपन्यास में स्त्री विमर्श	
	प्रा. डॉ. शहाजी चव्हाण	
	· 'फ़ाँस' उपन्यास : किसान जीवन की दर्दकथा	9
	डॉ. ज्ञानेण्वर गणपतराव रानभरे	
Š	 श्वीं सदी के उपन्यासी में नारी विमर्श 	14
	प्रा. डॉ. बंबन रंभाजीगाव बोल्क्टे	
124	। आदियामी एवं दलित विमर्श : तुलनात्मक अध्ययन गौरत विदे	22
	1114 1416	
.5	 21वीं सदी का स्त्री विमशंवादी हिंसा साहित्य : युगांतरकारी परिवर्तन व छॉ. प्रेरणा विलास उवाळे 	26
	डॉ. प्रेरणा विलास उवाळे	न आधार
6	21वीं सदी और साहित्यकार नोरजा माध्य ' कारिका '	34
	व्यान्तराज्या दशकात	
7.	21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में अपिताले 🤝	41
	ा. राज हमाराबर समार	
8.	21वीं सदी के टेलीविजन धारावाहिकी में क्यानी -	47
	The state of the s	
9.	्राप्त न अस्तिमा इस्त स्थाय	52
	कृष्णा प्रिया जे.के.	
10.	े अंतिया साह नहीं गर्मा चाना करण	55
	mai aida	
11.	जार जार जार विविध विषय	58
	डा. बब्रुवान मारे	
12.	पूर्वोत्तर भारत की जनजानीय जीवन 🛁 🕒	63
	The state of the s	
13.	21वां सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श	71
	डॉ. संग्राम सोपानराव गायकवाड	
14.	यमदीप : किन्तरों का यथार्थ आख्यान	78
	डॉ. पी. डी. चिलगर	
15.	21वीं मही के किंगे	81
	21वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श प्रा. अमर आनंद आलदे	01
	जानद् आलद्	

16	21वीं सदी के हिंदी उपन्या में बाजारवाद और उपभाक्तावाद	90
10-	डॉ, शाहू साईनाथ गणपत डॉ, शाहू साईनाथ गणपत	
17.	67 Terr Terret Great Street	95
1665	21वां सदा का छिए जानाजी गोविंदराव प्रा. कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव प्रा. कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव	
18.	में नहीं के दियों कथा साहरत र	99
10.	मा हो महावीर रामजा हाक	
19.	नगण्य से निरस्कत थेड जेडर	104
Merca:	प्रा. डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव	
20.	c 3 TOTALE AND SHIELD THE	
	('पाँव तले की दूब' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	110
	हाँ नवनाथ गाडिकर	
2.1	ऋषि विकास एवं भूमंडलीकरण	115
21.	नामहा गायकवाड	7.1572
22.	े व्यक्तिम द्रोगम आर्ग हिंदा लाहित्य	119
	मा व्ही बी खाडे	1/1/2
36	हिंदी कहानियाँ में वृद्ध विमर्श	123
120.	Charles Annual Control of the Contro	125
24.	* * * * * + + + + + + + + + + + + + + +	127
24.	— — नंत्रीय रोगतार	127
25	र <u> </u>	224
25.	A CONTRACT TO A	134
0.0	्र क्रम्भ की मन कार कहाना में आमल्याम पार्टिंग	
26-	- इं िर् म मार्गेषस्थ	139
	१ - १ ने दे दिनों कथा साहित्य में दोलत ।वसरा	
27.	के जा भी भी भी था	144
	<u> </u>	
28.	कृष्णा सबिता का कहाना चाराने	147
	डॉ. आशा दत्तात्रय कांवले	
29.	'नई रोशनी' में व्यक्त आधुनिकता वोध	152
	माधवराव गजाननराव जोशी	
30.	21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श	156
	बनकर संतोष महादेव	



23 हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श

प्रा. विरमद्र बिरादार

मानव जीवन में लाहित्य का विशेष स्थान है। साहित्य और समाज का अन्यान्याश्रित सम्बन्ध है। यही कारण है कि साहित्य को समाज का प्रतिम्बिब भी कहा जाता है। समाज या व्यक्ति से परे साहित्य की कत्यना ही नहीं हो सकती। तात्पर्य साहित्य जनजीवन की व्याख्या करता है और जनजीवन समाज का ही एक अंग होता है। अपने समय की समस्याओं तथा घटनाओं को सफल रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत करने से ही साहित्य अर्थगत हो जाता है। समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों तथा समस्याओं को जनता के अंतरंग तक पहुँचने का एक संशवत माध्यम है कहानी।

इक्कीसची सदी नए-नए विमर्श की सदी है। हिन्दी साहित्य में दलित विगर्श, स्त्री विगर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विगर्श, बाल विगर्श के बाद आज वृद्ध विमर्श की गूंज सुनाई दने लगी है। वैरवीकरण, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण के कारण मानव जीवन में बहुत ही तेजी से बदलाव आ रहा है। इसी बदलाव का एक कारण यह है कि वृद्ध पीढ़ी के प्रति संवेदनशीलता आज धीरे-धीरे कम हां रही है। वृद्धों के प्रति नई पीढ़ी में अपनापन दिखाई नहीं दे रहा है। आज के इस भौतिकवादी युग में वृद्ध व्यक्ति अपने ही घर में पराये तथा अजनबी हो गए हैं। भौतिकवादी प्रभावों से आज की नई पीढ़ी इतनी प्रभावित है कि वह वृद्धों के प्रति किसी भी प्रकार से जुड़ने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए उन्हें अकलपन की पीड़ा से गुजरना पड़ रहा है। अतः उनके जीवन में वृद्धाश्रम उनके जीवन के नियति का भाग बन गए हैं। इसलिए आज हमें वृद्धावस्था पर चितन करने की आवश्यकता है, क्योंकि बिना चितन के उनके जीवन में सुधार सम्भव नहीं है।

मनुष्य को अपने समस्त जीवन काल में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। जैसे-शेशवावस्था, वाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रोढ़ावस्था और वृद्धावस्था आदि। वाल्यावस्था तथा शैशवावस्था में वह अपने माता-पिता पर निर्भर रहता है। किशोशवस्था में वह अपने भीतर ऊर्जा तथा छमंग को लेकर जीवन यापन करता है। प्रौद्धावस्था में वह अपनी जिम्मेदारीयों का स्वयं निवीह करता है और वृद्धावस्था तक पहुँचते—पहुँचते शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से तसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस रिधित में वह परिवारजन तथा अन्य व्यक्ति की नफरत को भी सहन करने के लिए विवश होता है। एक तरह से परिवार तथा समाज से बिल्कुल अकेला पड़ जाता है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ बिटानिका के अनुसार — Old Age Also called senescence in human beings, the final stage of the normal life span. इस अवस्था को मनुष्य जीवन का आखिरी पायवान कह सकते हैं। वर्णवय में आते ही शारीरिक तथा मानसिक क्षमताएँ बिकट होने लगती हैं। स्वांति तिवारी ने अपनी पुरत्तक 'अकेले होते लोग' में वृद्धावस्था के बारे में यो कहा है— 'वृद्धावस्था को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जिसे सम्पूर्ण शारीरिक क्षमताओं में उत्तरोत्तर कमी से ऑका जाता है।'''

'वृद्ध' शब्द का अर्थ- अंग्रेजी-हिंदी कोश के अनुसार वृद्ध' शब्द को 'Old' शब्द का हिंदी पर्याय माना गया है जिसका अर्थ-दुढ़ा, वृद्ध होता है। लोक भारती राजभाषा शब्दकोश के अनुसार वृद्ध का अर्थ-व्सक चमतेवद होता है। तात्पर्य वृद्ध' शब्द अंग्रेजी के ष्ट्सकः शब्द का पर्यायी शब्द है।

विमर्श का अर्थ – विमर्श शब्द को साधारण अर्थ में विचार, विवेचन, चिन्तन या परामर्श के रूप में लिया जाता है। हिंदी में विमर्श शब्द अंग्रेजी के 'Discourse' शब्द से आया है। इसका अर्थ –सुदीर्घ तथा गम्भीर चिन्तन से लिया जाता है। लोक भारती राजभाषा शब्दकोश के अनुसार विमर्श का अर्थ – पूर्ण चिन्तन भी होता है।

हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श

साहित्य की एक सराक्त विद्या कहानी है। कहानी विद्या में वृद्धों से सम्बन्धित अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। प्राचीन काल में वृद्धों को सम्मान दिया जाता था, उनका आदर किया जाता था, उनके प्रति अपनापन दिखाया जाता था परन्तु आज वृद्धों के प्रति रवैये में बदलाय आया है। एक तरह से वृद्धों का जीवन मूल्यहीन हो गया है। क्योंकि युवा पीढ़ी उनकी स्थिति को समझने के लिए तैयार नहीं। इतना ही नहीं वे उनको वृद्धाश्रम पहुँचा रही है। उन्हें अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है। वृद्ध अपनों से थोड़ा प्यार और आत्मीयता चाहते हैं किंतु वह भी उन्हें पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पा रही है। इसलिए उनका अस्तित्व ही आज खतरे में पड़ गया है।

कहानी साहित्य में वृद्धों को केन्द्र में रखकर अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं जिनमें वृद्धों की मनोदशा को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। ताकि युवा पीढ़ी वुद्धों की मनोदशा को समझकर उनके प्रति सदभावना पूर्ण व्यवहार

वर सकता विकास महागान की कांग्राची गाइ अतीमान समय में बढ़ार के प्रीत कांग्री ार्वकारीवता का व्यक्त करती है। भारतकता के प्रभाव से आज परिवार में किही क पति राष्ट्रम का नाव कस बदला जा नहा है इसको एक वृद्ध अवकान पान्त विका अववता व माध्यम से व्यक्त किया है। प्रस्तुत कहानी में नोकरी से अंकाश प्राप्त सवदवा एक वृद्ध विला है, जिल्ला बंदा विलय नीकरी के लिए इंग्लाम बला जाता है और वहीं शादी कर घर वसा लेता है। पृद्ध माना चिता क प्रतिम मा पिन तरह से बील जाए इसलिए वह अपने माटा पिता की कारणा प्रवासम् व कर बता है। वर वार का बेटा अपनी माना विका क दिए रूपम भी भेजता है कियु संख्येया का रूपमा की अम्बत अपने वेट के होंग भागीनंक साहवयं तथा स्नतं कि आवश्यकता है पर बेटा वह नहीं वे पाला। इसलिए कुद्ध पिता भागात्मक साहचर्य के अभाव की पूर्ति को एक वच्चे के साहवर्य से पूरी करते हैं। क्योंकि दोनों ही समदुःखियाँ हैं। इसीलिए दोनों अटूट वन्यन में वैंश जात है। प्रतिकात्मक रूप में इस कहानी में यह कहा गया है कि पारिवारिक स्नेह और भावात्मक साहबर्य की मैद आज के आधुनिक परिवेश मे कहीं पुम हो गई है. जिसे ढूँढने का प्रयास किया जाना चाहिए। अतः यह कहानी वृद्धी के प्रति वदसी संवेदमहीनता तथा उनकी उपका को व्यक्त करती है।

सूर्यनाथ सिंह की मीलिक कहानी महन गिसिर की खुरणा में वृद्ध व्यक्ति के अकेलंपन और उसके जीवन की पीड़ा को व्यक्त करती हैं। कहानी में मड़न गिसिर नाम के वृद्ध पिता अपने बेटें और बहु के बेहतर जीवन के लिए अपनी नीजी खुशियों को त्याग देते हैं। वे अपनी मन की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहते हैं— 'का कह सकते हैं भैया। जमाना बहुत खराब है। आदमी जिंदगी भर बेटें को पाल-पांसकर वड़ा करता है इस समीद में की उठ बड़ा होकर उसके युद्धण का सहारा बनेगा।'' मंडन मिसिर ने अपने तीन लड़िकाया और एक लड़के की अन्छी तरह से परवरिश की उनको प्रद्धाया-लिखाया और उनको विवह अन्छे घर में भी कराया। बेटी और बहु के बाध अनवन के कारण यह गाँव छोड़कर अथाध्या जाने के लिए विवश होते हैं। वृद्ध पिता के जीवन का आधार उसका बेटा होता है किंतु वे अपने जीवन के आखिरी समय में भी अपने बेटें और बहु के साथ न रहकर अकेले रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं। एक तरह से वह अपने बेटें के लिए बोझ बन जाते हैं। वेटें के पास शहर न जाकर गाँव में ही रहकर वे दीवन यापन करना जनकी मजबूरी बन जाती है। अत यह कहानी वृद्ध व्यक्ति के अकेलेपन और उसकी जीवन पीड़ा का दर्शाती है।

सूर्यवाला की कहानी निर्वासित वृद्ध माता-पिता की पीड़ा और वेटा द्यारा हुई उनकी उपेक्षा को व्यक्त करती है। वेटे और बहु द्वारा हो रही उपक्षा ही निर्वासित बना देती है। कहानी के केंद्र में अवकाश प्राप्त बाबुजी

126 / 21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य

और उनकी पत्नी है जिनको दो बेटे हैं। बड़े बेटे का नाम राजन तो छोटे का रणकीर है। पिता रिटायर्ड होने पर बड़ा बेटा राजेन और बहु उन्हें अपने पास बुलालं है तब वे चले जाते हैं। लेकिन वहाँ पल पल उन्हें अपमानित होना पड़ता है। एक दिन बेटा राजेन अपने पिता से कहने लगता है—"वायूजी स्थाम को मेरे दोस्त वगैरह आते हैं न, तो प्लीज आप अंदर आ जागा कीजिए। असल में उन्हें ड्रिक्स वगैरह चाहिए होती है, स्मोक भी करना चाहते हैं। आप बुजुर्ग छहरे, आपके सामने झिजकते हैं।"

विमल सिंह की कहानी प्यासी रेत' में मौसी शारीकि रूप से बहुत दुर्बल हैं। इसीलिए वह हमेशा किसी—न—किसी को बुलाती रहती हैं। इस आवत से तंग आकर वहुं कहती हैं—'अम्मा क्या वात हैं? हमेशा खड़खड़ करती हैं, नुप भी रहा कर। सबको अपने—अपने काम है। कहाँ तक वार—यार आयेंगे तेरे पास? अरे कोई खाली थोड़े ही बैठा हैं?'' इस प्रकार कृता के प्रति युवा पीढ़ी का भीतिकवादी दृष्टिकोन दिखाई देता है।

अतः हिन्दी कहानियों में वृद्ध माता-पिता के प्रति अफेलपन तथा नई और पुरानी पीढ़ी के बीच टकराव को इन लेखकों दवारा विकित किया गया है। जो आज के संगय में भी अत्यन्त प्रासंगिक है।

संदर्भ

- स्वाति तिवारी- अकेले होते लोग, पृथ्व-अ
- सूर्यनाथ सिंह- मंडन मिसिर की खुरणा, पृथ्व-107
- सूर्यवाला- निर्वासित, पृथ्व-82
- विमल सिंह- प्यासी रेत. वृद्ध मन की कहानियां, पृष्ठ-99

हिंदी विभाग श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय, उदगीर जिलातूर (महा.) Dar Kathande Mo

Research Trends in

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Volume - 41

Chief Editor

Dr. R. Javakumar

Associate Professor, Siga College of Education, Villupuram, Tamil Nadu, India

Co-Editor

Dr. Raja Reddy, Duyyuru

Associate Professor, Department of Electrical & Electronics Engineering, Malla Reddy Engineering College (A), Hyderabad, Telangana, India

Dr. Arun Kumar

Associate Professor and H.O.D, Department of History, Mahila College, Patliputra University, Khagaul, Patna, Bihar, India

Dr. Madan Mohan Laddunuri

Assistant Professor, Department of Physiotherapy, School of Allied Health Sciences, Malla Reddy University, Hyderabad, Telangana, India

> AkiNik Publications ⁶ New Delhi

Published By: AkiNik Publications

AkiNik Publications 169, C-11, Sector - 3,

Rohini, Delhi-110085, India

Toll Free (India) - 18001234070

Phone No.: 9711224068, 9911215212

Website: www.akinik.com Email: akinikbooks@gmail.com

Chief Editor: Dr. R. Jayakumar

Co-Editor: Dr. Raja Reddy. Duvvuru, Dr. Arun Kumar and Dr. Madan

Mohan Laddunuri

The author/publisher has attempted to trace and acknowledge the materials reproduced in this publication and apologize if permission and acknowledgements to publish in this form have not been given. If any material has not been acknowledged please write and let us know so that we may rectify it.

C AkiNik Publications TM

Publication Year: 2022

Pages: 147

ISBN: 978-93-5570-524-2

Book DOI: https://doi.org/10.22271/ed.book.2005

Price: ₹ 757/-

Registration Details

Printing Press License No.: F.1 (A-4) press 2016

> Trade Mark Registered Under

Class 16 (Regd. No.: 5070429)

Class 35 (Regd. No.: 5070426)

Class 41 (Regd. No.: 5070427)

Class 42 (Regd. No.: 5070428)

Contents

S. No	o.Chapters	Page No.
I.	Ethnomedicinal Studies on Tribal Inhabitants of Lokhri Region of Guwahati City, Assam (Jonardan Hazarika and Tinamoni Hazarika)	01-18
2.	COVID-19 and SARS-CoV-2 Variants in Mexico (Ana Laura Vega-Rodriguez, Gerardo M. Nava, Alma Delia Bertadill Jilote, David Gustavo Garcia-Giatérrez, Marco Antonio Meruz-Riox at Karla Isabel Lira-De León)	19-41 o- nd
3.	Morphometric Analysis (Dr. Priti S. Jayswal and Er. Ketan N. Sondarva)	43-55
4.	Covid-19 Corona Virus Potential Inhibitors: Eucalypt Essential Oil (Priyatama V. Powar and Sarika A. Nikam)	us 57-68
5.	A Discussion on Some Maximal Operators and Boundedness on Weighted Lebesgue Space (Tanmoy Barman)	its 69-80
6	कोचिड-19 महामारीचा भारतीय शिक्षण प्रणालीवर परिणाम	81-92
7.	(डॉ. मास्ती बाबुराय कातकडे) Data Science using R Programming (Dr. Shalu Gupta and Kiran)	93-111
8.	Data Science using Python Programming (Dr. Shalu Gupta and Kiron)	113-130
9	. Big Data and Data Science (Dr. Shalu Gupta and Kiran)	131-147

Chapter - 6 कोविड-19 महामारीचा भारतीय शिक्षण प्रणालीवर परिणाम

Author

डॉ. मारुती बाबुराव कातकडे

वाणिक्य विभाग, श्री हवागीस्वामी महाविद्यालय, उदगीर, लातूर, पहाराष्ट्र, भारत

Chapter - 6

कोविड-19 महामारीचा भारतीय शिक्षण प्रणालीवर परिणाम

डो. मारुती बाबुराव कातकडे

गोषवाराः

कोविड-19 या महामारीचा प्रभाव जगभरात दिसून येत आहे. जगातील सर्व क्षेत्रे प्रभावित झाने आहेत आणि महामारीमुळे त्याचे स्वरूप नवीन तंत्रज्ञानामध्ये पूर्णपणे वदलने आहे.चीनमध्ये 19 डिमेवरपासून मुरू झालेल्या कोविड-19 महामारीने जगभरात थैमान घातले आहे. कोविड-19 ने जगातील सर्व क्षेत्रांना प्रभावित केले आहे. संपूर्ण क्षेत्राचे स्वरूपच बदलने आहे. काळानुसार होणारा बदल स्वीकारावा लागतो. पण अचानक झालेला बदल स्वीकारणे खूप बासदायक आहे. कोविड-19 हा संसर्गजन्य आजार असल्याने, जगभरात त्याचा प्रसार रोचण्यामाठी बहुतेक देशांनी अचानकपणे आपली अर्थव्यवस्था बंद करण्याचा निर्णय घेतला. भारतात, सुरुवातीला केंद्र सरकारने 20 मार्च 2020 रोजी अचानक 21 दिवसांचा लॉक-डाऊन धोपित केला, परंतु दिवसेंदिवस कोविड -19 च्या संख्येत वाह होत असल्याने आरोग्य यंत्रणांवर परिणाम होत आहे. केंद्र मरकारांनी अन्य कालावधीनंतर पुन्हा पुन्हा संपूर्ण अर्थव्यवस्था वंद करण्याचा निर्णय पेतला. अर्थव्यवस्था वंद अमनाना लॉकडाऊन कालावधीत व्यवसायिकांनी आपला व्यवसाय ऑनलाइन मूर करण्याचा निर्णय घेतला. परंतु भारतीय शिक्षण व्यवस्थेत आधुनिक तंत्रज्ञान आणि उपलब्ध साधनमामग्रीच्या अभावामुळे भारतीय शिक्षण ऑनलाइन सुरू करणे मोपे नसल्याने त्याचे श्रैक्षणिक क्षेत्रावर गंभीर परिणाम होत होते. मुमारं 32 कोटी शिकणाऱ्यां विष्यार्थ्यांनी शाळा/कॉलेज ला जाने थांववले, भारतात सर्व शैक्षणिक उपक्रम यांववले.

नवं बदल अचानक स्वीकारन ऑनलाइन शिकत राहण्याशिवाय दुसरा पर्याप नव्हता. भारतातील कोविड-19 रोगाच्या बाइत्या घटनांमुळे, शैक्षणिक नुकसान राळण्यासाठी भारतीय शिक्षण प्रणालीमध्ये ऑनलाइन शिक्षण सुरू ठेवण्याचा निर्णय घेण्यात आला. कोविड-19 महामारीने भारतातील औपचारिक शिक्षण व्यवस्था विस्वळीत केवी अहं राज्ञानाचा अभाव, प्रशिक्षणाचा अभाव, मोबाईल टॉवर्मचा अभाव, भारतातील गरीब विद्यार्थ्यांची संख्या जास्त, ग्रामीण भागातील विद्यार्थ्यांची सक्या जास्त, इ. मात्र, ग्रामीण भागातील विद्यार्थ्यांची संख्या जास्त, रायांच्याकडे अर्थिक खोत उपलब्ध नि, ग्रामीण भागातील विद्याध्यांची संग्या जान्त आहे, त्यांना तंत्रज्ञानाचा अभाव, आरोग्याच्या समस्या, आर्थिक परिस्थितीमुळे ग्रामीण भागात बीज पुरवक्याचा अभाव अशा अनेक प्रकार बास सहन करावा लागला आहे. हा पेपर सरकारने केलेल्या अभाव अशा अनेक प्रकार बास सहन करावा लागला आहे. हा पेपर सरकारने केलेल्या काही उपाययोजनावर प्रकाश टाकतो, भारतातील साथीच्या आजारात अखंड जिक्षण देण्यासाठी. हा शोधनिवंध ग्रामीण भागातील विद्यार्थ्यांनी लॉकडाऊनच्या काळात कसे शिकत राहिले यायदल मारांश दिलेला आहे.

कीवर्ड:- कोविड-19 महामारी, ऑनलाइन शिक्षण, ग्रामीण विद्यार्थी, तंत्रज्ञान इ. परिचयः

शिक्षण हे मानवी जीवनासाठी सर्वात सक्षम साधनांपैकी एक आहे. हे वांगल्या जीवनावा पाया घालते. शिक्षण प्रणाली कोणत्याही देशात सर्व प्रकारचे कामगार, तंत्रज्ञ तयार करते. हे सर्वोत्कृष्ट राष्ट्रासाठी नवीन पिढी तयार करते आणि त्यामुळे त्यांना समाजात एक चांगले जीवनमान प्राप्त करण्यास मदत होते. मानवी जीवनात जान, कौशल्ये आणि समज आणण्यासाठी शिक्षणाची भूमिका महत्त्वाची आहे. शिक्षण माणसाला चांगले नागरिक वनायला शिक्यते. मानीच्या गोळ्या, इस्टवीन, लाकडी पाट्यांपासून ते व्लंकबोर्ड, व्हाईटबोर्डपासून ते डिजिटल फलकांपर्यंत विविध शिक्यण्याच्या माधनांनी क्रांती केली आहे. यामांवतच लॉकडाऊनमध्ये शिक्यण्याच्या पद्मतीतही मोठ्या प्रमाणात सुधारणा करण्यात आल्या आहेत. या नवीन तंत्रज्ञानामुळे शिक्षणे अधिक मनोरंजक झाले आहे. महामारीमुळे पारंपारिक शिक्षणाची संकल्पना आमूलाग्र वदलली आहे. भारतीय विद्यार्थी आता डिजिटल आणि ऑनलाइन शिक्षणाच्या नव्या युगात प्रवेश करत आहेत. आजवाल ऑनलाइन शिक्षणामुळे शैक्षणिक कार्यक्रमांची व्यापी आणि प्रसार वाढत आहे. हे नवीन ऑनलाइन तंत्रज्ञान शिक्षकाना आणि विद्यार्थीना शिकण्यासाठी नवीन संधी उपलब्ध करून देत आहे आणि त्यामुळे शिक्षण्याच्या प्रक्रियेत विद्यार्थांचा परस्परसंवाद वाढतो.

स्मार्ट बोर्ड, टॅब्लेट, प्रोजेक्टर, लंपटॉप आणि मॅमिव्ह ओपन ऑनलाइन कोर्मेस सारख्या तंत्रज्ञानावर आधारित डिजिटल रिसोर्स लर्निंग ट्रन्सने शिकवण्याच्या पद्धतीत क्रांती केली आहे. उच्च दर्जाच्या शिक्षणासह दुर्गम भागात शिकण्यासाठी ही एक शक्तिशाली प्रणाली आहे. जगभरातील अनेक शाखांचे शिकणारे (विद्यार्थी) ऑनलाइन अभ्यासक्रम घेतात, हे महामारीमुळे सतत बाढत आहे. मार्च 2020 मध्ये, कोबिड-19 ला WTO ने महामारी घोषित केले. कोबिड विद्याणूचा प्रसार रोखण्यासाठी भारतात देशव्यापी लॉकडाऊन लागू करण्यात आला होता. लॉकडाऊनने औपचारिक शिक्षण पद्धती ऑफलाइन मोडमधून ऑनलाइन मोडमध्ये हलबल्या. मार्चमध्ये जेव्हा अध्यापन शियेला पोहोचले होते आणि अनेक उच्च शैक्षणिक संस्था अभ्यासक्रम पूर्ण करण्याच्या दिशेने धावत होत्या, तेव्हा अचानक लॉकडाऊनमुळे जे शिक्षण सुरू झाले ते

संपवण्यासाठी विविध मार्ग शोधणे भाग पडले. अभ्यासक्रम पूर्ण करण्यासाठी, विविध प्लॅटफॉर्मचा वापर करण्यात आला आणि प्राथमिक ते उच्च शिक्षणापर्यंत संपूर्ण शिक्षण समुदायामध्ये अनेक ऑनलाइन सर्वे आयोजित केली गेली. 25 मार्च 2020 नंतर सर्व शैक्षणिक संस्था अचानक बंद करण्यात आल्या होत्या. महामारीच्या काळात ऑनलाइन अध्यापन हे जिल्लामं एक महत्त्वाचे माध्यम बनले. ऑनलाइन अध्यापन सहजतेने झाले आणि विद्यार्थी आणि शिक्षकांना एका विशिष्ट ठिकाणी एकत्र सादर करण्याची आवश्यकता नाही, महामारीच्या काळात ऑनलाईन अध्यापन हे अध्यापन प्रक्रियेचे माध्यम बनले आहे पण त्यालाही काही मर्यादा आहेत. ऑनलाइन शिकवण्यामाठी स्मार्टफोन/टॅब्नेट/लॅपटॉप/कॉम्प्युटर यासारखी इलेक्ट्रॉनिक गॅझेट आणि शिक्षक आणि विद्यार्थी दोषासाठी योग्य इंटरनेट सुविधा आवश्यक आहे. भारतीय लोकसंख्येचा एक मोठा वर्ग मध्यम उत्पन्न आणि कमी उत्पन्न असलेल्या नुटुंबांत आहे. त्यामुळे मुलांना त्यांचे शिक्षण सुरू ठेवण्यासाठी स्मार्टफोन देणे त्यांना परवडणारे नव्हते. दुर्गम भागात इंटरनेटची उपलब्धता कमी आहे. शैक्षणिक असमानता वाढण्याचे मुख्य कारण म्हणजे समाजातील अल्पभूधारक मुलांसाठी संसाधनांचा अभाव.

युनायटेड नेशन्स एज्युकेशनल, सायंटिफिक अँड कल्चरल ऑर्गनायडोशन (UNESCO) नुसार, जगभरातील 800 दशलक्षाहून अधिक शिकणाऱ्यांना याचा फटका वमला आहे. जागतिक स्तरावर, 160 हुन अधिक देशांमध्ये कोरोनाव्हापरमची 65,32,14,493 हून अधिक प्रकरणे नोंदबली गेली आहेत, ज्यामुळे 66,57,648 हन अधिक मृत्यू झाले आहेत आणि अनेक राज्ये गंभीर उद्रेकाचा सामना करत आहेत. कीविड-19 माथीच्या रोगामुळे काही सरकार शैक्षणिक बजेट बाढवण्याच्या प्रगतीवर विपरित परिणाम करेल. म्हणूनच, हे एक संकट आहे ज्याकडे सर्व सरकार, भागधारक आणि समुदायांनी तातडीने लक्ष देण्याची आणि सामूहिक कारवाईची आवश्यकता आहे. आणीवाणी आणि चालू असलेल्या मानवतावादी संकटांमुळे दररोज लाखो मुले शाळेत जात नाहीत.

सायीच्या रोगामुळे दोन महत्त्वपूर्ण घटक बदलले आहेत. प्रथम, अध्यापनशास्त्रीय रुपांतरे निर्णायक अमल्याचे सिद्ध झाले आहे कारण पारंपारिक व्याख्यानांचे वैयक्तिक मॉडेल दूरस्य शिक्षण वातावरणात भाषांतरित होत नाहीत. कोणत्याही प्रकारचे चॅनेल वापरलेले (रेडिओ, टीव्ही, मोबाइल, ऑनलाइन प्लॅटफॉर्म इ.) शिक्षकांनी त्यांच्या पद्धतींमध्ये जुळवून घेणे आणि विद्यार्थ्यांना व्यस्त ठेवण्यासाठी सर्जनशील असणे आवश्यक आहे कारण प्रत्येक घर एक वर्ग बनले आहे-बहुतेक वेळा-असे वातावरण नमलेले. शिकण्यास समर्थन देते.इंटरनेट-आधारित दूरशिक्षण हा जागतिक ट्रेंड बनला आहे आणि माँफ्टवेअर, हार्डवेअर आणि शैक्षणिक प्रशिक्षण विकसित होत आहे.

कोविड-19 हा एक अन्यंत संसर्गजन्य रोग आहे, जो बहुतेक लोकांमध्ये जवळच्या संपर्कात असनाना पसरतो ज्यामुळे जसभरातील लाखो मृत्यू होतात आजनाल लॉकडाऊन हा एक सामान्य चर्चा शब्द बाहे जो कोरोना महामारीच्या काळात लोकांद्वारे विचार केला जात आहे. कोरोनाव्हायरमने भारतातील पहिल्या ट्रप्र्यातील देशव्यापी लॉकडाउन मुरू केले जे 20 मार्च 2020 रोजी 21 दिवसांमाठी मुरू झाले आणि त्यानंतर पुन्हा पुनरावृत्ती आली. शाळा, महाविद्यालये आणि विद्यापीठे अनिश्चित माळासाठी चंद ठेवल्याने ऑनलाइन अध्यापनाकडे वाटबाल वाडली आहे. म्हणूनच, असूतपूर्व सद्य परिस्थितीच्या अत्यंत गरजेनुसार आपल्या शिक्षण पद्धतीचा गंभीरपण पुनर्विचार, मुधारणा आणि पुनरंचना करण्याची हीच बंळ आहे अनीपमारिक आणि अनीपचारिक शिक्षणावरही मोठा परिणाम होत आहे. ऑनलाइन शिक्षण हे पारेपारिक पद्धतीपासून अध्यापन-शिक्षणाच्या आध्निक दृष्टिकोनानून वर्गातून झूम, वैयक्तिक ते आभासी आणि सेमिनारपामून वेचिनारकडे अध्यापनशास्त्रीय वदल झाले आहे. पूर्वी, ई-नर्निंग, दूरस्थ शिक्षण आणि पत्रव्यवहार अस्यासक्रम हे जनीपनारिक शिक्षणाचा भाग म्हणून लोकप्रिय मानले जात होते.

मध्यासाची उद्दिष्टे:

- भारतातील ऑनलाइन शिक्षणाची वाढ अभ्यासण्यासाठी.
- ऑनलाइन शिक्षणाचे, संधी आणि अव्हानांचे विश्लेषण आयोजिन करण्यामाठी.
- 3) महामारीच्या काळात ऑनलाडन शिक्षण पद्धतीच्या यशस्त्रीतमाठी काही सूचना आणि शिफारमी देणे.
- लॉकडाऊनमध्ये शिकणाऱ्या ग्रामीण विद्यार्थ्यांचा अभ्यास करणे.
- 5) शासनाने केलेल्या विविध उपाययोजनांची माहिती देण्यासाठी या महामारीच्या काळात शिक्षण क्षेत्रासाठी.
- शिक्षणावर कोविड-19 चे विविध सकारात्मक परिणाम अधोरेखित करण्यासाठी.

संशोधन कार्यप्रणाली:

सध्याच्या अभ्यासात मादर केलेला डेटा आणि माहिती कोविड-19 साथीच्या आजारावर राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय संस्थांनी तयार केलेल्या विविध अहवालांमधून गोळा केली आहे. विविध अस्सल वेबसाइटवरून माहिती गोळा केली जाते. शैक्षणिक प्रणालीवर COVID-19 च्या प्रभावाशी संबंधित काही जर्नल्स आणि ई-सामग्री संदर्भित आहेत. सध्याच्या शोधनिबंधासाठी भी इंटरनेट, वेगवेगळे शोधनिबंध, वर्तमानपत्र, लेख आणि सरकारी माध्यमांद्वारे दुय्यम ऑनलाइन डेटा वापरतो. वेबसाइट, अधिकृत रेकॉर्ड

भारतीय शिक्षण प्रणाली:

'2019-20 मध्ये भारतातील उच्च शिक्षणातील एकूण नोंदणीत किरकोळ बाढ झाली' आकडेवारीनुसार, वर्षभराच्या आधारावर एकूण नोंदणी सुधारती, परंतु विद्यापीठे आणि महाविद्यालयांमध्ये विद्याची शिक्षकाचे प्रमाण 2018-19 मधील 29 वरून 2019-20 मध्ये 28 वर धनरले. 2019-20 मध्ये उच्च शिक्षणातील एकूण नोंदणी 19.6 दशलक पुरूप आणि 18.9 दशलक महिला विद्याध्यांमह 38.5 दशलक होती, ज्यामध्ये 37.4 दशलक एकूण नोंदणीच्या तुलनेत 19.2 दशलक पुरूप आणि 18.9 दशलक विद्यार्थी होते. 2018-19 मध्ये 18.2 दशलक महिला 48.6 दक्के. यापैकी, नुमारे 85 दक्के विद्यार्थ्यांनी कला, विज्ञान, वाणिज्य, अभियांत्रिकी आणि तत्रज्ञान, वैद्यकीय विज्ञान आणि अयदी आणि संगणक या सहा प्रमुख शाखांमध्ये नोंदणी केली होती.

2019-20 मध्ये एकूण शिक्षकांची संख्या 1.5 दशलका होती, जी 2018-19 मध्ये 1.41 दणलका होती. त्यापैकी सुमारे 57.5 टक्के पुरुष शिक्षक आणि 42.5 टक्के महिला शिक्षक आहेत. जे मानील 57.8 टक्के आणि 42.2 टक्के होते. वर्ष अहवानानुसार, AISHE वेब पोर्टलवर 1043 विद्यापीठे, 42343 महाविद्यालये आणि 11779 स्वतंत्र संस्था सूचीयद्ध आहेत. त्यापैकी 1019 विद्यापीठे, 39955 महाविद्यालये आणि 9599 स्वतंत्र संस्थांनी 2019-20 च्या सर्वेक्षणाला प्रतिसाद दिला आहे.

भारत सरकार शैक्षणिक उपक्रमः

मानव संसाधन विकास मंत्रालय आणि त्याच्याशी संबंधित संस्था ऑनलाइन श्रीहाणिक प्लॅटफॉर्म आणि टीव्ही आणि रेडिओच्या माध्यमांद्वारे डिजिटल शिक्षणाचा प्रचार करत आहेत. भारत सरकारने 23 मार्च 2020 रोजी कोविड-19 चा प्रसार रोखण्यासाठी देशव्याणी लॉकडाऊन घोषित केले तेव्हा, संपूर्ण देशातील विद्यार्थ्यांना लॉकडाऊन दरम्यानहीं त्यांचे शिक्षण सुरू ठेवता याचे यासाठी इक्टिटीमह डिजिटल शिक्षण तीव्र करण्यासाठी तत्काळ कारवाई करण्यात आली. मंत्रालयाने, गेल्या काही वर्यात, विविध प्रचारच्या प्लंटफॉर्मवर उपलब्ध असलेल्या ऑनलाइन संगाधनांची समुद्ध विविधता विकसित केली आहे. विद्यार्थी आणि शिक्षक त्यांच्या लंगटांप, डेस्कटॉप आणि मोवाईल फीनच्या माध्यमातून यामध्ये प्रवेश कर शकतात, तर दूरदर्शन आणि रेडिओद्वारे ही संमाधने दुर्गम भागातील विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहोचवली जात आहेत.

2020-21 मध्ये, केंद्र सरकारने ऑनलाइन शिक्षणाला चालना देण्यासाठी राज्यभरात 818 कोटी रुपये सामायिक केले आणि शिक्षकांचा व्यावसायिक विकास मुनिश्चिन करण्यासाठी समग्र शिक्षा अंतर्गत ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षणासाठी 268 कोटी रुपयांची तरनूद करण्यात आली. आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21 ने निरीक्षण केले आहे की, ऑक्टोबर 2020 पर्यंत, ग्रामीण भारतातील सरकारी आणि खाजगी शाळांमध्ये स्मार्टफोन असलेल्या विद्यार्थ्यांची टक्केबारी 2018 मधील 36.5% वरून 2020 मध्ये 61.8% पर्यंत

बाहली आहे. पुढे, शालेय शिक्षणावर कोविड-19 महामारीना प्रनाव अनुकृत करण्यासाठी केंद्र सरकारने अनेक उपक्रम मुख्य केले जमें की,स्वयंम, स्वयम प्रमा, नैयनल डिजिटल लायबरी ऑफ इंडिया (एनडीएल, जिक्षणासाठी मॉफन आणि मुक्त खोत सॉफ्टबेंबर, व्हर्ब्युअल लेंच इ.

कोविड-19 दरम्यान ऑनलाइन शालेय शिक्षण मोठ्या प्रमाणात सुरू झाले आहे:

कोबिड-19 महामारीच्या काळात ऑनलाइन आलेय शिक्षण मोठ्या प्रमाणात मुरू आले आहे. 2018 मधील 36.5% वरून ग्रामीण भारतात 2020 मध्ये 61.8% पर्यंत स्मार्टफोनची मानकी असलेल्या शालेष विद्यार्थ्योची रहेचारी बादली आहे.वेद्रीय वित आणि कॉपॅरिट व्यवहार मंत्री, थीमनी निर्मश मीनारायन गांनी आज मंसदेत मादर केलेले आर्थिक सर्वेथण 2020-21 असे नमुद करते की कोविड-19 महामारीच्या काळात ऑनलाइन शालेय शिक्षण मोठ्या प्रमाणात सुरू आले. ऑक्टोकर 2020 मध्ये जाहीर झालेल्या वार्षिक सुधिति शैद्यणिक अहवाल (ASER) 2020 वेच-। (ग्रामीण) ना उद्युत करून, सर्वेक्षणात असे नमुद्र केले आहे की मरकारी आणि चाउनी शाकामध्ये समार्टफोन असलुबाच्या मुलांची नोंदणी 2018 च्या ३६.5 टक्क्यावरून प्रवंड वाहली आहे. 2020 मध्ये ग्रामीण भारतातील टक्के: सर्वेक्षणान अशी शिफारम करण्यान आली आहे की जर त्याचा चांगला उपयोग केला मेला तर, ग्रामीण आणि शहरी, लिंग, तय आणि उत्पन्न गट यांच्यातील डिजिटल विभाजनामध्ये परिचामी घट शैक्षणिक परिचामांमधील असमानता कमी होण्याची शक्यता आहे. कोविड-19 मार्थाच्या काळात शिकणे मुनम करण्यामाठी, मुलापर्यंत शिक्षण सुलभ व्हाचे यासाठी शासन अनेक उपक्रम राववत आहे. या दिशेने एक महत्त्वाचा उपक्रम म्हणजे पीएम ई विद्या हा डिजिटन/ऑनलाइन/ऑन-एकर एउपुकेशनशी संबंधित सर्व प्रयक्षांना एकव आणण्यासाठी सर्वसमावेशक उपक्रम आहे. ज्यामुळे विद्यार्थी आणि शिक्षकांना शिवाणाचा वहु-मोड आणि न्याय्य प्रवेश शक्य होईन. मुमारे 92 अभ्यासक्रम सुरू झाने आहेत आणि 1.5 कोटी विद्यार्थी स्वयं MOOCs अंतर्गत नोंदणीकृत आहेत जे NIOS थी मंबंधित ऑनलाइन अभ्यामक्रम आहेत. कोविड-19 चा प्रभाव कमी करण्यामाठी डिजिटल उपक्रमांद्वारे ऑनलाइन शिक्षणाला प्रोत्साहन देण्यासाठी राज्ये/केंद्रशासित प्रदेशांना रू. 818.17 कोटी आणि समग्र शिक्षा योजनेंतर्गत ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षणामाठी रु. 267.86 कोटी देण्यान आले आहेत. या दिशेने एक महत्त्वाचा उपक्रम म्हणजे पीएम ई विद्या हा डिजिटल/ऑनलाइन/ऑन-एअर एज्युकेशनशी संबंधित सर्व प्रयत्नांना एकत्र आणण्यासाठी सर्वसमावेशक उपक्रम आहे ज्यामुळे विद्यार्थी आणि शिक्षकांना शिक्षणाचा वह-मोड आणि न्याय्य प्रवेश शक्य होईल. मुमारे 92 अभ्यासक्रम मुरू झाले आहेत आणि 1.5 कोटी विद्यार्थी स्वयं MOOCs अंतर्गत नोंदणीकृत आहेत जे NIOS श्री संबंधित ऑनलाइन अभ्यासक्रम आहेत. कोविड-19 चा प्रभाव कमी करण्यासाठी डिजिटल उपक्रमांद्वारे ऑनलाइन शिक्षणाला प्रोत्साहन देण्यासाठी राज्ये/केंद्रशासित प्रदेशांना रु. 818.17 कोटी आणि समग्र शिक्षा योजनेंतर्गत

Page | 88

Page | 87

ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षणामाठी र. 267.86 कोटी देण्यात आले आहेत या दिशेने एक महत्त्वाचा उपक्रम म्हणजे पीएम ई बिद्या हा हिजिटल/ऑनलाइन/ऑन-एअर एज्युकेशनशी संबंधित सर्व प्रयत्नांना एकत्र आणण्यासाठी सर्वममानेशक उपक्रम आहे ज्यामुळे विद्यार्थी आणि शिक्षकांना शिक्षणाचा बहु-मोड आणि न्यास्य प्रवेश शक्य होईल. सुमारे 92 अभ्यासक्रम सुरू झाले आहेत आणि 1.5 कोटी विद्यार्थी स्वयं MOOCs अंतर्यंत नोंदणीकृत आहेत जे NIOS शी संबंधित ऑनलाइन अभ्यासक्रम आहेत. कोविड-19 चा प्रभाव कमी करण्यासाठी डिजिटल उपक्रमांद्वारे ऑनलाइन शिक्षणांना प्रोत्साहन देण्यासाठी राज्ये/केंद्रशासित प्रदेशांना र. 818.17 कोटी आणि समग्र शिक्षा योजनेंतर्यंत ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षणासाठी र. 267.86 कोटी देण्यात आले आहेत.

भारतातील ग्रामीण विद्यार्थ्यांची आव्हाने:

ग्रामीण भारतातील शालेय विद्यार्थ्यांकडे स्मार्टफोन असण्याची टक्केबारी मागील दोन वर्णात 36 टक्क्यांहून 61 टक्क्यांहून वाढली आहे, आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21 ने नमूर केले आहे आणि म्हटले आहे की, त्याचा चांगला वापर केला तर डिजिटल डिव्हाइड कमी होण्याची शक्यता आहे. शैक्षणिक परिणामांमधील असमानता कभी करण्यासाठी शुक्रवारी संसदेत मांडलेल्या सर्वेद्यणानुसार, "डाटा नेटवर्कमध्ये प्रवेश, मंगणक, लॅपटॉप, म्मार्टफोन इत्यादी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणांना दूरम्य शिवण आणि रिमोट वर्किंगमुळे महत्त्व प्राप्त झाले आहे.... सरकारी आणि खाजगी शाळांमधून प्रवेश खेतलेल्या मुलांची टक्केवारी 2018 मधील 36.5% वरून ग्रामीण भारतात 2020 मध्ये 61.8% पर्यंत स्मार्टफोनची मालकी प्रचंड वाढली आहे."2019 मध्ये 574 दशलक्ष असा अंदाज आहे, मासिक सक्रिय इंटरनेट वापरकर्त्यांच्या संख्येत 24% वार्षिक वाढ नोंदवली गेली आहे, जी एकूण 41% ची वाढ दर्शवते. अहवालात 2020 साठी 11% वाढीचा अंदाज आहे; अंदाजे 639 दशलक्ष मासिक सक्रिय इंटरनेट वापरकर्ते.

ऑनलाइन शिकवणे अनेक प्रकारे फायदेशीर होते-

ऑनलाइन अध्यापनामुळे अध्यापन प्रक्रिया घरबसल्या शक्य होते. यामुळे विद्यार्थ्यांना त्यांचा वेळ वाचवता येतो जो त्यांना शारीरिक वर्गात उपस्थित असताना द्यावा लागतो. आता विद्यार्थी हा वाचलेला वेळ इतर उपक्रमांमध्ये व्यवस्थीत करून त्यांचे व्यक्तिमत्व समृद्ध करू शकतात. ऑनलाइन अध्यापन पालकांना त्यांच्या मुलांची काळजी घेण्यास आणि त्यांच्या मुलांच्या शिक्षणात स्वतःला गुंतवून ठेवण्यास सक्षम करते. ऑनलाइन शिकवणे फायदेशीर आहे कारण ते व्याख्यान रेकॉर्ड करण्यास आणि संकल्पना समजून घेण्यासाठी विद्यार्थ्यांना जितक्या वेळा उपस्थित राहण्यास सक्षम करते. ऑनलाइन अध्यापन, ज्याला सरकारने प्रोत्साहन दिले होते, ते देशातील सर्व विद्यार्थ्यांना शिक्षण विभागाने निवडलेल्या सर्वोत्तम शिक्षकांपैकी एकाकडून शिक्षण घेण्याची संधी देते. व्हर्ज्युक्त वलासरूपसाठी विद्यार्थ्यांनी वेळवर उपस्थित राहणे आणि

वौक्य मनाने वर्षात सामील होणे आवश्यक आहे. यामुळे त्यांच्यानाठी एक नित्यक्रम पुन्हा नवार करण्यात मदन आली आहे वेणेकरन त्यांच्याकडे प्रत्येक दिवसामाठी एक विशिष्ट नक्ष्य असेल आणि ते विनमहत्वाच्या क्रियाकलापामध्ये केळ वाया पालव त्यंत त्यांचा मृहणाठ आणि असाइनमेंट मिळनात के विद्यार्थ्यांना त्यांच्या अस्यामासाठी वन्तवद्ध आणि जिस्तवद्ध ठवण्यास पदन करनात अशाप्रकारे, ऑनलाइन वर्ष शाळा वद असनानाही विद्यार्थी जिकल राहतील पानी खात्री करतात. ऑनलाइन वर्ष शाळा वद असनानाही विद्यार्थी जिकल राहतील पानी खात्री करतात. ऑनलाइन वर्ष शाळा वा आणश्री एक मोठा फायदा घ्रणके तो विद्यार्थीना त्यांच्या आवडीच्या कोणत्याही ठिकाणाहून वर्गांना उपस्थित राह देतो. वर्मांन जाण्यासाठी त्यांना फक्त वागच्या इटरकेट कलेक्शनची गरज आहे, संगणक, लेपटांप किंवा स्मार्टकोन शाळेत जाण्याच्या रोजच्या जासानून विद्यार्थी आना मुक्त झाले आहेत. आना, वर्गांत सामील होण्यासाठी त्यांना फक्त त्यांचे दिव्हाइम उपरणे आणि नियोजित वेळी साइन इन करणे आवश्यक आहे. त्यामुळे विद्यार्थीची उपस्थितीही वादली आहे. या कालावधीत हा एक अतिशय महत्त्वाचा फायदा म्हणून पाहिला जाऊ शकतो बेळ्हा सार्याच्या रोगांने आधीव अनेक वृद्धाच्या देजेटवर परिणाम केला आहे. ऑनलाइन क्लामेममुळे शाळा आणि विद्यार्थी या दोघांमाठी प्रचंड पैसा कमी झाला आहे.

शाळा बंद असल्याने त्यांच्या यायाभूत मुविधा व देखभाजीचा धर्च कमी झाला आहे. यामुळे विद्यार्थ्यांच्या शालेष शुक्कात घट झाली अमून त्यांच्यामाठी शिक्षण अधिक आर्थिक सनले आहे. ऑनलाइन शिक्षणामुळे वाहतुकीचा खर्चही कमी झाला आहे.

ऑनलाइन शिक्षणासाठी अनेक तंत्रज्ञान उपलब्ध आहेत परंतु काहीबेळा ते भूप अडचणी निर्माण करतात. आधुनिक तंत्रज्ञानाशी संबंधित या अडचणी आणि समस्या डाउनलोड करण्यात तुटी, इन्स्टॉलेशनमधील समस्या, लॉगिन समस्या, ऑडिओ आणि व्हिडिओमधील समस्या आणि अशाच अनेक समस्या आहेत. काहीबेळा विद्यार्थ्याला ऑनलाइन शिक्षणो कंटाळवाणे आणि अनहाँगिंग बाटते. ऑनलाइन शिक्षणामध्ये इतका बेळ आणि लवचिकता आहे की विद्यार्थ्यांना ते करण्यासाठी वेळ मिळत नाही. ऑनलाइन शिक्षणासमोर वैयक्तिक लक्ष ही देखील एक मोठी समस्या आहे. विद्यार्थ्यांना हि-मार्गी संवाद हवा असतो ज्याची अंमलवजावणी करणे कधीकधी कठीण जाते. विद्यार्थी जे शिकतात त्याचा मराव करेपर्यंत शिकण्याची प्रक्रिया पूर्ण क्षमतेने पोहोचू शकत नाही. कधीकधी, ऑनलाइन सामग्री सर्व सैद्धांतिक असते आणि विद्यार्थ्यांना सराव करू देत नाही आणि प्रभावीपणे शिकू देत नाही.

निष्कर्षः

या ऑनलाइन वर्गाची मागणी जमजशी बाहत जाईल तमतशी ऑनलाइन शिकवण्याच्या व्यवमायात गुंतलेल्या कंपन्यांची मंख्या वाढेल. काही क्षणी, या कंपन्या, जे मुरुवालीला विनामूल्य ऑनलाइन शिक्षण देतात. त्यांच्या मेवांमाठी अधिक बांगले शुल्क

आकारण्याम मुरुवात करतील, या ऑनलाइन शिक्षण कंपन्यांकडून आकारण्यात येणाऱ्या जादा शुल्कामुळे अनेक विद्यार्थ्यांच्या पालकांना हे ऑनलाइन शिक्षण घेणे परवडणार नाही. परिणामी, शालेय स्तरावर तंत्रज्ञानावर जास्त अवलंबून राहणे आणि वर्गातील सत्रातील घट, विशेषतः शहरी भागात, यामुळे शालेय शिक्षण दुर्मिळ होईल आणि कमी उत्पन्न असलेल्या क्ट्बातील मुलांना प्राथमिक शिक्षणापर्यंत पोहोचण्यात अडथळा येर्डल. कमी इंटरनेट कनेक्टिव्हिटी (2019 मध्ये 36 टक्के) आणि वापरकर्त्यांमधील सामाजिक अंतर यामुळे देखील खराब शालेय शिक्षण होईल. अनेक सर्वेक्षणानुसार असे देखील आढळून जाले आहे की ऑनलाइन वर्गात प्रवेश धेतलेले अनेक विद्यार्थी नियमितपणे उपस्थित राहत नाहीत. हे उपकरणे किंवा इंटरनेटच्या अनुपलब्धतेमुळे आहे. 73% मुले त्यांच्या पालकांची किंवा घरातील कोणाची तरी उपकरणे वापरत आहेत. अर्थात, वहसंख्य मुलांना ही उपकरणे त्यांना हवी तेव्हा आणि हवी तेवडी वेळ वापरण्याची परवानगी आहे. घरात एकच यंत्र असेल तर त्याचा वापर पालक, इतर भावंडांमध्ये विभागला जातो. वराच वेळ वर्ग सुरू असल्याने वॅटरी रिचार्ज करण्यास वेळ नसल्याचेही अनेकांनी नमुद केले. इंटरनेट कनेक्टिव्हिटीचा अभाव हे बहुतेक लोकांसाठी आव्हान आहे. शाळा बंद झाल्यामुळे भारतातील शिकण्याच्या प्रक्रियेवर परिणाम झाला असला तरी, केवळ हेच क्षेत्र धोक्यात नाही. म्कीनसमोरचा वेळ अचानक वाढल्याने आणि सततचे ऑनलाइन वर्ग यामुळे मुलांचे आरोग्य धोक्यात येऊ शकते. कोविड-19 चा भारतातील शिक्षण क्षेत्रावर मोटा परिणाम झाला आहे. त्यामुळे अनेक अल्हाने निर्माण झाली असली तरी विविध संधीही विकसित होत आहेत. भारत सरकार आणि शिक्षणाच्या विविध भागधारकांनी कोविड-19 च्या सध्याच्या संकटाचा सामना करण्यासाठी वेगवेगळ्या डिजिटल तंत्रज्ञानाचा अवलंब करून मुक्त आणि दूरस्य शिक्षणाची शक्यता तपासली आहे.

संदर्भ:

- Educationasia.in 2020. शिक्षण आणि शैक्षणिक क्षेत्रांवर कोविड-19 चा प्रभाव, येथे जाणून घ्या. 25 मे 2020 रोजी पुनर्प्राप्त https://educationasia.in/article/theimpactof-
- 2. MHRD सूचना (20 मार्च, 2020). COVID-19 सुरक्षित रहाः https://en.wikipedia.org/wiki/COVID-19_महामारी_भारतात
- https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics/ESG201 6_0.pdf
- https://www.worldometers.info/coronavirus/.
- hhttps://www.mhrd.gov.in/schemesschool
- 6. www.MHRD.co.in

- वित्त मंत्रालय श्रीमती, 29 जानेवारी 2021 रोजी निर्मला मीतारामन प्रकाशन अहवाल
- www.google.com.in





कातीर्थार्थं जठाद्ज्योती महात्मा ब्यवेश्वर

मुख्य संपादक प्राचार्य डॉ. वसंत विरादार संपादक प्रा' डॉ. बब्रुवान केरबाजी मोरे

Dr V.L Ulgarde

mt. 305pl. 2022

۶۴.	"समाज सुधारणा नळनळाळ	प्रा. संतोष खंडोजी माळवटकर	***	
20.	समतेचे दूत महात्मा बसवेश्वर" क्रांतिकारी समाज सुधारक म्हणून	डॉ. गंगणे अमोल उत्तमराव	२२६	
२८.	महात्मा बसवेश्वरांचे कार्य महात्मा बसवेश्वर एक आर्थिक	गणेश नामदेव घोडेकर	२३५	
२९.	विचारवंत क्रांतिकारक समाजसुधारक महात्मा बसवेश्वर आणि शरण चळवळ	प्रा. प्रदीप बन्सीधर सिसोदिया	580	
₹0.	"जागतिक लोकप्रशासनात क्रांतिसूर्य महात्मा बसवेश्वरांचे योगदान : एक प्रशासकीय संशोधनात्मक अभ्यास"	डॉ. लक्ष्मण काशिनाथ उलगडे	२५१	
₹₹.	प्रशासकाय संशोधनात्मक जन्मत	बाबुराव चोखाजी पाईंकराव	२५७	
32.	क्रांतीसूर्य महात्मा बसवेश्वर महाराज	Dr.Manjushree Sanjay Dole	२६३	
33.	े जारे मामाज	प्रा. डॉ. शेकोबा परशुराम ढोले	२६९	
38		भोसले भागवत ज्ञानीबा	200	
30	े जान	भोसले वर्षा ज्ञानीवा	500	
#1	- 12 - C	: प्रा. एस. एन, धां	g 88.	

Mahatma Basaveshwara's Thoughts of Non-Violence

Dr. Nalini Avinash Waghmare

Assistant Professor (History)
Nehru Institute of Social Sciences, Tilak Maharashtra
Vidyapeeth, Pune

INTRODUCTION:

In India in Medieval period Bhakti movement took place. In Karnataka under the leadership of Basaveshwara Vachana movement took place. Along with Basaveshwara and other Shivasharanas participated in Anubhava Mantapa and wrote the Vachanas. These Vachanas are guiding principles to all from 12th century to 21st century. Those who wrote Vachanas called them as Vachanakara. Allamaprabhu, Basaveshwara. Akkamahadevi, Chennabasavann, Siddharameshwara are the eminent Vachanakaras of Vachana movement. Anubhava Mantapa was established in Basavakalyan in Karnataka. It is open to all without considering the caste, colour, community and sex. The Shivasharanas and Shivasharanis participated in Vachana movement. Vachanas are written in simple Kannada language. These Vachanas focus on socioeconomic, religious and spiritual principles. These Vachanas teach us liberty, equality, fraternity and social iustice and Non-violence. These Vachana movements brought all men on one platform. It removed the difference among men and women. Establishing Humanity is the basic aim of Vachana Movement.2 And Basaveshwara and Shivasharanas advocated the Non-violence in their life and

¹ Nalini Waghmare, Historical Importance of Basaveshwara's Vachana Sahitya, Ekvira publicity, Pune, 2017, p.149.

² K.R.Basavaraja, Basasveshwara, His Life, Vision and Work, Someshwara Publications, Dharwar, 2001, pp.564-565.

नाही. मूर्तिपूजा सोडून द्या. अनावश्यक खर्च के हे नका. काल्पनिक स्वर्गनरक यावर विश्वास ठेवू नका. सदाचार स्वर्ग आहे. अनाचार नरक आहे. देव घर गाव सोडून अन्यत्र भटकू नका. शेत पावन भूमी आहे. कष्टाची भाकरच महाप्रसाद आहे. जिवंत नागाला मारून चित्रातल्या नागाची पूजा करू नका, विसंगत व्यवहार सोडून द्या. निसर्ग नियमा प्रमाणे देह धर्मा प्रमाणे वागा. अनावश्यक देहाला त्रास देऊ नका. चारित्र्य सांभाळा. दासोह करा. गरजेपुरती संपत्ती बाळगू नका. फुकटचे कोणाला काही देऊ नका. पाठके कोणाला काही देऊ नका. पुकटचे कोणाचे काही घेऊ नका. दानधर्मा पेक्षा दासोह महत्त्वाचा आहे. शिक्षण घ्या, वचने लिहा, वाचन साहित्य वाचा. ज्ञानी व्हा, नैतिक बना, विवेकी बना, स्वतःमध्ये बदल करा. स्वतामधील दोष दूर करा. कर्मकांड दूर करा. स्वतःची स्तुती करू नका अशी सहज साधी शिकवण वसवण्णांनी दिली, आम-आदमीने ती आत्मसात केली आणि आचरणात आणले.

संदर्भ:

- mr.wikipedia.org
- esakal.com
- नागोराव कुंभार, (संपादक), विचार शलाका महात्मा बसवेश्वर विचार विश्व, विशेषांक.
- संजय के.ठाळे, अध्यक्ष शिवा कर्मचारी महासंघ तथा मराठवाडा अध्यक्ष शिक्षक परिषद, नांदेड.
- सोलापुरे राजशेखर,२०१६, आधुनिकतेचे अग्रदूत महात्मा बसवेश्वर, लातूर: अरुणा प्रकाशन.
- सोमनाथ रोडे, सामाजिक क्रांतीचे जनक व महात्मा बसवेश्वर, लातूरः विद्याभारती प्रकाशन.
- महात्मा बसवेश्वर कार्य आणि कर्तृत्व, जनशक्ती वाचक चळवळ, औरंगाबाद.
- ८. स्वामी इरेस सदाशिव, २०१६, बसव बोध सोलापूर: विविध प्रकाशन.
- वसवराज मलशेट्टी, (मुख्य संपादक) शरण आदोलन बसवन्ना आणि नवनिर्माण धोरण, बसव परिषद, हिरेमठ संस्थान भालकी, जिल्हा बिदर.

क्रांतीसूर्य जगद्ज्योती महात्मा बसवेश्वर / २५०

"जागतिक लोकप्रशासनात क्रांतिसूर्य महात्मा बसवेश्वरांचे योगदान : एक प्रशासकीय संशोधनात्मक अभ्यास"

डॉ. लक्ष्मण काशिनाथ उलगडे

संशोधन मार्गदशक व लोकप्रशासन विभाग प्रमुख, श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय उदगीर जि. लातूर

प्रस्तावना(Introduction):-

विश्वात नव्या पर्वाची, संविधान आणि संसदेची निर्मिती, लोकप्रशासनाचा सर्वप्रथम उदय व विकास क्रांतिसूर्य महात्मा बसवेश्वर यांनी 12 व्या शतकात घडवून आणले. केवळ बोलून कार्य करणे नव्हे तर प्रत्यक्षात कार्य मगच बोलणे याप्रकारे महात्मा बसवेश्वर यांची विशेष ख्याती होती. सखोल अभ्यास, चिंतन व सातत्याने मनन करपे, सर्व धर्मीय करोडो शरण - शरणींना अनुभव मंटप या (भारतीय संसदेच्या) विचारपीठाच्या माध्यमातून प्रशिक्षण, उपदेश, मार्गदर्शन, शिस्त, संस्कार, विविध स्पर्धेत आणि निर्णय -प्रश्न -उत्तर प्रक्रियेत सहभाग सर्वाना द्यायचे उदा : स्त्री असो वा पुरुष, यांना समान स्थान, संधी, मुक्त स्वातंत्र्य, हक्क महात्मा बसवेश्वर यांनी बाराव्या शतकात प्राप्त करून दिले. बारावे शतक हे ऐतिहासिक, नवनवीन क्रांतिकारी चळवळीचे व परिवर्तनाचे शतक म्हणून ओळखले जाते.अहिंसंचे, समतेचे, विद्रोही संत, विकास परिवर्तक,समाजाचे आद्य प्रवर्तक, कुशल शासक व प्रशासक म्हणून महात्मा बसवेश्वर भारतच नव्हे तर संबंध जगात परिचित आहेत, हे कोणालाही नाकारता येत नाही. आजही अमेरिका, इंग्लंड, स्विडणं, रशिया, ऑस्ट्रेलिया, कॅनडा, चीन, हॉगकॉग, जपान व इतर देशात महात्मा बसवेश्वर यांचा अश्वरूढ पुतळा, त्या त्या देशातील चलनावर महात्मा बसरोश्वर यांचे छायाचित्र, संग्रहालय, उद्याने, अभ्यास संशोधन केंद्रे स्थापन करण्यात आल्याचे संशोधन अभ्यासातून पहायला मिळते. हे

क्रांतीसूर्य जगद्ज्योती महात्मा बसवेश्वर / २५१

भारतीयांसाठी खूपच आनंदायी बाब आहे.भारतीय शासनाने देखील इतर राष्ट्रप्रमाणे महात्मा बसवेश्वर यांच्या जीवनकार्य इतिहास 135 कोटी तरुण पिढीपर्यंत पोहचवले पाहिजे. असंख्य प्रमाणात ग्रामीण व शहरी तसेच जिल्हा स्तरावर महात्मा बसवेश्वर संशोधन केंद्र, संग्रहालय, दरवर्षी जयंतीदिनी भारतभर भव्य व्याख्यानमाला, निबंधमाला, वक्तत्व स्पर्धा, रांगोळी स्पर्धा आयोजित करण्यात यावे. निश्चितच सध्या विविध समाजात धार्मिक बाद व प्रशासनात, राजकारणात निर्माण झालेली भेदाभेद, विषमता, भ्रष्टाचार, दसरदिरंगाई, लालफितशाही, असहकार्य भावना, द्रेष, अन्याय, अकार्यक्षमता, अशांतता, वेकारी, कृषी समस्या, पर्यावरण समस्या, प्रशासकीय नियोजनातील अभाव आदी हजारो समस्या, अनिष्ट प्रथा कायमचे नष्ट होऊन नवा समाज, प्रशासन, सुशांसन निर्माण व्हायला कदापि वेळ लागणार नाही. येणाऱ्या काही काळात भारत देश हा "महासत्ताक" देश म्हणून नावारूपास येईल.

संशोधनाचा हेतू / उद्देश (Purpose):-

- महात्मा बसवेश्वर यांच्या यचनसाहित्य प्रसार जागतिक स्तरावर करणे.
- जागतिक लोकप्रशासनातील महात्मा बसवेश्वर यांचे योगदान आभासणे.
- इ. महात्मा बसवेश्वर यांच्या बारात्र्या शतकातील सामाजिक, प्रशासकीय, धार्मिक, तात्विक, तात्विक, नीतिमत्ता, दासोह, जागतिक प्रथम आंतरजातीय विवाह, स्त्री मुक्ती व समानता आदीचा दृष्टीकोन अभ्यासणे.
- बारावे वे शतक आणि आजचे म्हणजेच एकविसावे शतक यातील तुलनात्मक अध्ययन करणे.

गृहीतके (Hypothesis):-

 महात्मा बसवेश्वर यांचे लोकप्रशासन विषयक विचार देशातील तळागाळातील लोकां पर्यंत पोहचत आहे.

- महात्मा बसवेश्वर यांचे ्ितिहासिक "बचनसाहित्य" जागतिक पटलावर पोहचलेले आहे.
- भारतीय शासन व आंतरराष्ट्रीय शासन महात्मा बसवेश्वर यांच्या विचारप्रणालीचा प्रसार आणि प्रचार व्यापक करण्याकडे लक्ष्य केंद्रित करीत आहे.

जागतिक : लोकप्रशासन दृष्टीकोन (Global :Public Administration Approach):-

जागतिक विश्व प्रणेते व आदर्श प्रशासक, तत्वज्ञ म्हणून क्रांतिसूर्य महात्मा बसवेश्वर यांना ओळखल्या जाते.12व्या शतकातील ऐतिहासिक क्रांती संबंध विशात परिचित आहे, कोणीही विसरू शकणार नाही. बसवेश्वर यांनी वचनसाहित्याच्या माध्यमातून नवसमाज क्रांती, अनुभव मंटप (सध्याची भारतीय संसद), खियांना सामान दर्जा, स्वातंत्र्य, मुक्त जीवन, आंतरजातीय विवाह पद्धतीचा अवलंब विश्वात सर्वप्रथम अमलात आणणे, समतेचा संदेश, पारदर्शक प्रशासन, बंधुता,समान न्याय , राष्ट्रीय एकात्मता भावना, श्रमाचे महत्व, शेतमजूर व कामगारांना पुरेसे वेतन, कार्रविभाजन, वेळेचे महत्व तसेच अंधश्रद्धा निर्मूलन, सामाजिक विकास, आर्थिक विकास प्रक्रिया, शिस्त व आदेशाचे पालन, प्रोत्साहन, मार्गदर्शक भूमिका, प्रभावी नेतृत्व सिद्धांत, दासोह सिद्धांत, मानवतावादी, नीतिमत्ता विषयक दृष्टीकोन, कृषी - संसाधने, आर्थिक कोष संरक्षण, राज्य जनकल्याण हित, सर्व समाज घटकांचा विकास, प्रशिक्षण व नियमावली, शांतता, कायदा निर्मिती प्रक्रिया, घोरण निर्मिती आराखडा, अर्धसंकल्प नियोजन, सैन्य प्रशासन विकास, आर्थिक उत्त्पन्न व खर्च यावरील प्रभावी नियंत्रण, काटकसर, स्त्री - पुरुष समानता, विधवा, कुपोषित, अनाथ बालके, वृद्धाश्रम निर्मिती व विकास आदी बाबी लोकप्रशासन दृष्टीकोनात समाविष्ट केल्याचे दिसून येते. ते पुढील वचनातून पाहता येईल.

"जुलूमांचा सुळसुळाट होता, मोकाट मारेकरी

अन्यायाच्या खाईत होती, गरीब जनता सारी

महात्मा वसवेश्वरांच्या वैश्विक क्रांतीने नवा चमत्कार घडवीला
समाज मनातील प्रशासकीय - मानवतेचा साक्षात्कार झाला
विश्वाला मिळाला आद्य समाज सुधारक,
दिशादर्शक केली समाज सेया

महात्मा बसवेश्वर भूतलावर अवंतरले तेव्हा
जागतिक पहिले अनुभव मंटप (संसद) संपूर्ण विश्वाला लाभले.
स्त्रियांना नव्हती प्रतिष्ठा, दर्जा सगळीकडे होता अंधःकार
जातीजातीच्या कळपात होता चोहीकडे हाहाकार
यावेळी सर्व अबलांना, दिन दुबळे, अनाथ, विधवा स्त्रियांना नवा
प्रकाश देऊनी केला जाहीर सन्मान सन्मान
स्त्रीमुक्तीचा उद्धारकर्ता, उत्तम प्रशासक,
जनकल्यानाचा महामेरू विकासरत्व

महात्मा बसवेश्वर: महात्मा बसवेश्वर."

जागतिक संविधान निर्मितीमध्ये महात्मा बसवेश्वर यांनी लिहिलेल्या बचन साहित्यातील अनुभव मंटप, दासोह सेवा, अनेक तत्व, सिद्धांत, दृष्टीकोन आणि प्रशासकीय व आर्थिक, सामाजिक, राजकीय तसेच धार्मिक संकल्पनांचा समावेश असलेला संशोधन अभ्यासातून निदर्शनास येते. थोडक्यात समाजकांतीचा केंद्र बिंदू म्हणजेच समतावादी धोरण तर प्रशासकीय पारदर्शकता, अंमलबजावणी व प्रभावी नियोजन प्रक्रिया म्हणजे महात्मा बसवेश्वर यांचे आदर्श लोकप्रशासन दृष्टिकोन होय. समस्या (Problem):-

- १. महात्मा बसवेश्वर यांचे विविध विचार किंवा दृष्टीकोन तळा गाळा पर्यंत पोहचविण्यात भारतीय शासन तत्पर दिसून येत नाही.
- भारतातील शासन इतर महापुरुषांच्या विचाराप्रमाणेच बाराव्या शतकातील वैश्विक युगपुरुष महात्मा बसवेश्वर यांच्या लोकप्रशासन

क्रांतीसूर्य जगद्ज्योती महात्मा बसवेश्वर / २५४

सिद्धांत प्रत्यक्ष अमलात आणण्यात म्हणावे त्या प्रमाणात भर देताना दिसून थेत नाही.

- केंद्र राज्य आणि जिल्हा शासन यांच्यात समन्वयाचा अभाव पहायला मिळतो.
- भारतात जातीय शासनाचा मोठा राजकीय प्रभावामुळे महात्मा बसवेश्वर यांचे विचार पडद्याआड ठेवल्याचे संशोधन अभ्यासातून निदर्शनास येते.
- भारतीय शासनापेक्षा परकीय देशात महात्मा बसवेश्वर यांच्या विचारप्रणालीचा अंगीकार समाधानकारक दिसून येते.मात्र भारतात अभाव पाहायला मिळते.

उपाययोजना (Solutions):-

वरील विविध समस्या विचारात घेतल्यानंतर त्या समस्याचे निराकारण करण्यासाठी पुढील काही प्रमुख उपाययोजना भारतीय व जागतिक विकासासाठी अत्यंत आवश्यक आहेत. ते खालीलप्रमाणे सांगता येतील.

- महात्मा बसवेश्वर यांनी लिहिलेल्या सर्वच वचनांचा प्रसार व प्रचार व्यापक प्रमाणात करण्यावर भारतीय शासन आणि प्रशासनाने पुढाकार घेणे आवश्यक आहे.
- बाराव्या शतकातील ऐतिहासिक क्रांतीचे यथार्थ चित्रण व माहिती समाजातील प्रत्येक व्यक्तीपर्यंत पोहचविन्यात भारतीय शासनाची भूमिका प्रभावी असणे गरजेचे आहे.
- अंद्र राज्य व जिल्हा, ग्रामीण स्तरावर शासनाने महात्मा बसवेश्वर यांच्या प्रशासकीय व साम्पजिक शाणि इतर दृष्टिकोनाशी संबंधित विविध कार्यक्रम, स्पर्धात्मक परीक्षा, पथनाट्य, एकांकिका, निबंध स्पर्धेचे आयोजन भारतीय शासनाने करावे.

क्रांतीसूर्य जगद्ज्योती महात्मा बसवेश्वर / २५५

- ४. आंतरराष्ट्रीय स्तरावर महात्मा वसवेश्वर यांच्या वचनसाहित्य व लोकप्रशासन सिद्धांताची माहिती सर्व देशातील शरण - शरणी यांना व्हावी याअनुषंगाने प्रभावी भूमिका व यंत्रणा भारतीय शासनाने घेणे अत्यंत आवश्यक आहे.
- ५. शहरी भागाप्रमाणे ग्रामीण भागात देखील भजन, भारूड, पोवाडा, व्याख्यानमाला, चित्रपट, चित्ररथ, गीतगायन आदीच्या माध्यमातून महात्मा बसवेश्वर यांचे विचार, संदेश, वचनसाहित्य विषयी सखोल माहिती शासनाने योग्य नियोजन करून करोडो जनतेला द्यावी.

समारोप (summary):-

अशाप्रकारे क्रांतिसूर्य, आदर्श प्रशासक, महामंत्री, समाजसुधारक, महापुरुष, विश्वरत्न महात्मा बसवेश्वर यांच्या लोकप्रशासन व इतर सर्वच दृष्टीकोन, सिद्धांत, तत्वे, वचनसाहित्य आज आधुनिक युगात राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय शासन स्तरावर प्रत्यक्ष उपयोगात येत असल्याचे संशोधन अभ्यासातून पहायला मिळते.ही एक ऐतिहासिक क्रांती आहे.

निष्कर्ष (Conclusion):-

भारतच नव्हे तर संबंध विश्वानील संविधानात देखील महात्मा बसवेश्वर यांच्या "काय कवे कैलास, "वंचनसाहित्य व लोकप्रशासन टाणि मूल्य, तत्वे समाविष्ट झालेली दिसून येतात. ही बाच भारतीयासाठी सुवर्ण व ऐतिहासिक आहे. हे कोणालाही नाकारता येत नाही. विश्वातील युवा पिढीने महात्मा बसवेश्वर यांच्या विचारप्रणालीचा स्वीकार किंवा अंगीकार करणे अत्यंत आवश्यक आहे.

महात्मा बसवेश्वर आणि कार्ल मार्क्स

बाबुराव चोखाजी पाईकराव

(सहशिक्षक) कै. वापूराव देशमुख मार्ज्य व उच्च माध्यमिक विद्यालय, डोंगरकडा. ता कळ यनुरी जि. हिंगोली.

महात्मा बसवेश्वर है बाराव्या शतकात होऊन गेलेले महानसंत, समाजसुधारक आणि तत्ववेता होते. आपल्या अलौकिक ज्ञानाचा व बुध्दीमत्तेचा उपयोग त्यांनी सामाजिक सुधारणेसाठी केला. ब्राम्हणेतर समाजास न्याय मिळवून देण्यासाठी त्यांनी लढा दिला. अज्ञान, अंधश्रद्धा यावर मात करण्यासाठी मोलाची कामगिरी बजावली. समाजातील परिवर्तन धडवून आणण्यासाठी ते झगडत राहिले. त्यांच्या चळवळीचा केंद्र बिंदू माणूस होता. आणि माणसात समता घडवून आणण्यासाठी त्यांचे महान कार्य सुरु होते.

कायक वे कैलास ही त्यांची विचार सरणी माणसाच्या जीवनासाठी सांगितलेली मौलिक अशी देण आहे. संत बसवेश्वर यांचे 'कायक वे कैलास' हा विचार आणि कार्ल मार्क्सचा 'साम्यवाद' या दोन विचारांचे सार यातील साम्य शोधण्याचा एक छोटासा माझा प्रयत्न आहे. योडक्यात यांचे समीक्षण कर इच्छीत आहे. याची समीक्षा करणे सोपे काम नाही. संत बसवेश्वर आणि कार्ल मार्क्स हे दोन्ही ही तत्ववेते म्हणजे एक तत्त्वज्ञानाचा महासागर आहे. त्यांच्या विचारांचे समीक्षण म्हणजे जागतिक स्तरावर तत्त्ववेत्त्याची ज्ञानासागरातून चमचाभर पाणी घेणे होय. त्यांच्या परिपूर्ण साहित्याचा शोध हा अशक्य आहे. तो परिपूर्ण असेल किंवा नसेलही पण जो साध्य झाला तो वाचणीय नक्कीच असेल, यात शंका नाही.



Musings on the Epic Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha

Edited by
S.G. Dollegoudar Patil

Ph.D., D.Litt.

Published by

Prasaranga, Sharnbasva University

Kalaburagi - 585 103 (Karnataka) - India

Musings on the Epic

Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha

Editor

: Dr. Sannabasanagouda G. Dollegoudar

Dean, Faculty of Languages,

Sharnbasva University, Kalaburagi

Mobile: 9482742094

E-Mail Id: sgdollegoudar@gmail.com

Rights

: The Editor

Copies

: 1000

Pages

: 9+128=137

First Edition

: 2022

Price

: 400/-

Size of Paper : 1/8 size

Cover Design : Mallikarjun R. Patil

Printer

: Sharanabasaveshwar Printing Press

Shambasva University Campus

Kalaburagi

Publisher

: Prasaranga Sharnbasva University

Kalaburagi - 585 103

Karnataka - India

ISBN: 978-81-958459-3-4

Index

inequal to the ac-

ı	*My Prayer To Lord Sharanabasava A Saga of Life, Miracles, And Bliss -Dr. Gore Vitthal
2	Deconstructive Explication of Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha An Epic -Dr. B.O. Satyanarayanareddy
3	Faith, Devotion and Culture are Quintessence of the Epic Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha -Dr. Mallikarjunappa
4	The Epic Style and Poetic Dimension in S.G. Dollegoudar' S Sharnbasva!: The Scion Of Mahadasoha-An Epic -Dr. Akkamahadevi P., Gulbarga
5	Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha a Spiritual Epic -Asst.Prof. Kaveri Kamshetty
6	Reading Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha from a Marxist Perspective: (An understanding of Basava-Kayaka and Sharnabasava-Dasoha) - Dr. Prakash Balikai
7	Sharnbasva: A Soul of Miracles -Dr. Umakant S. Patil
8	Inter-Religious Harmny and Bhoothdaye in Sharnabasva: The Scion Of Mahadaosha - An Epic -V. R. Badiger

- 9 Sharanabasava, An Apostle of Peace
 -Prof. Mallikarjung.
- 10 Salutation to Sharnbasva A Study of Sharnbasva: The Scional
 Mahadasoha from the Prism of an Epic
 -Rajdeep Ga
- 11 Shambasva An Embodiment of Spirituality

-Dr.NSP

- 12 Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha A Saga of a Spiritual
 Hero
 Dr. Devidas S Naik, M.A., Ph.D
- 13 S.G Dollegoudar' A Sharnbasva The Scion of Mahadasoha An Epic An ANalysis
 -Prof. Ashok Hulibandi M.A., PhD
- 14 Faith, Devotion and Culture in the epic Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha

-Dr. Mallikarjunap -Kaveri Kamshet -Sunita Pa

15 Sharanabasva: The Scion of Mahadasoha as a great Epic An Estimation of the Epic Sharanabasava: The Scion of Mahadasoha

> -Smt. Shakuntala -Usha S. Ha

'MY PRAYER TO LORD SHARANABASAVA': ASAGA OF LIFE, MIRACLES, AND BLISS

grant contracts

Dr. Gore Vitthal

Assistant Professor and Head, Department of English Shri Havagiswami Mahavidyalaya, Udgir, M.S. Mobile: 8999173630

Email ID: dr.vitthalgore@gmail.com

An epic is a long narrative poem recounting the heroic deeds of the central character. It is a lengthy narrative of the hero who performs extraordinary action and deals with Gods or other superhuman forces and gives shape to the mortal universe for their descendants. The epic written by Patil, SGD (2022) titled as Sharnbasava: The Scion of Mahadasoha deals with the life, charity, miracles and bliss of the 18th century spiritual guru and saint named, Sharanbasaveshwara. He was an eminent teacher, philosophe, and saint who dedicated whole of his life for the upliftment of common people in the society. Sharanbasaveshwara was one of the prominent Sharanas and Dasohis as per the Lingayat Dharma and 800 years long tradition of this religion after Mahatma Basaveshwara who formed this Veershaiva Pantha with the basic principle of Equality and Kayaka and Dasoha.

This epic mainly talks about the life and endeavours of Sharanbasaveshwara. As it is mentioned earlier that he is even now treated as the greatest ever Kayaka yogi and Dasohi. Let us try to understand these two terms first - Kayaka and Dasoha...

WYSES:

To investigate the term 'Kayakave Kailasa', it has two importance words 'Kayaka' and 'Kailasa', In Kannada language, 'Kayaka' mowork, labour, and profession. It can be interpreted vividly; 'Kayaka' work, labour, and profession. It can be interpreted vividly; 'Kayaka' stands for dutifulness, karma, action, service, responsibility, committee profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity, and so on. It indicates that 'Kayaka' has muls profession, productivity,

In the lexicography of the epic, Patil (2022) provides the means of the word 'Dasoha', "According to Basava, 'Dasoha' means selfa service to God, to Guru, the religious teacher, and the Jangama both in sense of holy wonderer and all the living beings". Dasoha means characteristic Mahatma Basaveshwara's philosophy of 'Kayakave Kallacach Sharana should do a Kayaka first and then he should prove to be Dasohi. According to this philosophy, Dasoha means an individual with should treat work as worship selflessly and consistently not for the selfle for the society. Dasoha teaches us a lesson of pleasure that you get all giving away something to others that you have. The concept of Kaya and Dasoha, fundamentally introduced to remove the inequalities in soil like cast, creed, religion, gender, and profession. Sharnabasaveshul was a saint who strictly adhered to the principles of Mahatma Basaveshul and put in his very sincere efforts to implement all these principles in

life. This epic provides an account of the religious spiritual social and economic efforts put in by Sharnabasaveshwara to upgrade the lives of multiples in the society.

Winner Commen

The epic successfully proves that Sharnabasaveshwara was the real hero and the role model for his choice of the path to break the feudalism in the society. He had great passion for serving the mankind; all 61 cantos in the epic successfully convey various episodes in the life of Sharnabasaveshwara, the epic also reveals that Sharnabasaveshwara keenly served the mankind of his time and preached what he performed in his life. He was the man of action, what he preached, he practiced, and what he practiced, he preached. This identity of Sharnabasaveshwara makes him unique as compared to other saints in the tradition of Lingayat Dharma.

The epic tries to bring out several episodes, miracles, and developments in the life of the saint. His efforts could eliminate inequality and bring out the best of the society is something which is beyond our imagination. In the following section, an attempt has been made to identify some of the important contributions of Sharnabasava in his lifetime based on the division of the epic in parts and cantos. In the structural point of view, this epic has five parts. The Part I titled as When The Divine Playfulness Unfolds has 13 cantos; Part II titled as The Fruits of the Divine Play has 9 cantos; Part III titled as Departure to Parvatabad The Fruits of The Divine Play has only 4 cantos; Part IV titled as Miracles After Miracles at Kalaburagi, The Miracles Yield the Fruits has the largest number of cantos i.e. 28 and the Part V titled as Miracles After Merger into the Cosmic Soul has 7 cantos only. The poet has provided a Prayer to the Lord Sharnabasava right in the beginning of the text and also provided an Epilogue to this epic at the end of the text. This structure of the epic follows the writing style of the conventional epics and gives adequate space for the necessary components here.

The epic begins with a prayer written by the poet, SGD Pappreciation of Sharanbasaveshwara. The prayer itself tells us the according of the greatness, bounties, philanthropy, miracles, and sainthood Sharnabasaveshwara. In this paper, an attempt has been made to crisis analyze the prayer which is provided by the poet right in the beginning the epic. The analytical and interpretative method of research has be adopted to critically appreciate and analyze the prayer to La Sharnbasava.

The title of the prayer begins with the word 'My,' it shows poet's personal association with the Lord revealing his possessiven also. The poet offers his prayer from the bottom of his heart with a greense of respect and gratitude for the same. The poet calls it 'My Proto Lord Sharanabasava.'

Right in the beginning of the prayer, the poet begins with: pronoun 'I' which stands for the poet himself.

I, thy Shambasava,

Honouring thee

My Sharnbasava.

Here the poet addresses to Lord Sharanbasava and revealst great sense of honour that he has for the deity. The poet expressest gratitude that it is the Lord who has given the poet an opportunity to water a few words in the form of this epic. His approach in the prayer also lost like a Kayaka. The poet has taken up a work of writing this epic; it is clear here that this mighty task would not have been possible without blessings of Lord Sharnabasava. The poet pronounces that it is his fit attempt to spread the message of the Lord with the rest of the world attempt to spread the message of the Lord with the rest of the world attempt to spread the message of the Lord with the rest of the world attempt to spread the message of the Lord with the rest of the world attempt to spread the message of the Lord with the rest of the world attempt to spread the message of the Lord with the rest of the world at the spread to the message of the Lord with the rest of the world at the spread to the message of the Lord with the rest of the world at the spread to the spr

of

this endeavor would not be successful unless the Lord provides the shelter of grace to the poet. Then the poet says that he needs encouragement to write the saga of the life of the Lord and it is possible only when the Lord write the saga of the life of the Lord and it is possible only when the Lord could bless him with the words of wisdom. Here one can notice that the poet surrenders himself to the Lord and expresses his feelings and emotions with full devotion which would not reflect in terms of words unless the Lord gives him the practical bent of mind to write it in His admiration.

In the next expression, the poet seems to be submissive when he says,

Lyrics! Pieces of my prayers!

or mere babblings of an infant!

Call them thou

whatever name thy may!

Your life I wish

would be carved in words

though makes no difference

to thou, but for me

You live there in verse

though blank, but forever.

Here, it is indicative that the poet is very much zealous to put in his sincere efforts to write an epic on this great soul and the whole world knows the greatness of his acts throughout his life. Here the poet's imagination flourishes when he says,

You visited me many moments in nights fused with mystical moist.

The poet is always very much eager to have the Darshana of Lord. All these expressions are very apt and suggestive; when the becomes submissive and says whatever task he has taken up, it was the result of the inspiration that he received from his Lord. The vote trust that he has in the powers of Sharanabasava inspired him to take this writing endeavour.

The poet also talks about the mightiness of the Lord when he says,

Thou carried world within you giving glimpses and flashings.

This expression shows the extreme capacity and power of Lord; it can also be interpreted as the Lord represents the whole work and vice versa.

In the next expression when the poet says,
Succulent were those moments
as I love them from inside
and carry them within
covering them with shades of my heart.

This expression tells us about the poet's complete surrender the deity. His love for the Lord from the bottom of his heart becomes to most elevated place because of the feeling. The poet attains the pinnac when he expresses the unbreakable vote of trust in the Lord and admin his actions time and again. The poet says that Lord Sharnabasava is to only ray of hope, He is the only light in their life. Here the light symbolize knowledge and upliftment in the life of the common people and the followers.

In the following expression, the poet admires the art of giving of his Lord. For being a Dasohi, first it demands being a Kayaka yogi. Shamabasava was the votary of Mahatma Basaveshwara. Sharnabasava followed all the principles of the Lingayat Dharma in his life and proved that he remained to be the greatest ever Kayaka yogi and Dasohi so far. His action, preaching and personal involvement in the mundane problems of the common people made him a great votary of the principles of equality, Kayakave Kailas and Dasoha.

In the next expression, the poet has very beautifully conveyed reciprocal action. He writes,

You love planet this,
so also does the earth you.
The shooting stars
falling on the earth

are like kisses on your forehead.

This expression attains the pinnacle when the poet says that the Lord loves the common men and women and in return everybody loves him so much. His service to man teaches us the lesson of Kayaka, so everybody talks about the gift that he has received from the Lord in the form the art of writing. This epic is all possible because of Lord Sharnabasaveshwara who has gifted a few words of wisdom to compose such a realistic long narrative poem on the life, bounties, miracles, and bliss in the life of Sharnbasava.

In the next expression, the poet talks about the inadequacy, he writes,

How do I pray you?

Ifind ways inadequate!

forms insufficient!

time enough not!

words too weak!

and similes look ineffective!

It shows that the poet finds himself in clutches and short of wor to admire the mighty contributions and miracles of Lord Sharna Basar The poet also says that since he came to this mortal world, the grace at blessings of the Lord held him gently ever since he took his first breat later the poet continues to say that the inspiration that he got from the Lord has well-equipped him to write this epic in praise of the Lo Sharanbasava. Here the poet says,

You clapped and cheered

and praised

when I conquered

my dream paths!

Thy words mended my words.

Here, the poet surrenders himself to the Lord and his mightines. He frankly admits that the sense and ability of writing this epic was on because of the grace of the Lord. Whatever he could do in the course, time and write a few words in praise of the Lord are not actually writteresult of the blessings and extraordinary power of the Lord Sharnabasaveshwara.

In the next expression, the poet makes a comparison of his hands with the generous hands of the Lord. He says,

My Lord your hands
are more generous
and gracias
than anything else
your grace is the cause
for all that I am today.

In this expression, the poet does not take any credit of being a poet or anything else; moreover, the poet surrenders and says that it was all possible because of the blessings and grace that he received from the Lord. Towards the end of the prayer the poet says,

A garland of my devotion

dedication

and soulful submission

in a form called epic!

Accept it my Lord

as a humble pie from thy

little living being.

This is how the poet concludes his prayer and calls his epic a garland which adorns the mighty image and life of the Lord. He offers whole of his contribution in the form of writing to the Lord and shows his devotion and dedication for the work, which he has accomplished with the grace of Lord.

This is how the poet begins with his epic on Lord Shan Basaveshwara, the scion of Mahadasoha. The poet is thankful to the L for giving him good health and cheerfulness to do this mighty work years together. He wrote what the Lord dictated him to write in thise Indeed, what the poet has attempted and accomplished is commendaand an enormous work in terms of its theme and expressions. Thise tries to establish the divine ways of the Lord in human life. The poe deep and abiding faith in Lord Sharnbasava is indicative throughout prayer as it focuses and revolves around the life, miracles, and bliss in a life of the saint who was of a very high stature. The poet has deep respe and reverence for the deity and same is found among the people in a society. As the prayer addresses the Lord; correspondingly it also justifi the appreciation of the Lord in all five parts and 61 cantos which refle the life, contributions, miracles, and bliss in the life of Sharnabasava. Final the poet says that the courage that he personally could gather to deal wi these philosophical implications of writing this epic is all possible becan of the encouragement that he received from Sharnbasava.

To conclude, one can say that this epic is characterized by universal appeal, artistic expressions, and the spiritual and eternal please that it has provided throughout. The aesthetic pleasure and values of Lo Sharanbasaveshwara help us in every step of our life. The poet has we effectively characterized all this in the epic which will certainly benefit elevate common people of the society from their mundane life. The post has excellently portrayed the image of Sharanbasaveshwara in additional has also given an operative expression to the vision of Sharabasava will creative faculty possible to the poet. So, it is all clear that the preservice has a vast setting starting with the birth, bounties, miracles, and blin the life of the hero till He merges with the cosmic Soul. All these stages

in the life of the visionary have been penned poetically and skillfully by SGD Patil which is praiseworthy. This effort will be a torch-bearer to the people of the present generation.

First consist military

Primary Source

Patil, S.GD. Sharnbasava: The Scion of Dadasoha - An Epic.

Sharnabasava University, Kalaburgi. 2022. P.1-5.

_____, P.534.

——, P.556



Dr. Sannabasanagouda G. Dollegoudar Patil was born on 15th January 1961 in the Patil's family to Sri.Goudappagouda Patil and Smt. Kasturi Patil in the erstwhile Dharwad district. He has substantially contributed to language, literature and criticism. Through his two epics, one a translation and another a creative work on the life and deeds of Sharanabasva, he has given the readers a spiritual feast and an honest portrayal of the saint's life. He has rendered services to the society in different forms, being a incisive translator, keen editor, a prolific author, a passionate teacher, an

able administrator, a vibrant researcher, an astute speaker, a member of several professional organizations, and above all a true follower of the Sharana philosophy.

He got the first rank in post graduation in English Literature and was bestowed upon the Ph.D. degree on the epitomic work on Veerashaivism, the Sunya Sampadane, from the Gulbarga University, and secured First Class from Karnataka University, Dharawad in graduation with English as the major subject.

He has organized National and International Seminars and Conferences,

presented and published nearly 100 plus papers, chaired sessions, participated in panel discussions both in India and abroad, and has been the Founder Editor and Member of the Editorial Board of various Journals, and also has given radio programs reciting self translated poems of other Indian languages on the eve of Republic Day celebrations in a Poets Meet on AIR broadcast across the state from all the stations.

He worked in various capacities and earned rich experiences in the capacity of NSS and NCC Officer, Member of Academic Council of the Gulbarga University and Research Council Member, Sharnbasva University, and also worked as Member of BOS, BOE of both the universities, in addition to Akkamahadevi Women's University, Vijayapur. He is also a

Research Guide and adjudicator of Ph.D. thesis.

He served as the Principal of four premier colleges of Sharanabasaveshwar Vidya Vardhak Sangha, and took them to the region's preeminent colleges and strived to infuse the academic quality, contributed to augmentation of infrastructure and for the

financial empowerment. As a Member and Assessor of NAAC Peer Team, he has put in genuine efforts in bringing a few colleges across the country including our own as well, into the ambient of excellence. His great contribution is amply demonstrated in the magnum opus work, the epic Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha, in addition to his other thirty noteworthy creative and critical works. This work is editled by him with his colleagues.

Presently he is working as the Dean of the Languages and Director of IQAC of Sharnbasva University, Kalaburagi.

This Epic is a great contribution to the literary tradition of Indian Writing in English and it is one of the modern epics. Moreover it is a modern 'religious' epic to be compared with Sri Aurobindo's Savitri and Arun Kolatkar's Jejuri and other similar epics. - Dr.V.R.Badiger The third instrument of study, Cypheroscope is scarcely used. We have to recall in this connection. Roland Barthes's essay, The Death of the Author, wherein we learn that the author of the text dies the moment creating the work of art is completed. Later the text is given life by the reviews and interpretations of the critics only. But with regard to an epic, the poet dies even before the process of creating the text begins. He is mentally and intellectually dead and spiritually alive and conscious. The epic writer sheds his intellectually built-up personality and mind invoking the succor of the Lord. The creator of the present epic, Dollegouder, too prays to Lord: Aid me to kneel down

intellectually built-up personality and mind invoking the succor of the Lord. The creator of the present epic, Dollegouder, too prays to Lord:
Aid me to kneel down
to infuse all humility spread in the world (P.1).
The poet tones down his personality so much so that he becomes almost an infant with innocence and no prodding of his logical mind. So, he prays:

Lyrics! Pieces of my prayers!
or mere babblings of an infant! (P.2)" - Dr. B. O. Satyanarayanareddy
"The Veerashaiva religious practices are stressed through the importance given to Guru Linga and Jangama in every part of life. It also highlights again and again Panchachara, Satshala, Archana. Arpana and Anubhava. That's why it is the first epic in English on Veershaiva tradition, perhapas only one." - Dr. Mallikarjunappa
"The great soul's miracles were always almed at benefitting the greater good. His action of tilling a barren land into a land of fertility is one such example that reflects the superhuman power of the saint, What strikes the reader most is that Saint Sharana lived a humble life that was devoid of any superfluous self. He always wanted to convey the messages of equality, kindness and charity." - Rajdeep Guha
"The epic would be recited by devotees, studied by ardent research scholars with great deal of enthusiasm. The epic poet has carved out his name in the literary history of the land. As long as the saint Sharnbasva is adored by devotees so long as the epic and the epic poet Prof.S. G. Dollegoudar is remembered for his unique contribution" - Dr. N.S. Patil
"Dr. S.G. Dollegoudar's epic, Sharnbasva: The Scion of Mahadasoha is another wonder in the literary world. As in the modern context the epics are rarely written and also the grand themes are not available for the poets to compose the epics. That is why, the epics were written again and again on stories of Ramayana and Mahabharata in the Indian context.

Dr. Devidas S Naik
"The epic deals with the life, charity, miracles and bliss of the 18th century spiritual guhu and saint named, Shara

Undoubtedly, it is a great contribution to the modern Indian English literature as it might be compared with Sri Aurtobindo's Savitri, and other epics written, including a long narrative poem Jejuri by Arun Kolalkar, and also with T.S. Eliot's The Waste Land by other clinically read and studied scholars now and near future. - Dr. Ashok Hulibandi



173

W. 35 ...



A Flight Of Women From Sita And Draupadi To Modern Indian Woman

Dr. Vitthal Gore

Assistant Professor & Head, Department of English ShriHavagiswami College, Udgir, DistLatur (M.S.) E-Mail ID: dr.vitthalgore@gmail.com

Contact: +91 8999173630

Abstract

The social and cultural norms have been set by a male-dominated society in such a way that women are systematically marginalized and are prone to injustice, suffering, and exploitation. An attempt has been made to present a critique on the portrayal of Indian women with a comparative approach about iconic women like Sita and Draupadi with the modern Indian woman as reflected in English literature. Each modern woman can learn self-respect and dignity from the miserable lives of Sita and Draupadi. Sita symbolises endurance and compassion, whereas Draupadi symbolises revenge and determination. They are relevant even today and continue to inspire modern women for striving hard in order to get their rights and comfort. The present paper looks into these issues from the feministic point of view and attempts to comparatively study a journey of womankind from Sita and Draupadi to the modern Indian woman.

Key Words: a flight of women, the status of women, modern Indian woman.

|| Ahilya, Draupadi, Sita, Tara, Mandodari| Panchakanyasmarennityammahapatakanashanam ||

This is a well-known Sanskrit hymn that defines five ideal women from the Indian epics. It means that one should always remember the five ideal women named Ahilya, Draupadi, Sita, Tara,andMandodari who are considered to be the destroyers of great sins. PanchaKanya means five virgin women who have played major roles in the making of Hindu culture as reflected in the epics - the Ramayana and Mahabharata. Ahilya, Sita, Tara, and Mandodariare the iconic women from the Ramayana andDraupadi fromthe Mahabharata. Among all the five ideal women, Sita and Draupadi form greater roles and importance; both of them are the epitomes of their respective personality facets. They were instrumental inthe destruction of evil and anti-women elements like Ravana and Kauravas. Sita and Draupadi were the women who suffered a lot in their lives for none of their faults. They were suppressed and bullied by villainous males. These two heroic women from Indian mythology inspire the modern ideals of womanhood and feminism. Each modern woman can learn self-respect and dignity from the miserable lives of Sita and Draupadi. Sita symbolises endurance and compassion, whereas Draupadi symbolises revenge and determination. They are relevant even today and continue to inspire modern women for striving hard in order to get their rights and comfort. The present paper looks into these issues from the feministic point of view and attempts to comparatively study the journey of womankind from Sita and Draupadi to the modern Indian woman.

The iconic woman, Sita was the wife of Rama who was an exiled prince of Ayodhya. He was in exile for fourteen years just to keep up the promises of his father. His sense of gratitude to his father and his filial duty is an archetype not only in India but also for the entire human generation. He is called 'MaryadaPurushottam' which means a complete man with a great sense of his duties, responsibilities, and limits. In order to keep the promise of his father King Dasaratha to Kaikayee, Rama happily accepted the exile and left every royal luxury for fourteen years. In the course of exile, Sita disobeyed her brother-in-law, Prince Lakshmana, and crossed the borderline (LakshmanResha) which was personally drawn by Prince Lakshmana in order to protect her from any unexpected danger. Her disobedience brought her hardship and problems in life. In addition, she had to live forcefully in the aegis of Ravana for years together. The epic tells us the story of Sita, her sacrifice of royal life for the sake of her husband Rama, and her disobedience to Lakshmana, followed by a series of sufferings, penance, and purification. The conventional moral of the story is a woman has to obey or else she will suffer.

This epic has been debated and discussed at the international level several times and there was a common argument that the entire development in the life of Sita gives you an idea about the status of women in those days. It can be interpreted from the feministic point of view along with the contemporary modern approach. Dhunjal R. (2013) observes in his article that all men in India expect a wife like Sita or Savitri obedient, patient, and faithful. Most women in India follow the same line of thought throughout their lives. Dhunjal keeps on his argument and says,

"Modern-day Indian women put up with indignity and degradation from sheer economic necessity, being not trained for any profession. Taught from childhood that a husband's word is law, most find it easier to suffer rather than leave the security of the home to look for a job to support themselves and their children". This is a typical Indian woman's temperament; they find themselves more secure and conformable in the company of a male; it may be in the form of a father, brother, husband, or son. The sense of insecurity and identity are the major reasons which make Indian women mentally and physically ready to suffer and bear any hardships in life.

Another iconic woman is Draupadi, the wife of Arjuna, one of the five Princes called Pandavas - Udhistir, Bhima, Arjuna, Nakul, and Sahdev. She got married only to Prince Arjuna who hit the moving target and won her in the swayamvara. After the success in the swayamvara, all the five brothers went back home together and wanted to give a surprise to their mother, Kunti. As soon as they entered the home and informed their mother about the surprise Mother Kunti asked all her sons to share among themselves equally whatever they had brought for her. In that critical situation, Draupadi kept silent and did not react to any hardship that came into her life. She obeyed her mother-in-law along with her husband and kept quiet. She is also called Panchali. Many interpreters misinterpret this reference and call her the wife of five brothers. It does not mean the wife of five brothers but she is called Panchali because her father was the King of Panchal State hence called PanchalNaresh. In the course of political action in the family, there was a widening rivalry between the Pandavas and Kauravas {Pandavas: the five sons of King Pandu and Kauravas: over a hundred sons of King Dhrutrashtra's}. In the course of time, both sides got into a conflict for the possession of the state and the situation compelled the Pandavas when Draupadi was gambled away by them. In the extreme situation, the Pandavas lost her in the game then she refused to be used like a commodity. She asked the Pandavas to declare war to restore her self-respect and their lost glory. The gambling winners, Kauravas forced them to be in exile for years together. Even in these critical situations, Draupadi kept silent with a volcano within, accompanied the Pandavas, and faced many adversities and sufferings in life. Her oath and silence worked as weapons and she continuously kept the idea of revenge alive in the minds of the Pandavas. She was a woman of determination and conviction. She inspired the Pandavas for revenge and created situations when they promised her to restore her lost dignity. So the conventional moral of the story is a woman needs a company of a man to maintain and restore her dignity and respect. This is the story of a woman who wanted to restore her self-respect as her natural right not by begging it to the oppressors but with confrontation and punishment. She never pleaded before anyone except Lord Krishana for anything whereas she put her efforts to make the situations in her favour. She made unsuccessful attempts to make everybody in the court to be aware of their duties and responsibilities but in vain.

Modern critics find certain feministic elements in the characters of Sita and Draupadi. In this respect, an attempt has been made to present a critique on the portrayal of Indian women with a comparative approach about the iconic women like Sita and Draupadi with the modern Indian woman as reflected in English literature:

There are a few Sanskrit lines about women kind in general

|| KayresiDasi, KarishuMantri | RoopechaLaxmi, KshmayaDaridri | Bhuktesu Mata, ShayanesuRambha | ShatkarnaYukta, KuldharmaPati ||

These lines indicate how patriarchal society treated and dominated womankind in the past and made it a culture. Roughly translating these Sanskrit lines means that a wife should always serve her husband like a slave and she should be very dutiful to him forever, she should propose apt advice and keep herself beautiful as much as possible and look like Goddess Laxmi. She should forgive all the appalling sins committed by her husband wholeheartedly and should never raise a voice. She should serve him food like a mother and surrender herself to his will and wish like a prostitute. A woman who has all these qualities is considered to be a good wife according to Patriarchal society. In a nutshell, it seems that the male-dominated patriarchal society has always treated women for

convenience, comfort, pleasure, and gratification.

This is the actual predicament of women in India. They always feel insecure in the absence of a man who may be in any form like a father, brother, husband, or son. They are victims of dependence syndrome - father, husband, community, or religious group. This sense of insecurity and identity is deeply rooted in their psyche. The sense of dependency and lack of financial self-sufficiency is the fundamental issues making this happen for generations together. Here the question is that of their empowerment and self-sufficiency. The representation of their feminine sensibility can create awareness among them and create a space for an opportunity to express their predicament and need for empowerment through action, involvement, and creativity.

Once you have a minute of observation, we will realize that women in India are born free to be chained later. It gives you a clear picture of the status of women in Indian society. As a matter of fact, the status of women is always questionable. The dependency of women on others and traditional and conservative views of the male-dominated society make this issue more complicated and create discrimination in society. As pointed out earlier the lack of economic freedom leads to social discrimination. The social and cultural norms have been set by a male-dominated society in such a way that women are systematically marginalized and they are prone to injustice, suffering, and exploitation. Based on this discussion one can say that there are three types of women who have been suffering for generations together. The first type of woman is a very traditional and conservative type of woman who suffers even for no cause and fault and surrenders herself to the feet of a man. The second type of woman is bold and retaliates to the adverse situation. She is self-reliant and rebellious. Whereas the third type of woman is in between the conservative and modern women. She is neither fully traditional nor modern. She takes a stand based on the demands of the situation. There is one more category of women in our country; she becomes depressed, violent or self-destructive due to the pressure of the situations.

References

Dhanjal R. Status of Women in India, http://www.tribuneindia.com/2000/20000324/mailbag.htm

Rayappan, Lawrence Portrayal of Women in the Hindu Epics, Freiburg University,

2013,http://www.countercurrents.org/rayappan110413.htmRetrieved on 02.01,2022.

https://en.wikipedia.org/wiki/Vyasa#The Mahabharata Retrieved on 9 July 2022.

https://www.valmikiramayan.net/ Retrieved on 15 July 2022.

https://www.countercurrents.org/rayappan110413.htm Retrieved on 21 July 2022.

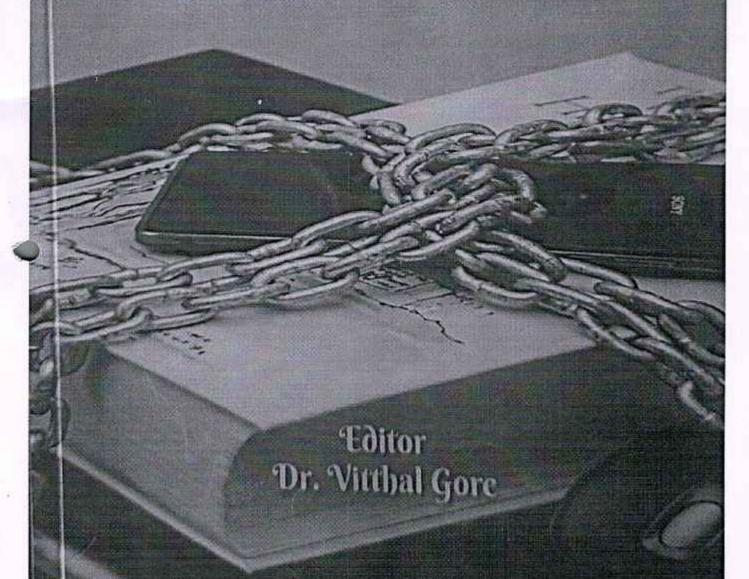
https://sanskrit.today/shloka-morning-2/Retrieved on 1 Aug. 2022.

https://www.womensweb.in/2017/04/interpretation-of-virtues-of-a-good-wife/Retrieved on 4 Aug. 2022.

https://www.legacy.com/us/obituaries/theledger/name/barbara-jeffries-obituary?id=8956851Retrieved on 4 Aug. 2022.

IPR and Research Ethics

A glimpse of law and ethics for academic and research writing



IPR AND RESEARCH ETHICS

A GLIMPSE OF LAW AND ETHICS FOR ACADEMIC AND RESEARCH WRITING

DR. VITTHAL GORE - EDITOR

Contents

Foreword	vii
reface	ix
Importance Of Intellectual Property Rights And Plagiarism: An Analytical Study	1
2. Intellectual Property Rights And Plagiarism: A Researcher	8
Perspective	
3. The Role Of Plagiarism And Ethics In Research	14
4. Plagiarism: A Threat To Research Ethics	20
5. Research Ethics And Plagiarism	30
6. Academic Research And Publication Ethics	38
7. Ethical Issues In Research: An Observation	46
8. Online Educational Resources Must Safeguard The Core Credits	55
Of The Creators	
9. Challenges And Problems In Research Pertaining To Current	64
Scenario In Tamil Nadu: A Practical Approach	
10. Higher Education In India: Itself A Research Potential Sector	71
11. Basic Principles And Strategies To Do A Plagiarism Free Research	h77

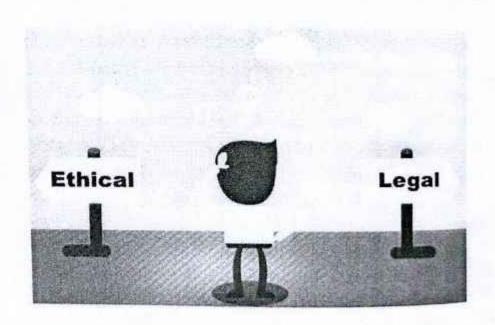
CHAPTER VI

Academic Research and Publication Ethics

Dr. Vitthal Gore

Assistant Professor and Head, Department of English, Shri Havagiswami Mahavidyalaya, Udgir, Maharashtra.

Email: shmu2nptel@gmail.com



Be ethical, Follow the law

Courtesy: <u>www.orvietocivica.files.wordpress.com/2018/08/ethical-</u> legal-feature-1.jpg?w=768 As a researcher, academic research and publication ethics are expected to be followed. In fact, it is a burning issue of the present time. If an individual really looks at the entire academic research and publication scenario in our country, you will find that most of the research and publications have been a hidden treasure of the libraries. When we compare and contrast this scenario with the American, European and a few very top rated universities in the world; we will realize the status of research at the international front. So the present paper looks into the aspects related to academic research and publication ethics in general.

Research and publication ethics have to be followed in practical professional life. The title of this paper has two keywords - Academic Research and Publication Ethics. Whenever we look at research as a whole, it is found that any kind of research whether it is scientific research or else the research done in humanities or in any other domain of knowledge; it is a systematic investigation for pertinent information on a specific topic. For an academician, it is expected that when you are doing any research; it should be very systematic with a proper investigation for the pertinent information on the specific topic. In addition, it is expected to be very careful while doing an enquiry specifically through search for facts in any branch of knowledge that has been taken up for research. Sometimes a researcher really fails to talk about the facts, the kind of assumption that we have in the beginning and the conclusion that has been drawn at the end should justify each other. In between, a researcher is also expected to deal with some of the facts and reveal the facts to the person who is seeking knowledge from your research. So, in general one can say the kind of research that someone takes up is a kind of academic contribution from one's end to the existing stock of knowledge. A researcher always try his/her level best to make it for certain advancement in the domain knowledge because once the topic is taken up for systematic investigation, it will lead to certain conclusion. A researcher tries to retrieve the pertinent information as required for the specific part. S/he also finds out certain facts in this respect and tries to put forward these facts to somebody but beyond that as a whole one should look at the contribution which is an academic research contribution from the end of a researcher who will make certain advancement in the domain. It is actually a pursuit of truth and of course this is not only the pursuit of truth but a kind of pursuit of knowledge with the help of a systematic scientific study. A sort of observations that a researcher makes and undertake some of the of the experiments if at all the topic demands, and finally s/he comes to findings and conclusion but a holistic look at it, will bring out all $k_{i\eta d_S}$ of academic research demands commitment, involvement and an $appr_{0ach}$ that leads to some ethical issues into consideration.

Actually, the term 'ethics' itself is a very vast branch of knowledge that deals with moral principles and the values of a group of people of a community or society or state or country. Professionally culture and civilization are not going to deal with it; rather the topic deals with certain moral principles in your professional life. Sometimes we come across a person who is morally strong or s/he is very ethical in her/his practices. It means that the moral principles or values that s/he has cultivated and nurtured in the course of time are the part and parcel of one's personality. The moral values or principles, a set of ethical standards that someone adopts and adheres makes the foundation of professional life. But in the course of time, what happens with these moral values and principles actually govern an individual's behaviour and his/her own conduct. An ethically strong person will reflect the same in his personality. If someone is morally sound, it also reflects in the way s/he conducts any kind of activity.

These days the quality of research is degrading day by day. In the numerical point of view, it is showing vertical growth but in the qualitative point of view it is decreasing radically. So this is really a matter of worry for all the academicians and researchers. Ethics and moral principles are separate branches of study. They are treated as a part and branch of philosophy that involves systematizing and defending and recommending concepts of right and wrong behaviour.

When you try to correlate ethics or the philosophical world of ethics, you will realize that they refer to the rules provided by an external source. Do you think that the ethics are really introduced by an individual no matter whether they are cultural or social or professional values or the family values? It means these are the rules which are promoted or provided by the external sources and resources; so it is the responsibility of an individual who may be a teacher or academician or researcher to adopt the code of teaching and research is concerned.

When you generally talk about the field of ethics and try to correlate this with aesthetics; you will realize that the field of ethics along with aesthetics concerned the matters of value and enhances the values of an individual. It means the field of aesthetics comprises the branch of philosophy called axiology. Philosophy is an abstract realm, if you don't want to get into that

but as a matter of fact without philosophy you cannot also live your own life.

Whenever we talk about ethics and values, I think we need to really consider certain codes of ethics. Now you can distinguish between what are the professional values and the personal values; once you are in a position to differentiate and distinguish between the personal and professional values then you will also have certain values called research values. Eventually, you come to a better understanding of distinguishing your personal life with the professional life. Whenever you talk about the code of ethics, you need to interrogate yourself when to take a stand on individual integrity, professional competence, confidentiality, objectivity, and professional behaviour. Now make an effort to dissociate the personal matters with the professional matters just try to separate it. Just try to dissociate by asking a question to yourself; what is the level of your integrity for the research activity, commitment, profession, competence and so on.

On this particular path of self-realization, improvement and development your professional competence will go up higher and higher. Similarly check your confidentiality when you work as a professional; as a researcher and how you really proved to be very objective and create a sort of objectivity in your own path of career. That will actually decide your professional behaviour altogether as a teacher, a researcher, and as an individual as well. If you correlate these things with your personal values and ethics and then your professional values and ethics automatically become the part of your personality which will grow day by day and your aura will automatically be realized by the people around.

Here an attempt has been made to discuss research ethics with the focused approach. As a matter of fact, what are we supposed to do; what are we supposed to remember; and what are we supposed to really follow and adhere in our personal life as a teacher, as a researcher and then you see the outcome will definitely be different as far as research ethics are concerned. All the research ethics that you really adopt in your personal academic research life whether you do a minor or major research project or

PhD; we have a number of opportunities to involve these ethical values. We undertake research projects, we have our own resources, we use multiple resources but now the question is how far you are committed for your own research and how far you are trustworthy while using various resource.

resources which are available at your desk because we are living in the highly highly sophisticated technologically advanced world. Already we have completed two decades of the 21st century; technology, Internet, computer laptop, Smartphone, all these digital products have really made this entire word as a Global Village. The whole world is well connected with the help of Internet today, so e-content is available, e-resources are available but now the question is - how far we are trustworthy while using these resources and when you really see that somebody is very ethical about the use of resources automatically the outcome of research will also be equally good.

In addition, I will also discuss about the scientific misconduct and the kind of regulation which is introduced by the UGC that we have to follow while doing certain research and that is the reason that all of us are very careful about publishing our research papers in UGC Care Listed journals. We are very particular to see whether the journal is really doing the peer review process or not; we need to be so particular whether the researcher himself or herself has properly given justice to the topic or not. Actually, it makes a good researcher for the society, for the state, for the country. If you are ethically strong, automatically all these values will reflect in the kind of research that you undertake. Just to consider the research values is not sufficient; you need to actually adhere to these ethical principles in order to protect the dignity, and welfare of research participant. You might have heard about such kind of happening somewhere especially in the domain of science and technology that somebody has done research but unfortunately when the outcome is visible that a person is ignored and sidelined. He is not given any credit and automatically leads to the legal issue. The point is, these are personal codes of conduct; based on the respect for the self, others and all around. Unless it is really a very principled personality, how can others really expect from you that you will coordinate friendly and professionally to deal with the research matters.

Actually, several things are governed by the principles and assumptions underpinning the way individuals or organizations to conduct any research. A set of principles guide your research design and practice. Gradually an attempt has been made to discuss the core of research. So, these personal values and ethical values will be gradually continued with your research and academic values. So, the ethical considerations in research or any kind of research activity that you take up actually as a set of principles guide your research design and practices as well.

So, you have the research ethics which actually involve the application of fundamental ethical principles to research activities that you undertake. It also includes the design and implementation of certain research that you

DR. VITTHAL GORE - EDITOR

take up towards the society and others. It also provides you a platform to use the resources and the research outcomes by keeping in mind the kind of scientific conduct and misconduct you do and the regulation of research as imposed by the law of the nation for any apex body like University Grants Commission and so on.

Now try to understand, the goal of ethics in research. Gradually an effort is made to expand the boundaries of this discussion and definitely by the end you will be fully convinced that we have to have a very appropriate professional approach while dealing with these things.

So whenever you talk about the goal of ethics you need to really look into this matter that the goal of ethics in research is to guide the researcher to evaluate several things that you have - what the researcher is going to do in his research means what are they searching; what is the research project taken up for study; what is the objective of research; are hypothesis being tested in the best way; are protocol being followed as expected for the respective research; what is the study undertaken by the researcher. In the interest of society, you need to count it whether the lights of the respective subject are being protected by an individual or not. Unless the researcher is going to address all these goals, the research will never proceed.

Let's try to highlight a few research ethics and now you could see the research ethics as a whole. Everybody knows 'honesty is the best policy'. Now question yourself how honest you are to yourself; how honest are you to others; how honest are you for your profession; how honest are you while reading; while doing any kind of research, whether it is for a research article or for a major or a minor research project. Your own research, ethical, moral standards will reveal the fact and lets you know where you really stand.

Let's talk about the informed consent, sometimes we do follow; we do learn a few things from others and we do give credit to them in the respective document; at least they are referred to in the bibliography or else in the reference section; in the works cited section but if at all you are going to use somebody's scientific formula don't forget to take the proper concern from the Individual; don't forget to give him the credit; don't forget to involve the person into your research activity. Similarly, be very ethical as far as beneficiaries are concerned; be very particular about the non-magnification of the person's identity; be very responsible for the kind of publications that you use because if at all you are getting benefit from.

We should be open minded and the most important thing in the research field is you should give due respect to the intellectual property rights.

Never get into the legalities, if at all you are not giving due respect to the intellectual property rights; may be a lateral stage you may be into a difficulty. How do you really justify your own research work and while giving credit to certain people, you are using their material, using their references, using their content, whether you are following the rules and regulations especially provided in the IPR and whether you are really conscious of plagiarism.

The United States of America has a unit called National Science Foundation and they have defined types of misconduct in 3 different categories what are these categories number

- 1. Fabrication
- 2. Falsifications
- 3. Plagiarisms

As far as the fabrication is concerned, it means making up the data or result; it means doing some sort of fabrication with either the data or the results which are actually the outcome of some other research; whereas you have falsification means to manipulating the research material. The research process or changing or omitting the data or the results which are the outcomes of the previous research done by somebody else and here you falsify the things such as the research is not accurately represented in the research record. It means all together you proved to be a kind falsified personality or a personality who has created some sort of falsification in the process of research. No one should ever fabricate, never falsify, never own it means you claim that actually someone else work or the ideas as your but you claimed that this is your research outcome.

As far as intellectual honesty is concerned intellectual honesty in the honesty with respect to the meaning of one's own research. If you are intellectually honest, you will never falsify the matter; if you are you will never like plagiarism because these things are interconnected and data honestly. If at all it is your own, s/he will claim that it is his own and sometimes in verbal form also if at all needed when you develop your

DR. VITTHAL GORE - EDITOR

research paper, when you develop your thesis, when you write your thesis, you are responsible for everything.

References

Nimish Choudhary and Sara Hussain (2021) Handbook of Research and Publication Ethics, Bharti publications, New Delhi.

https://www.who.int/activities/ensuring-ethical-standards-andprocedures-for-research-with-human-beings

https://www.stir.ac.uk/research

https://www.apa.org/monitor/jan03/principles

https://www.scribbr.com/methodology/research-ethics/

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC4196023/

https://www.publichealthnotes.com/research-ethics-definition-

principles-and-advantages/

Basic Principles and Strategies to do a Plagiarism free Research

Ms. J.D. Sampale

Assistant Professor, Department of English, Shri Havagiswami Mahavidyalaya, Udgir, Maharashtra.

no a bu

11 1 Trans

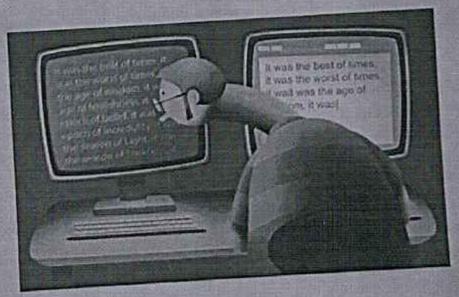
DOT TOTAL

a Andrews

10万世年

2000年

Email: sampale.jyoti@gmail.com



Say No To Cut, Copy and Paste

Courtesy: https://www.nbcnews.com/id/wbna32657885

Copyright © Dr. Vitthal Gore - Editor All Rights Reserved.

This book has been self-published with all reasonable efforts taken to make the material error-free by the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book

Made with ♥ on the Notion Press Platform www.notionpress.com Plagiarism means to present someone else's concepts or ideas without giving any acknowledgement to the creator or without giving any credit to giving any acknowledgement to the creator or without giving any credit to the creator. It is an academic misconduct of representing other's ideas as the creator. It is an academic misconduct of representing other's ideas as the creator. It is an academic misconduct of representing other's ideas as the creator is to add or discover or invent new ideas which will enhance the research is to add or discover or invent new ideas which will enhance the existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and exist of the existing stock of knowledge, Plagiarism encourages original research and exist of the exist of

Plagiarism is an act of directly or indirectly copying/quoting/paraphrasing other's ideas as your own without mentioning or using the source. It is a kind of offence and liable for punishment under the intellectual copy right laws. It is always good to be careful of citing and mentioning the source of the content in a proper methodology and ethical ways. Commonly plagiarism occurs in many ways like direct plagiarism, self-plagiarism, accidental plagiarism, complete plagiarism and patchwork plagiarism. In the world of digital technology, it is easier to detect plagiarism. New researchers must know about it and take steps to prevent it.

Basic Principles of Plagiarism

Plagiarism matters concerning the following attributes. Here are a few specific principles of plagiarism that matters in academic and research arena.

Understanding the wider knowledge

True purpose of education is to enhance the understanding of life and the world and this is possible only when a researcher studies deeply about the particular subject. True research invents new possibilities and ideas hence benefit truly for betterment of mankind. Academic research is an intellectual challenge, if someone completes it successfully; it will benefit in order to understand the topic fully and this way one can achieve the purpose of research.

Growth of human knowledge

The broad purpose of research is to add and build new ideas reconsidering the earlier contributions by researchers. Plagiarism presents merely others' ideas and not so beneficial for the societal issues and expected solutions. Research must to add some value and not merely presenting earlier contributions in the new form. Advancement of human

knowledge is possible through the promotion of plagiarism free academic research only.

Academic Integrity

34

45

30

Phys.

100 200

E I

N.

416

唯田

March 1

EDE (co

Abor. to the same

如海

शह व एव

18883

自治

21200 21 135

risb

1 FEE

THE DE

To maintain academic integrity, plagiarism matters. It is essential to represent academic works, studies, and findings about a particular topic truthfully. Plagiarism fosters true academic work and stop unethical practices. Academic integrity mentions to the practice of adopting ethical ways to carry out research. It is always fair to have academic integrity in research work. Plagiarism free research shows an academic integrity hence research work gives the contributor a sense of pride.

Acknowledgement of Creator's Credit

A basic principle of scholarly research is that scholars deserve credit for their contributions, their ideas and intellectual toil; henceforth the credit must be acknowledged legibly. If someone is using the creator's new ideas erasing his or her acknowledgment, it will discourage or underestimate the original ideas. It will be like discouraging the creation and so it may harm creativity. It is very much necessary to attribute the credit to the original creator.

Intellectual property Rights

Intellectual property Rights (IPR) refers to the creation of the mind such as inventions, literary and artistic works. IPR provide protection for creation and inventions to enable creators to earn recognition and financial benefit from their work. IPR is a right given to a person for the creations of his or her minds. IPR usually gives the creator an exclusive right over the use of his/her creation for a certain period of time. The main motive of intellectual property rights and related issues is to promote and reward inventive research. Above all, the principles depict clearly why plagiarism matters in academic writing and how it is important to use ethical approach while conducting your research.

Strategies to avoid plagiarism

There are many online plagiarism checking tools and platforms. One can use these tools and platforms and keep oneself away from this unethical practice. Here are a few ways to avoid plagiarism in your research:

- 1. Properly cite and acknowledge the sources
- 2. Include quotations properly
- 3. Properly paraphrase the content
- 4. Present your own ideas

Contents

WO	

Preface	
1. Importance Of Intellege.	i
I. Importance Of Intellectual Property Rights And Plagiarism, An 1	
2. Intellectual Property p	
	8
3. The Role Of Plagiarism And Ethics In Research	
4. Plagiarism: A Threat To Research Ethics	14
5. Research Ethics And Plagiarism	20
6. Academic Research And Publication Ethics	30
7. Ethical Issues In Research: An Observation	38
8 Online Educational Passess	46
8. Online Educational Resources Must Safeguard The Core Credits Of The Creators	55
9. Challenges And Problems In Research Pertaining To Current	64
Scenario In Tamil Nadu: A Practical Approach	
10. Higher Education In India: Itself A Research Potential Sector	71
11 Pasic Principles And Strategies To Do A Plagiarism Free Passa	rob 27

- 5. Use online plagiarism tools
- 6. Keep a track of the sources in your research 7. Not to procrastinate with your research, as good research takes time.
- 8. Allow bounteous time for in-depth understanding of the topic
- Record bibliography accurately.

Plagiarism free research can be done if a researcher takes care of these things as stated above.

Plagiarism Prevention Blueprint

One must consider the following blueprint while doing scholarly work -

- · Use quotations when taking someone's exact words
- · Paraphrase while using someone's ideas in your own words
- · Use citations while taking ideas from a source
- · Follow the rules of citation style
- · Prevent of Self-plagiarism
- Use of reliable plagiarism checker
- · Use of reference list for every source
- · Think alike a scholar to prevent plagiarism

An academic researcher is a scholar who thinks practically and studies in detail to resolute societal issues through his/her research.

Conclusion

The main motive of any research is the creation of new knowledge or addition to the existing standard of knowledge in a unique and creative way for enriching the present stock of knowledge. Research must be completely plagiarism free so as to promote creativity and innovation. The principles discussed in this paper can help all the researchers to understand the reason why plagiarism matters in research works. These principles will definitely help a researcher to conduct research ethically and follows the legible ways hence ultimately it makes the research work truthful and trustworthy. When you carry your academic work in this manner, it becomes more meaningful and resolute. Undoubtedly plagiarism free research is the voice and valuable contribution to the society.

References

https://earleton.edu>writing http://classic.austlii.edu.au https://www.anzela.edu.au

अनुक्रमणिका

1	विश्वनायक महात्मा बसवेश्वर यांचे विविध विचार	प्रा. डॉ. लक्ष्मण काशिनाथ उलगडे	११
۹.	महात्मा गांधींचे आर्थिक विचार आणि सद्या स्थितीतील उपयुक्तता	प्रा. डॉ. इक्बाल खान गफार खान	१६
a,	युगप्रवर्तक क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुलेंचे कार्य कर्तुत्व आणि वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. मंजुश्री लांडगे	89
٧.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शौक्षणिक, राजकीय विचार व कार्य	डॉ. भद्रे एन. जी.	23
ц.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार	प्रा. डॉ. डी. पी. कांबळे	26
ξ.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषी विषयक विचार	प्रा. डॉ. सारिका विष्णू केदार	38
١٥.	गीतम बुद्ध यांचे विविध विचार	अनिल नारायणराव पंडित	30
٥.	स्वामी विवेकानंदाचे शिक्षणविषयक विचार	प्रा. डॉ. बोनर आर. वाय.	४१
٩.	अहिल्यादेवी होळकर यांचे लोककल्याणकारी कार्य	प्रा. डॉ. गणेश गोविंदराव माने	४६
20.	स्त्रीशिक्षणाचे आद्यजनक : महात्मा फुले	प्रा. विनया केशव कांबळे	40
88.	राजर्षी शाहू महाराज - एक आर्थिक विचारवंत	डॉ.राजेश्री अप्पाराव जाधव	48
१२.	सावित्रीबाई फुले यांचे शैक्षणिक सामाजिक व इतर विचार	पंदित कीर्ती नारायणराव	40
¥ 3.	अहिल्यादेवी होळकर यांचे सामाजिक कार्य	प्रा. डॉ. वसंत पांडुरंग सरवदे	€ 3
88.	समाजक्रांतीचा अग्रद्त महात्मा बसवेश्वर	डॉ. बबन के. सोनवणे	86
१५		प्रा.डॉ.कऱ्हाळे विलास लिबांजी	७३
१६	अण्णा हजारे यांचे विविध कार्य	प्रा.डॉ. भगवान श्रीपती सांगळे	lele
१७	आर्य चाणक्य- कौटिल्याचे अर्थशास्त्र	प्रा. डॉ. गव्हाळे बी. व्ही.	८९
१८.		डॉ. प्रदीप बस्बराज पाटील	९६
१९	. राजधीं शाह् महाराजांचे सामाजिक व शैक्षणिक विचार	प्रा. डॉ. उत्तम सिताराम कन्हाळे	१०

₹٥. 33 ड ३०. व ३१. म ३३. कृ ३४. सं 31 ऐ ३५. पेरि सा सां ३६. साः

३७. चाप

विश्वनायक महात्मा बसवेश्वर यांचे विविध विचार

प्रा. डॉ. लक्ष्मण काशिनाथ उलगडे संशोधन मार्गदर्शक व लोकप्रशासन विभागप्रमुख श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय उदगीर जि. लात्र

प्रास्ताविक :-

176

179

187

193

196

203

बाराव्या शतकात संबंध विश्वात महात्मा बसवेश्वरांनी पुरोगामी व विवेकवादी विचारांच्या माध्यमातून समग्र ऐतिहासिक क्रांती घडवून आणली. जात, धर्म, वर्ग, लिंग ही सर्व भेद नाकारून समताधिष्टीत समाज व्यवस्था निर्मितीचे स्वप्न नब्हे तर प्रत्यक्षात अनुभूती दिली. ते आज कोणालाही विसरता येणार नाही. समाजाला योग्य दिशा व समानता देण्याचे धाडस बसवेश्वर यांनी दाखवले.महात्मा बसवेश्वर यांचा जन्म सन ११०५ साली कर्नाटक राज्यातील बागेवाडी येथे मादिराज (वडील) व मांदलाबिका (आई) यांच्या पोटी झाला.लहानपणापासूनच बसवेश्वर हे अतिशय चाणक्ष, अभ्यासू वृत्ती, नवनवीन माहिती जाणून घेण्याची, समाजसेवेची तळमळ, निर्णय घेण्याची क्षमता त्यांच्या अंगी सामावलेले होते.महात्मा बसवेश्वरांची जन्मभूमी बागेवाडी, कर्मभूमी मंगळवेढा आणि बसवकल्याण तर एक्यभूमी ही कुडलसंगम होती. क्रांतिसूर्य महात्मा बसवेश्वर यांना विश्वनायक, विश्वरत्न, युगपुरुष, क्रांतिकारी आद्यसमाजसुधारक, वीरशैव लिंगायत धर्माचे संस्थापक, वचनसाहित्याचे शिल्पकार, खी स्वातंत्र्याचे पुरस्करते, दासोह व कायक सिद्धांताचे जनक,समतेचे प्रणेते, मानवतेचे पुरस्करते, पहिल्या जागतिक भारतीय संसदेचे (अनुभव मंटपाचे) जनक, सर्व जाती धर्माचे उद्धारक म्हणून ओळखल्या जाते.महाराष्ट्रात मंगळवेढा, कर्नाटकात बसवकल्याण, कुडलसंगम, उळवी व इतर अनेक ठिकाणी शरण स्थळे आहेत. महात्मा बसवेश्वर यांच्या कार्याचा प्रभाव आजही भारताप्रमाणेचविदेशात देखील ज्यामध्ये अमेरिका, इंग्लंड, जपान, आयरलंड, फ्रांस, चीन, रशिया, हौगकाँग, ऑस्ट्रेलिया व इतरही अनेक देशांचा समावेश होतो. उदा : देशात व विदेशातील चलनी नोटावर, नाणे वर महात्मा बसवेश्वर यांचे तैलचित्र, पोस्ट तिकिटावर छायाचित्र, अनुभव मंटप, संग्रहालय, स्मारके, अश्वरूढ पूर्णांकृती पुतळा, व्याख्यान शिबीर, विविध विद्यापीठात अध्यासन संशोधन केंद्र इत्यादी.

* विविध कार्य व विचार :-

महात्मा बसवेधर यांनी बाराव्या शतकात कल्याण राज्यात केलेल्या ऐतिहासिक कार्य व विचारांचा अभ्यास पुढीलप्रमाणे करता येईल. यामध्ये

१. सामाजिक विचार :- सामाजिक क्षेत्रात विषमतेला विरोध करुन महात्मा बसवेश्वरांनी समता व बंधुभाव या तत्वावर नव्या सामाजिक पुनरघटनेची दिशा सुचिवली. परंपरागत विषम वर्णश्रम धर्माविरुद्ध त्यांनी भक्तीने सर्व जातीतील लोकांना समपातळीत आणणाऱ्या विचारांचा पुरस्कार केला. व्यक्तीचा विकासातून सामाजिक परिवर्तन, क्रांती घडून आणले. त्यामुळे त्याकाळी समाजात वाईट पद्धतीने चाललेल्या प्रथा, अन्याय, हुकूमशाही,

राष्ट्रीय महापुरुष व विचारवंत : कार्य आणि विचार / ११

लुटाल्ट, घराबाहेर खियांना बंदी, भेदाभेद आदी खडल बाबींचा समूळ नाश करून महात्मा बसवेश्वर यांनी नव्या क्रांतिकारी समाजाची निर्मिती केली हे क्षण ऐतिहासिक ठरले.

वचन :

नको करू चोरी नको करू हत्या नको बोलू असत्य नको धरू मनी द्वेष नको मानू कोणा तुच्छ नको आतमस्तुती नको करू निंदानालस्थी हिच खरी अंतरंगशुद्धी, हिच खरी बहिरंग शुद्धी.

२. आर्थिक विचार :- महात्मा बसवेश्वर यांनी आर्थिक क्षेत्रात उद्यमशिलतेचा पुरस्कार केला आणि श्रमाची प्रतिष्ठा वाढविली. व्यक्ती जीवनात त्यांनी रादाचाराचा महिमा प्रत्यक्षात आणून नैतिक जाणीवा रुजविल्या. त्याचप्रमाणे धर्म जीवनात अवदंबर टाळून अतः प्रामाण्यआणि अंतरंग शुद्धता यांना विशेष महत्व दिले. कल्याण राज्याचे महामंत्री व कोष प्रमुख म्हणून बसवेश्वरांनी आर्थिक प्रशासनात काटकसर, सचोटी, पैशाचा लोककल्याणासाठी वापरावर भर तसेच भ्रष्टाचारास आळा, लहान मोठया व्यावसायिकांना प्रोत्साहन, आर्थिक सहाय्यता आदी बाबींवर दिले होते. उदा : शेतकऱ्यांना शेतीची संसाधने उपलब्ध करून देणे, शेतसारा (Tax) वसुल करणे.

वचन :

नसे कोणी मजहुनी लहान नसे कोणी शिवभक्तहुनी महान यासि तव चरण साक्षी मम मनही साक्षी मज असे हेचि पवित्र प्रमाण हे श्री कुडलसंगमदेवा.

- ३. स्त्री मुक्ती विषयक विचार :- महात्मा बसवेश्वरांनी सर्व जाती धर्मातील स्त्रियांना जीवन जगण्याचे स्वातंत्र्य, हक प्राप्त करून दिले. अनुभव मंटप या मानवकल्यानाच्या व्यासपीठावर पुरुषांच्या बरोबरीने, सन्मानाने स्त्रियांना बसविले. त्याकाळी ख्रियांवर इतर समाजाकडून होणाऱ्या मानसिक व शारीरिक शोषणातून मुक्तता केली. उदा : स्त्रियांना शिक्षण, लिंगदिक्षा, धार्मिक स्वातंत्र्याचा अधिकार, निर्णय प्रक्रियेत व अनुभव मंटपातील चर्चेत सहभाग, बालविवाहास विरोध, सती प्रथा बंदी, वेश्याचे पुनर्व्हसन, अनाथ मुलींना मोफत निवास्थान व सुरक्षा प्रदान, आंतरजातीय विवाहास प्रोत्साहन इ.
- ४. राजकीय विचार :- कल्याण राजाच्या शासन काळात घेण्यात आलेल्या राजकीय निर्णय, नेतृत्व संबंधी महात्मा बसवेश्वर म्हणतात की, कोणताही व्यक्ती हा राजकीय प्रमुख असला तरी तो मुळात त्या प्रांताचा राजा असतो. लोक कल्याण, राज्याचे संरक्षण लक्ष्यात घेऊनच राजकीय निर्णय घ्यावेत. दरम्यान आपल्या सहकारी वर्गांचे, जनतेचे सल्ला, मत जाणून घेणे आवश्यक आहे. त्यामुळे जनतेच्या विकासात कोणतीही समस्या निर्माण होणार गही. उदा : राज्याच्या हिताच्या दृष्टीने राजकीय निर्णय असावेत, राजा किंवा शासन हे जनमुख, समस्याचे निवारण करणारे असावे.
- ५. धार्मिक विचार :- अनुभव मंटपाच्या माध्यमातून ग्रहात्मा बसवेश्वरांनी देश विदेशातील सर्व जाती धर्मातील लाखो शरण-शरणींना सहभागी करुन घेऊन धार्मिक शिक्षण, मार्गदर्शन केले. नव्या दिशा, संस्कार, संस्कृती जतन करण्याचे धडे, आचार विचार संदर्भात सखोल माहिती दिले. जाती धर्मात त्याकाळी होणारी विधातक प्रथेचा नाश करुन सर्वाना समान अधिकार, हक्क, बंधुत्व भावना निर्माण केले.वीरशैव लिंगायत धर्माचे संस्थापक

राष्ट्रीय महापुरुष व विचारवंत : कार्य आणि विचार / १२

मह आ का

उप: वर्गा निर्मि

ऐति मित्र

भारत

आण् देणे । अनुभ अनेव शिबी समावे वर्गवि

झाली

चितीत

आहेत

स्वच्छ पर्यावर पर्यावर ठिकाण

मास, व

ांनी नच्या

म्हणून महात्मा बसवेश्वर यांना ओळखले जाते.

वचन :

दयेविना धर्म तो कसा दयेविना धर्म तो कोणता दया हवी सकल प्राणीमात्राठायी दया हेचि धर्माचे मूळ दया धर्माचा सार दया धर्माहुनी थोर न रुचे श्री कुडलसंगमदेवा.

६. प्रशासकीय विचार :- बारावण शतकातील पहिले जागतिक आदर्श प्रशासक, कल्याण राज्याचे महामंत्री, प्रधानमंत्री, कोषाध्यक्ष म्हणजे महात्मा बसवेश्वर होय. कल्याण राज्यात बिज्जल राजाच्या शासन कारभारात अतिशय उत्कृष्ठ प्रशासकीय कार्य, अधिकारी व कर्मचाऱ्यात शिस्त, समन्वय, जबादारीची जाणीव, सहकार्य भावना, कामात पारदर्शकता, प्रभावी निर्णय क्षमता, नियंत्रण, जनमुख जलद सेवा, विविध लोककल्याणकारी योजना, उपक्रमाची तात्काळ अमलबजावणी, श्रमाला व वेळेला महत्व, कार्याचे विभाजन, प्रशासकीय नित्तीमत्ता, कर्मचारी वर्गाचे उच्च मनोबलास प्रेरणा, कामावरून मोददला, समान तत्व, प्रशिक्षण शिबीर आयोजन, कार्यक्षम नेतृत्व निर्मिती, कर्मचारी सेवा सुरक्षा, चांगले कार्य करणाऱ्या व्यक्तीस बक्षीस, सन्मान, कार्याचे विकेंद्रिकरण आदी ऐतिहासिक कार्य महात्मा बसवेश्वर यांच्या प्रशासकीय विचारात दिसून येतात. उदा : वरिष्ठ - कनिष्ठ यांच्यात मित्रत्वाची भावना वाढीस, एकात्मता.

७. अनुभवमंटप व समतावादी विचार :- महात्मा बसवेश्वर यांनी स्थापन केलेल्या जगातील पहिली भारतीय संसद (अनुभव मंटप) हे मानवी प्रतिष्टेचे अधिष्ठान, व्यासपीठ होते. सर्व जाती धर्मातील घटकांना एकत्र आणून त्यांच्या विविध समस्या, प्रश्न आदींचे योग्य निराकरण करणे, मुक्त स्वातंत्र्य आणि समान संधी प्राप्त करून देणे हाच प्रमुख उद्देश अनुभव मंटपाचा होता.अनुभवमंटपात ७७० शरण व शरणींनी सर्व प्रथम सहभागी झाले होते, अनुभव मंटपाचे पहिले अध्यक्ष श्री अल्लमप्रभुदेव यांची नियुक्ती महात्मा बसवेश्वर यांनी केली होती. या लोक संसदेत अनेक शरण व शरणींनी वचन साहित्य लिखाण, अभ्यास, चिंतन, योग अभ्यास, मार्गदर्शन, उपक्रम, चर्चा, प्रबोधन शिबीर आदी कार्य महात्मा बसवेश्वर महाराज यांच्या नेतृत्वाखाली घडवून आणले.त्यानंतर लाखो शरण शरणींचा समावेश असल्याचे संशोधन अभ्यासातून आढळून येते. समता हा बसवेश्वर यांचा श्वास व ध्यास होता. त्यांना वर्गिवहीन व शोषण विहीन समता धिष्टीत न्याय पूर्ण समाज व्यवस्थेची निर्मिती करावयाची होती. ती प्रत्यक्षात साकार झाली. त्यांच्या मते माझ्यापेक्षा कोणीही लहान नाही. शिव भक्तांवाचून कोणीही श्रेष्ठ नाही. जो सर्व जीवांचे कल्याण चिंतीतो तोच खरा श्रेष्ठ आहे. उच्च नीच पणाचा जातीशी काहीही संबंध येत नाहीतर सर्व समान, समता धिष्टीत आहेत.

८. पर्यावरण विषयक विचार :- व्यक्तीने सर्वप्रथम स्वतः स्वच्छ मनाने कार्य केले पाहिजे मग इतरांना स्वच्छता संदर्भात आव्हान करावे. कल्याण राज्यात त्यांनी प्रधानमंत्री म्हणून काम करीत असताना बिज्जल राजास पर्यावरण पूरक कार्य पार पाडण्यास भाग पाडले. त्यांच्या मते, झाडे लावणे व संगोपन करणे, स्वच्छता राखणे चांगल्या पर्यावरण निर्मितीच्या दृष्टीने अत्यंत आवश्यक आहे. उदा. विहीर, नदी, तलाव, नाले, सार्वजनिक स्थळ आदी ठिकाणी हार तुरे, कचरा, अन्न पदार्थ टाकू नये.पाण्याचा लापर जपून करावा, पाणी दूषित करू नये, पाण्यात कपडे, मास, कचरा, पैसे टाकू नये. पाणी हे मानवाचे खरे जीवन आहे. झाडांची तोड करू नये, पशु-पक्षी, जनावरे यांचे

ता आणि जविल्या. कल्याण प्राणासाठी ो बार्वीवर

जगण्याचे सन्मानाने ता केली. ोल चर्चेत क्षा प्रदान,

य, नेतृत्व ॥ प्रांताचा ॥ सहकारी जिम्माण समस्याचे

सर्व जाती , संस्कार, ो विधातक संस्थापक

राष्ट्रीय महापुरुष व विचारवंत : कार्य आणि विचार / १३

संरक्षण करणे, पर्यावरण विषयक जनजागृती मोहीम जनतेत रावबिंगे काळाची गरज असल्याचे मन त्याकाळी वसवेश्वरांनी व्यक्त केले ते आज देखील तितकेच महत्त्वपूर्ण ठरत आहे.

९. अंधश्रद्धा - निर्मूलन विषयक विचार :- त्याकाळी समाजात मोठ्या प्रमाणात अंधश्रद्धा या रोगाने हाहाकार माजवलेला होता. उदा : करणी, भूत बाधा, वांज, अपशगुनी, मानसिक छळ, भीतीमय परिस्थिती, ढोंगी बाबांचे, पंडित यांचे साम्राज्य विनाशकारी बनले होते, त्याचा परिणाम समाजावर झाला होता याप्रसंगी महात्मा बसवेश्वर यांनी समाजातील विषमतेबरोबरच अंधश्रद्धेचा समूळ नाश करुन अंधश्रद्धा निर्मूलन विषयक कार्य हाती घेतले होते. म्हणूनच समाजाला एक नवी दिशा प्राप्त करुन दिली. उदा : ढोंगी, यांत्रिक यांच्यापासून समाजाला द्र ठेवले, नारळ फोडने, नदीत पैसे व हार, देवाला नवैद्य, मांजर आडवे जाणे, बाहेर जाताना रिकामं घागर येणे आदी विकृत बाबीना प्रखर विरोध बसवेश्वरांचा होता.

वचन :

मंत्र म्हणत म्हणत पहा देती तुला बळी अरे, बोकडा तू रड वेद वाचणाऱ्या पुढे रड शास्त्रपुराणे श्रवण करणाऱ्यापुढे तू रड तुझ्या रडण्याने तरी बळी देणाऱ्यांना करील शासन श्री कुडळसंगमदेवा.

वचन :

नद्यातील जल पाह्न लोक उडी मारतात अन वृक्ष पाह्न फेरे घालतात जल आठत असते अन वृक्ष वठत असतो. आठणाऱ्या जलावर अन वाठणाऱ्या वृक्षावर श्रद्धा ठेऊन जगणारे तुला कसे जाणू शकतील हे श्री कुडलसंगमदेवा.

१०. कायक व दासोह सिद्धांत :- महात्मा बसवेश्वरांचा कायक व दासोह सिद्धांत हा राष्ट्र आणि संबंध विश्वाला विकास क्रियामग्न बनविणारा सिद्धांत आहे. कायक सिद्धांत हा विशिष्ट धर्म, पंथ देशापुरता मर्यादित नसून तर तो अखिल मानव जातीच्या सुख समृद्धीसाठी, हितासाठी आहे. आज भारतात व विदेशात प्रत्येक शरण -शरणींनी प्रामाणिकपणे आपापले कायक करून देशाची अखंड सेचा केली पाहिजे, सत्य, शुद्ध नीतिमान निरोगी जीवन जगावे हाच कायक सिद्धांताचा हेतू आहे. प्रत्येक जाती धर्मातील व्यक्तीने स्वतः चे जीवन विकासपूर्ण झाले म्हणून सुखी बनले असे नाही तर समाजातील गोर गरीब, अनाथ लोकांना आर्थिक सहाय्य, मोफत निवास व्यवस्था, अन्नदान, रक्तदान, ग्रंथदान दासोह या सिद्धांताच्या माध्यमातून सेवा निरंतर दिली पाहिजे. उदा: व्यक्तीकडे असलेला अधिक संपतीचा वापर हा गरिबांसाठी करावा, की ज्यामुळे त्या व्यक्तींचा सर्वागीन विकास होईल.

११. वचनसाहित्य व मानवताबाद :- विश्वात वचनसाहित्य म्हंटले की महात्मा बसवेश्वर (अनुभवमंटप) करोडो शरण यांच्या डोळ्यासमोर दिस् लागतात. वचनसाहित्य लिंगायत धर्माच्या विचारांची आचारसंहिता होय. बोलें तैसा चाले या उक्तीप्रमाणे प्रत्यक्षात कृती करणारे नेतृत्व म्हणजे महात्मा बसवेश्वर होत. वचनसाहित्य हे अनुभवी शरणांचे साहित्य आहे. साध्या व सोप्या भाषेतील ओव्या, संस्कृत ग्रंथाचे संदर्भ वचन साहित्यात आढळून येतात. कायकवे कैलास हा महामंत्र महात्मा बसवेश्वरांनी बाराव्या शतकात संपूर्ण विश्वाला दिला.कायक म्हणजे श्रम आणि श्रम हेच कैलास होय. श्रमाशिवाय विकास कोणत्याही देशाला शक्य नाही. बसवेश्वरांनी पंडिताकडून होणारे

शोषण, मानवते त्यांच्या वचन

विवाह। मुलीचा दिले. ह बसवेश्वर

कुडळसंग् संदर्भग्रंथ

э. **प**

४. डॉ

7. S)

६. बस

७. बस

८. बस

मन त्याकाळी

ाद्धा या रोगाने रेस्थिती, ढोंगी प्रसंगी महात्मा क कार्य हाती समाजाला दूर गर येणे आदी शोषण,आळशी प्रवृत्ती, ग्रष्ट लोकांना प्रखर निषेध करून समाजाला अतिशय क्रियाशील व परिवर्तनिय बनविले. मानवतेचे पुरस्करते म्हणून महात्मा बसवेश्वर यांना ओळखले जाते. मानवाच्या अधिकाराचे संरक्षण, स्वातंत्र्य मिळवून त्यांच्या सर्वांगीण विकासाच्या दृष्टीने कार्य करण्यावर अधिक भर दिल्याचे दिसून येते.

वचन :

धनिक बांधती देवालय गरीब मी करू काय माझा देह हेचि देवालय खांब माझे सुवर्ण कलश स्थावर पावेल नाश जंगम मात्र अविनाश हे श्री कुडळसंगमदेवा.

१२. आंतरजातीय विवाह विषयक कार्य: — बाराव्या शतकात विश्वातील पहिले आंतरजातीय विवाह महात्मा बसवेश्वर यांच्या ऐतिहासिक कार्यामुळे घडून आले. ते क्षण क्रांतिकारी ठरले. मधवय्याच्या (ब्राह्मण) मुलीचा विवाह हरळय्याच्या (चांभार) मुलाशी लग्न. आंतरजातीय रोटी बेटी व्यवहार करण्यास बसवेश्वरांनी प्रोत्साहन दिले. त्यांच्या मते, अस्पृश्यता पाळणे म्हणजे माणसांवर नव्हे तर देवावरच अन्याय करण्यासारखे आहे. महात्मा बसवेश्वर एका वचनात म्हणतात,

वडील माझे मातंग चन्नाय्या पिता आमचे ढोर कक्कय्या

चिक्कस्या ही आमचाच असे पहा थोरला बंधू आमुचा किन्नरी बोम्मया तरीही जाणत का नाही मजला श्री कुडळसंगमदेवा.

संदर्भग्रंथ :-

- १. डॉ. अशोक मेनकुदळे, आद्यसमाजसुधारक, महाराष्ट्र बसव परिषद भालकी, फेब्रुवारी २००३.
- २. प्रा. भीमराव पाटील, युगप्रवर्तक महात्मा बसवेश्वर, ३० एप्रिल,२००६.
- पूज्य डॉ. श्री बसवलिंग पट्टदेवरू, धर्मगुरू बसवन्ना आणि अष्टावरण, महाराष्ट्र बसव परिषद भालकी, सप्टेंबर २०१०.
- ४. डॉ. सूर्यकांत घुगरे, संत साहित्य आणि बसवेश्वर वचनचिंतन, मुक्तरंग प्रकाशन लातूर,११ एप्रिल २०१३.
- ५. डॉ. लक्ष्मण उलगडे, राष्ट्रीय महापुरुषांच्या विचारप्रणालीचा संशोधनात्मक वेध, सुमन प्रकाशन लातूर, डिसेंबर २०१९.
- ६. बसवकल्याण येथे प्रत्यक्ष भेट दरम्यान माहिती संकलन, डिसेंबर २०२१.
- ७. बसवपथ द्वैमासिक,२०१५
- ८. बसवपथ द्वैमासिक,२०२१

(अनुभवमंटप) रसंहिता होय. त्य हे अनुभवी ाढळून येतात. ाजे श्रम आणि ाकडून होणारे

हा राष्ट्र आणि

प्रता मर्यादित

। प्रत्येक शरण

तिमान निरोगी

कासपूर्ण झाले

त्रास व्यवस्था.

कडे असलेला

राष्ट्रीय महापुरुष व विचार्त्वत : कार्य आणि विचार / १५